श्रीसर्वज्ञाय नमः।

आत्मवल्लभ-ग्रथसिरीज न ७

न्यायाम्भो निधिश्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरपट्टधरश्रीमद्विजयवल्लभसूरिभ्यो नमः।

श्रीशान्तिसूर्य्यादिपृथक्पृथगाचार्य्यप्रणीत

श्रीलघुप्रकरणसंग्रहः।

सशोधकः—पन्यास-श्रीउमङ्गविजयो गणी।

पूज्यपादजैनाचार्यश्रीमद्विजयवल्लभसूरीश्वरमुख्यशिष्यरत्नतपोनिधि-श्रीमद्विवेकविजयशिष्य-पन्यासउमङ्गविजय-गण्युपदिष्ट-श्रीपाटणनगरवास्तव्यश्रेष्ठिवर्य्य "शा नगीनदास करमचद" प्रदत्तद्रव्यसाहाय्येन

प्रकाशक —शा "नगीनदास करमचद" मु० पाटण हाल [मुंबई]

(नकल १०००) वीरसवत् ५२ आत्मसवत् ३० विक्रमसवत् १९८२ सन १९२५ [मूल्यममूल्यम्]

Printed by–Ramchandra Yesu Shedge, at the "Nirnaya Sagar" Press, 26-28, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by–Shah Nagindas Karamchand, Patan.

॥ अर्हम् ॥

न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरपट्टधर—श्रीमद्विजयवल्लभसूरिगुरुपादपद्मेभ्यो नमः ॥

श्रीशान्तिसूर्यादिपृथक्पृथगाचार्यप्रणीत.

श्रीलघुप्रकरणसङ्ग्रहः ।

[अथ-श्रीजीवविचारप्रकरणम्]

(आर्य्यावृत्तम्)

भुवणपईवं वीरं, नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं। जीवसरूवं किंचिवि, जह भणियं पुव्वसूरिहिं ॥१॥
जीवा मुत्ता संसा–रिणो य तस थावर य संसारी। पुढवि जल जलण वाऊ, वणस्सई थावरा नेया॥२॥
फलिह मणि रयण विद्दुम, हिंगुल हरियाल मणसिल रसिंदा। कणगाइधाउ सेढी, वन्नी अरणेट्टय पलेवा
अब्भय तूरी ऊसं, मट्टी पाहाण जाइओ णेगा । सोवीरंजण लूणा–इ पुढविभेया य इच्चाइ ॥ ४ ॥

ओमंतरिक्खमुदगं, उसाहिमकरगहरितणुमहिया। हुंति घणोदहिमाई, भेआ णेगा य आउस्स ॥५॥
इंगाल जाल मुम्मुर, उक्कासणि कणग विज्जुमाईया। अगणिजियाणं भेया, नायव्वा निउणबुद्धीए॥६॥
उप्भामग उक्कलिया, मंडलि मह सुद्ध गुंजवाया य। घण तणु वायाईया, भेया खलु वाउकायस्स॥७॥
साहारण पत्तेया, वणस्सइजीवा दुहा सुए भणिया। जेसिमणंताणं तणु, एगा साहारणा ते उ॥८॥
कंदा अंकुर किसलय, पणगा सेवाल भूमिफोडा य। अल्लयतिय गज्जर मोत्थ वत्थुला थेग पल्लंका ॥९॥
कोमलफलं च सव्वं, गूढसिराइं सिणाइपत्ताइं। थोहरिकुआरिगुग्गुलि-गलोयपमुहा य छिन्नरुहा ॥१०॥
इच्चाइणो अणेगे, हवंति भेया अणंतकायाणं। तेसिं परिजाणणत्थं, लक्खणमेयं सुए भणियं॥ ११ ॥
गूढसिरसंधिपव्वं, समभंगमहीरुगं च छिन्नरुहं। साहारणं सरीरं, तव्विवरीयं च पत्तेयं ॥ १२ ॥
एगसरीरे एगो, जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया। फल फूल छल्लि कट्ठा, मूला पत्ताणि बीयाणि ॥१३॥
पत्तेयं तरुमुत्तं, पंचवि पुढवाइणो सयललोए। सुहुमा हवंति नियमा, अंतमुहुत्ताउ अद्दिस्सा ॥१४॥
संख कवड्डय गंडुल, जलो य चंदणग अलस लहगाई। मेहरि किमि पूयरगा, बेइंदिय माइवाहाई॥१५॥
गोमी मंकण जूआ, पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा। इल्लिय घयमिल्लीउ, सावय गोकीड जाईउ॥१६॥

गद्दहय चोरकीमा, गोमयकीमा य धन्नकीमा य। कुंथु गुवालिय इलिया, तेइंदिय इदगोवाई ॥१७॥
चउरिंदिया य विछू, ढिकुण जमरा य जमरिया तिड्डा। मछिय मसा मसगा, कंसारी कविलडोलाई॥१८॥
पचिंदिया य चउहा, नारय तिरिया मणुस्स देवा य। नेरइया सत्तविहा नायव्वा पुढविजेएण॥ १९॥
जलयरथलयरखयरा, तिविहा पचिंदिया तिरिक्खा य। सुसुमार मछ कछव, गाहा मगरा य जलचारी२०
चउपय उरपरिसप्पा, जुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा। गोसप्पनउलपमुहा, बोधव्वा ते समासेण॥२१॥
खयरा रोमयपक्खी, चम्मयपक्खी य पायमा चेव। नरलोगाउ वाहिं, समुग्गपक्खी विययपक्खी॥२२॥
सवे जलथलखयरा, समुछिमा गप्नया डुहा हुंति। कम्माऽकम्मगजूमी, अतरदीवा मणुस्सा य॥ २३॥
दसहा जवणाहिवई, अठविहा वाणमतरा हुंति। जोइसिया पंचविहा, डुविहा वेमाणिया देवा॥२४॥
सिद्धा पनरस जेया, तिछाऽतिछाइ सिद्धजेएणं। एए संखेवेण, जीवविगप्पा समक्खाया॥ २५॥
एएसि जीवाणं, सरीरमाउ ठिई सकायम्मि। पाणा जोणि पमाण, जेसि जं अछि त जणिमो ॥२६॥
अगुलअसंखजागो, सरीरमेगिंदियाण सवेसि। जोयणसहस्समहिय, नवरं पत्तेयरुक्खाणं॥ २७॥
वारसजोयण तिन्नी–गाउआ जोयण च अणुकमसो। वेइंदियतेइंदिय–चउरिंदियदेहमुच्चत्तं ॥२८॥

धणुसयपंचपमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए। तत्तो अद्धद्धूणा, नेया रयणप्पहा जाव ॥ २९ ॥
जोयणसहस्समाणा, मच्छा उरगा य गब्भया हुंति। धणुहपुहुत्तं पक्खी, भुअचारी गाउअ पुहुत्तं ॥३०॥
खयरा धणुहपुहुत्तं, भुअगा उरगा य जोयणपुहुत्तं। गाउअपुहुत्तमित्ता, समुच्छिमा चउपया भणिया ३१
छच्चेव गाउआइं, चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा। कोसतिगं च मणुस्सा, उक्कोससरीरमाणेणं ॥ ३२ ॥
ईसाणंतसुराणं, रयणीउ सत्त देहमुच्चत्तं। दुग दुग दुग चउ गेवि-ज्ज णुत्तरेक्किक्कपरिहाणी ॥३३॥
बावीसा पुढवीए, सत्त य आउस्स तिन्नि वाउस्स। वाससहस्सा दस तरु-गणाण तेऊ तिरित्ताउ ॥३४॥
वासाणि बारसाऊ, बिइंदियाणं तिइंदियाणं तु। अउणापन्नदिणाइं, चउरिंदीणं तु छम्मासा ॥३५॥
सुरनेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि तित्तीसं। चउपयतिरियमणुस्सा, तिन्निय पलिउवमा हुंति ॥३६॥
जलयरउरभुअगाणं, परमाऊ होइ पुव्वकोडीउ। पक्खीणं पुण भणिउ, असंखभागो य पलियस्स ॥३७॥
सव्वे सुहुमा साहा-रणा य सम्मुच्छिमा मणुस्सा य। उक्कोसजहन्नेणं, अंतमुहुत्तं चिय जियंति ॥३८॥
उगाहणाउमाणं, एवं संखेवउ समक्खायं। जे पुण इत्थ विसेसा, विसेससुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥
एगिंदिया य सव्वे, असंखउस्सप्पिणी सकायम्मि। उववज्जंति चयंति य, अणंतकाया अणंताउ ॥४०॥

सखिज्जसमा विगला, सत्तठ्ठवा पणिदितिरिमणुआ। उववज्जति सकाए, नारयदेवा य नो चेव ॥४१॥
दसहा जिआण पाणा, इदियऊसासआउबलरूवा। एगिंदिएसु चउरो, विगलेसु छ सत्त अठेव॥४२॥
असन्निसन्नीपचि–दिएसु नव दस कमेण बोधव्वा। तेहिं सह विप्पओगो, जीवाणं जन्नए मरणं ॥४३॥
एव अणोरपारे, ससारे सायरम्मि जीमम्मि। पत्तो अणंतखुत्तो, जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥
तह चउरासीलक्खा, संखा जोणीण होइ जीवाण। पुढवाईण चउएहं, पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥
दस पत्तेयतरूण, चउदसलक्खा हवंति इयरेसु। विगलिदिएसु दो दो, चउरो पचिदितिरियाण॥४६॥
चउरो चउरो नारय–सुराण मणुआण चउदस हवंति॥सपिन्डिआ उ सव्वे, चुलसीलक्खाउ जोणीणं ४७
सिद्धाण नत्थि देहो, न आउ कम्मं न पाणजोणीउ। साइअणंता तेसि, ठिई जिणदागमे जणिया॥४८॥
काले अणाइनिहणे,जोणिगहणम्मि जीसणे इत्र। जमिया जमिहंति चिरं, जीवा जिणवयणमलहंता
ता सपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहेवि समत्ते। सिरिसंतिसूरिसिठे, करेह जो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥
एसो जीवविचारो, सखेवरुईण जाणणाहेऊ। सखित्तो उद्धरिउ, रुद्दाउ सुयसमुद्दाउ ॥ ५१ ॥

[इति जीवविचारप्रकरणम्]

[अथ श्रीनवतत्त्वप्रकरणम्]

जीवा[1]ऽजीवा[2] पुण्णं[3], पावा[4]ऽऽसव[5]संवरो[6] य निज्जरणा[7] । बंधो[8] मुक्खो[9] य तहा, नव तत्ता हुंति नायव्वा ॥१॥
चउदस चउदस बाया-लीसा बासीय हुंति बायाला । सत्तावन्नं बारस, चउ नव भेया कमेणेसिं ॥२॥
एगविह दुविह तिविहा, चउव्विहा पंच छव्विहा जीवा । चेयण तसइयरेहिं, वेयगईकरणकाएहिं ॥३॥
एगिंदियसुहुमियरा, सन्नियरपणिंदिया य सबितिचउ । अपज्जत्ता पज्जत्ता, कमेण चउदस जियट्ठाणा ४
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ॥ ५ ॥
आहारसरीरिंदिय-पज्जत्ती आणपाणभासमणे । चउ पंच पंच छप्पिय, इगविगलाऽसन्निसन्नीणं ॥६॥
पणिंदियत्तिबलूसा-साऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ । इगदुतिचउरिंदीणं, असन्नि सन्नीण नव दस य ७

[इति जीवतत्त्वम्]

धम्मा ऽधम्माऽऽगासा, तियतियभेया तहेव अद्धा य । खंधा देसपएसा, परमाणु अजीव चउदसहा ॥८॥
धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अजीवा । चलणसहावो धम्मो, थिरसंठाणो अहम्मो य ॥९॥
अवगाहो आगासं, पुग्गलजीवाण पुग्गला चउहा । खंधा देसपएसा, परमाणू चेव नायव्वा ॥ १० ॥

सद्दधयारउज्जोय, पभाछायातवेहि आ। वण्ण गध रसा फासा, पुग्गलाण तु लक्खणं ॥ ११ ॥
एगा कोडि सतसठि, लक्खा सत्तहुत्तरी सहस्सा य। दोयसया सोलहिया,आवलिया इगमुहुत्तम्मि १२
समयाऽऽवली मुहुत्ता,दीहा पक्खा य मास वरिसा य। भणिओ पलिआ सागर, उसप्पिणी सप्पिणी कालो
परिणामि जीव मुत्त, सपएसा एग खित्त किरिया य। निच्चं कारण कत्ता, सवगय इयर अप्पवेसे ॥ १४ ॥

[इत्यजीवतत्त्वम्]

सा उच्च गोअ मणुदुग, सुरदुग पंचिदिजाइ पणदेहा। आइतितणूणुवंगा, आइमसंघयणसंठाणा॥१५॥
वन्नचउक्काऽगुरुलहु–परघा ऊसास आयवुज्जोयं। सुभखगइ नमिण तसदस, सुरनरतिरियाउ तित्थयरं १६
तस बायर पज्जत्त, पत्तेय थिर सुभ च सुभगं च। सुस्सर आइज्ज जसं, तसाइदसगं इमं होइ ॥ १७ ॥

[इति पुण्यतत्त्वम्]

नाणंतरायदसग, नव बीए नीय साय मिच्छत्तं। थावरदस निरयतिगं, कसायपणवीस तिरियदुगं ॥१८॥
इगबितिचउजाईओ, कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स। अपसत्थ वन्नचउ, अपढमसंघयणसंठाणा ॥ १९ ॥
थावर सुहुम अपज्ज, साहारणमथिरमसुभदुभगाणि। दुस्सरणाइज्ज जस, थावरदसगं विवज्जत्थ॥२०॥

[इति पापतत्त्वम्]

इंदिअ कसायअव्वय–जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा। किरिआउ पणवीसं, इमा उ ताउ अणुक्कमसो२१
काइय अहिगरणिया, पाउसिया पारितावणी किरिया। पाणाइवायाऽऽरंभिअ, परिग्गहिया मायवत्तीया
मिच्छादंसणवत्ती, अपच्चक्खाणीय दिट्ठि पुट्ठीय। पाडुच्चिअ सामंतो–वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥ २३ ॥
आणवणि विआरणीया, अणभोगा अणवकंखपच्चइया। अन्नापउगसमुदा-णपिज्जदोसेरियावहिया २४

[इत्याश्रवतत्त्वम्]

समिईगुत्तिपरीसह–जइधम्मो भावणा चरित्ताणि। पणतिदुवीसदसबार–पंचभेएहिं सगवन्ना ॥ २५ ॥
इरिया भासेसणादाणे, उच्चारे समिईसु अ। मणगुत्ति वयगुत्ति, कायगुत्ति तहेव य ॥ २६ ॥
खुहा पिवासा सी उण्हं, दंसा चेलाऽरइत्थिउ। चरिआ निसिहिया सिज्जा, अक्कोस वह जायणा॥२७॥
अलाभरोगतणफासा, मलसक्कारपरीसहा। पन्ना अन्नाण सम्मत्तं, इअ बावीस परीसहा ॥ २८ ॥
खंती मद्दव अज्जव, मुत्ती तव संजमे अ बोधव्वे। सच्चं सोअं आकिं–चणं च बंभं च जइधम्मो ॥२९॥
पढममणिच्चमसरणं, संसारो एगया य अन्नत्तं। असुइत्तं आसव संवरो य तह निज्जरा नवमी ॥ ३० ॥

लोगसहावो बोही, डुलहा धम्मस्स साहगा अरिहा । एआओ जावणाउं, जावेअव्वा पयत्तेण ॥३१॥
सामाइअब्रपढम, बेउंवठावण जवे बीअं । परिहारविसुद्धीअं, सुहुमं तह संपराय च ॥ ३२ ॥
तत्तो अ अहक्खाय,खाय सव्वम्मि जीवलोगम्मि । जं चरिऊण सुविहिया, वच्चंति अयरामरं ठाण ॥३३॥

[इति सवरतत्त्व]

बारसविहं तवो नि–ज्जरा य बधो चउविगप्पो अ । पयईठिईअणुजाग–पएसभेएहि नायव्वो ॥३४॥
अणसणमूणोयरिआ, वित्तीसखेवणं रसच्चाउं । कायकिलेसो संली–णया य बज्झो तवो होइ ॥३५॥
पायछित्त विणउं, वेयावच्च तहेव सज्झाउं । झाण उस्सग्गो विअ, अप्रितरउं तवो होइ ॥ ३६ ॥

[इति निर्ज्जरातत्त्वम्]

पयइसहावो वुत्तो, ठिई कालावहारणं । अणुजागो रसो नेउं, पएसो दलसंचउं ॥ ३७ ॥
इह नाणदसणावर–ण वेयमोहाउनामगोयाणि । विग्घ च पण नव डु अ–ठवीस चउतिसयडुपणविहं
पमपमिहारसिमज्ज–हमचित्तकुलालभमगारीण । जह एएसि जावा, कम्माणवि जाण तह जावा ॥३९॥
नाणे य दंसणावरणे, वेअणिए चेव अतराए य । तीस कोमाकोमी, अयराण ठिइ य उक्कोसा ॥४०॥

सत्तरि कोडाकोडी, मोहणिए वीस नामगोएसु । तित्तीसं अयराइं, आउट्ठिइबंध उक्कोसा ॥ ४१ ॥
बारस मुहुत्त जहन्ना, वेयणिए अट्ठ नामगोएसु । सेसाणंतमुहुत्तं, एयं बंधट्ठिईमाणं ॥ ४२ ॥

[इति बंधतत्त्वं]

संतपयपरूवणया, दव्वपमाणं च खित्तफुसणा य । कालो अ अंतरं भा-गो भावे अप्पाबहु चेव ॥४३॥
संतं सुद्धपयत्ता, विज्जंतं खकुसुमव्व न असंतं । मुक्खत्ति पयं तस्स उ, परूवणा मग्गणाईहिं ॥४४॥
गइइंदिये अ काए, जोए वेए कसायनाणे य । संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥४५॥
नरगइपणिंदितसभव, सन्निअहक्खायखइअसम्मत्ते । मुक्खोऽणाहार केवल-दंसण नाणे न सेसेसु ॥४६॥
दव्वपमाणे सिद्धा-णं जीवदव्वाणि हुंति ऽणंताणि । लोगस्स असंखिज्जे, भागे इक्को य सव्वे वि ॥४७॥
फुसणा अहिआ कालो, इगसिद्धपडुच्च साइओऽणंतो । पडिवायाऽभावाओ, सिद्धाणं अंतरं नत्थि ॥४८॥
सव्वजियाणमणंते, भागे ते तेसिं दंसणं नाणं । खइए भावे परिणा-मिए अ पुण होइ जीवत्तं ॥ ४९ ॥
थोवा नपुंससिद्धा, थीनरसिद्धा कमेण संखगुणा । इअ मुक्खतत्तमेअं, नवतत्ता लेसओ भणिआ ॥५०॥
जीवाइनव पयत्थे, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं । भावेण सद्दहंतो, अयाणमाणेऽवि सम्मत्तं ॥५१॥

सव्वाइ जिणेसरजा–सिआइ वयणाइ नन्नहा हुंति । इअ बुद्धी जस्स मणे, सम्मत्त निच्चलं तस्स ॥५२॥
अंतोमुहुत्तमित्तं–पि फासिअ हुज्ज जेहि सम्मत्त । तेसि अवड्ढपुग्गल–परिअट्टो चेव संसारो ॥ ५३ ॥
उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गलपरिअट्टओ मुणेअव्वो । ते ऽणंताऽतीअद्धा, अणागयद्धा अणंतगुणा ॥५४॥
जिण[1] अजिण[2] तित्थ[3]ऽतित्था[4], गिहि[5] अन्न[6] सलिंग[7] थी[8] नर[9] नपुंसा[10]। पत्तेअ[11] सयंबुद्धा[12], बुद्धबोहिय[13] सिद्ध[14]णिक्का[15] य
जिणसिद्धा अरिहंता,अजिणसिद्धा य पुंडरियपमुहा। गणहारि तित्थसिद्धा,अतित्थसिद्धा य मरुदेवी२६
गिहिलिंगसिद्ध भरहो, वक्कलचीरी य अन्नलिंगम्मि।साहू सलिंगसिद्धा, थीसिद्धा चंदणापमुहा२७
पुंसिद्धा गोयमाई, गांगेयाई नपुंसया सिद्धा । पत्तेयसयंबुद्धा, भणिया करकंडुकविलाई ॥ ५७ ॥
तह बुद्धबोहि गुरुबो–हिया इगसमय इगसिद्धा य। इगसमएऽवि अणेगा, सिद्धा तेऽणेगसिद्धा य ॥५८॥
जइआइ होइ पुच्छा, जिणाण मग्गमि उत्तर तइया। इक्कस्स निग्गोयस्स, अणंतभागो य सिद्धिगओ ॥६०॥

इति मोक्षतत्त्व ॥ श्रीनवतत्त्वप्रकरणं समाप्त ॥

[अथ श्रीदंडकप्रकरणम्]

नमिउं चउवीसजिणे,तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ। दंडगपएहि तेच्चिय, थोसामि सुणेह भो भवा ! ॥१॥

नेर[1]इया असु[10]राई, पुढवा[5]इ बेंदिया[3]दउ चेव। [1]गब्भयतिरियमणु[1]स्सा, वंतर[1] जोइ[1]सिय वेमा[1]णी ॥ २ ॥
संखित्तयरी उ इमा, स[1]रीरमोगा[2]हणा य संघ[3]यणा। सन्ना[4] संठा[5]ण क[6]साय, ले[7]स इं[8]दिय दुसमु[9]ग्घाया ॥ ३ ॥
दि[10]ट्ठी दं[11]सण ना[12]णे,* जोगु[14]व[15]ओगो ववा[16]य चव[17]ण ठि[18]ई। प[19]ज्जत्ति कि[20]माहारे, स[21]न्नि ग[22]ई आग[23]ई वे[24]ए ॥ ४ ॥
चउ गब्भतिरियवाउसु, मणुआणं पंच सेस तिसरीरा। थावरचउगे दुहओ, अंगुलअसंखभाग तणु ५
सव्वेसिंऽपि जहन्ना, साहाविय अंगुलस्स संखंसो। उक्कोसपणसयधणु, नेरइया सत्तहत्थ सुरा ॥ ६ ॥
गब्भतिरि सहस्सजोयण, वणस्सई अहियजोयणसहस्सं। नर तेइंदि तिगाऊ, बेइंदिय जोयणे बार ७
जोयणमेगं चउरिं-दिदेहमुच्चत्तणं सुए भणियं। वेउव्वियदेहं पुण, अंगुलसंखं समारंभे ॥ ८ ॥
देव नर अहिय लक्खं, तिरियाणं नव य जोयणसयाइं। दुगुणं तु नारयाणं, भणियं वेउव्वियसरीरं ॥ ९ ॥
अंतमुहुत्तं निरये, मुहुत्तचत्तारि तिरियमणुएसु। देवेसु अद्धमासो, उक्कोस विउव्वणा कालो ॥ १० ॥
थावर सुर नेरइया, असंघयणा य विगल छेवट्ठा। संघयणछग्गं गब्भय-नरतिरिएसु मुणेयव्वं ॥ ११ ॥
सव्वेसिं चउ दह वा, सन्ना सव्वे सुरा य चउरंसा। नर तिरिय छ संठाणा, हुंडा विगलिंदि नेरइया ॥१२॥

* बारहवें ज्ञानद्वारके साथ तेरहवां अज्ञानद्वारभी समझलेना।

नाणाविह धय सूई, बुब्बुअ वण वाउ तेउ अपकाया। पुढवी मसूर चंदाऽऽकारा संठाणओ भणिया॥१३॥
सव्वेवि चउकसाया, लेसछगं गब्भतिरियमणुएसु। नारयतेऊवाऊ–विगला वेमाणिय तिलेसा॥ १४ ॥
जोइसिय तेउलेसा, सेसा सव्वेवि हुंति चउलेसा। इंदियदारं सुगम, मणुआण सत्त समुग्घाया॥१५॥
वेयणकसायमरणे, वेउव्वियतेअए अ आहारे। केवलिअ समुग्घाया, सत्त इमे हुंति सन्नीण ॥ १६ ॥
एगिदियाण केवलि–तेआऽऽहारग विणा उ चत्तारि। ते वेउव्वियवज्जा, विगलाऽसन्नीण ते चेव ॥१७॥
पण गब्भतिरिसुरेसु, नारयवाऊसु चउर तिय सेसे। विगल दुदिट्ठी थावर, मिच्छत्ती सेस तिय दिट्ठी१८
थावरबितिसु अचक्खु, चउरिंदिसु तदुगं सुए भणियं। मणुआ चउदंसणिणो, सेसेसु तिगं तिग भणियं

अन्नाण नाण तियतिय, सुर तिरि निरए थिरे अनाण दुग।
नाणऽन्नाण दु विगले, मणुए पण नाण तिअनाणा ॥ २० ॥

इक्कारस सुर निरए, तिरिएसु तेर पन्नर मणुएसु। विगले चउ पण वाए, जोगतियं थावरे होई ॥२१॥
उवओगा मणुएसु, बारस नव निरयतिरियदेवेसु। विगलदुगे पण छक्कं, चउरिंदिसु थावरे तियग ॥ २२ ॥
संखमसंखा समए, गब्भयतिरि विगल नारय सुरा य। मणुआ नियमा संखा, वणऽणंता थावर असंखा२३

असन्निनर असंखा, जह उववाए तहेव चवणेवि। बावीस सग ति दस वा–स सहस उक्किठ पुढवाई२४
तिदिणऽग्गि तिपल्लाऊ, नर तिरि सुर निरय सागर तितीसा।वंतर पल्लं जोइस,वरिसलक्खाऽहिअं पलिअं
असुराण अहियअयरं, देसूणडुपल्लयं नवनिकाए। वारसवासुणपणदिण–छम्मासुक्किट्ठ विगलाऊ॥२६॥
पुढवाइदसपयाणं, अंतमुहुत्तं जहन्नमाउठिई। दससहसवरिसठिइआ, भवणाहिवनिरयवंतरिया॥२७॥
वेमाणियजोइसिआ, पल्लतयठंसआउआ हुंति। सुरनरतिरिनिरएसु, छपज्जत्ति थावरे चउगं॥ २८॥
विगले पंच पज्जत्ति, छद्दिसि आहार होइ सव्वेसिं। पणगाइपए भयणा, अह सण्णितियं भणिस्सामि२९
चउविहसुरतिरिएसु, निरएसु अ दीहकालिगी सण्णा। विगले हेउवएसा, सन्नारहिया थिरा सव्वे ३०
मणुआण दीहकालिअ, दिठीवाओवएसिआ केवि। पज्ज पण तिरि मणुअ च्चिय, चउविहदेवेसु गच्छंति
संखाउपज्जपणिंदि–तिरियनरेसु तहेव पज्जत्ते। भूदगपत्तेयवणे, एएसुच्चिय सुरागमणं॥ ३२॥
पज्जत्तसंखगब्भय–तिरियनरा निरयसत्तगे जंति। निरउवट्टा एएसु, उववज्जंति न सेसेसु॥ ३३॥
पुढवीआउवणस्सइ–मज्झे नारयविवज्जिआ जीवा। सव्वे उववज्जंति, नियनियकम्माणुमाणेणं॥३४॥
पुढवाइदसपएसु, पुढवीआऊवणस्सई जंति। पुढवाइदसपएहिं अ, तेऊवाऊसु उववाओ॥ ३५॥

तेऊवाऊगमण, पुढवीपमुहम्मि होइ पयनवगे। पुढवाइठाणदसगा, विगलाइ तिय तहिं जंति ॥३६॥
गमणाऽऽगमण गब्भय–तिरिआण सयलजीवठाणेसु। सव्वत्थ जंति मणुआ, तेऊवाऊहिं नो इंति ॥३७॥
वेयतिय तिरिनरेसु, इत्थी पुरिसो अ चउविहसुरेसु। थिरविगलनारएसु, नपुंसवेओ हवइ एगो ३८
पज्जमणुबायरग्गी–वेमाणियभवणनिरयवंतरिआ। जोइसचउपणतिरिया, बेइंदितेइंदिभूआऊ ॥ ३९ ॥
वाऊ वणस्सई चिय, अहिआ अहिआ कमेणिमे हुंति। सव्वेऽवि इमे भावा, जिणा मए ऽणंतसो पत्ता॥४०॥
संपइ तुम्ह भत्तस्स, दंडगपयभमणभग्गहिअयस्स। दंडतियविरयसुलहं, लहु मम दिसंतु मुक्खपय
सिरिजिणहंसमुणीसर–रज्जे सिरिधवलचंदसीसेण। गजसारेण लिहिया, एसा विण्णत्ति अप्पहिआ

[इति श्रीदण्डकप्रकरणम्]

[अथ लघुसंघयणीप्रकरणम्]

नमिय जिणं सव्वन्नुं, जगपुज्जं जगगुरुं महावीरं। जंबुद्दीवपयत्थे वुच्छं सुत्ता सपरहेऊ ॥ १ ॥
खंडा जोयण वासा, पव्वय कूडा य तित्थ सेढीओ। विजय द्दह सलिलाओ, पिंडेसिं होइ संघयणी॥२॥
णउयसयं खंडाणं, भरहपमाणेण भाइए लक्खे। अहवा णउयसयगुणं, भरहपमाणं हवइ लक्खं॥३॥

अहविग खंडे जरहे, दो हिमवंते अ हेमवइ चउरो। अठ महाहिमवंते, सोलसखंमाइ हरिवासे ॥४॥
बत्तीसं पुण निसढे, मिलिया तेसठ्ठि वीयपासेवि। चउसठ्ठिउ विदेहे, तिरासि पिंडेइ णउअसयं ॥५॥
जोयणपरिमाणाइं, समचउरंसाइं इञ्च खंमाइं। लक्खस्स य परिहीए, तप्पायगुणे य हुंतेव ॥ ६ ॥
विक्खंज वग्ग दहगुण, करणी वट्टस्स परिरउ होइ। विक्खंजपायगुणिउ, परिरउ तस्स गणियपयं ॥७॥
परिही तिलक्ख सोलस–सहस्स दोयसय सत्तवीसऽहिया। कोस तिग अठावीसं, धणुसय तेरंगुलऽहियं
सत्तेव य कोमिसया, णउआ ठप्पन्नसयसहस्साइं। चउणउयं च सहस्सा, सयं दिवड्ढं च साहीयं ॥ए॥
गाउअमेगं पनरस–धणुसया तह धणूणि पनरस्स। सठिं च अंगुलाइं, जंबुद्दीवस्स गणियपयं ॥१०॥
जरहाइ सत्तवासा, वियड्ढ चउ चउरतिंस वट्टियरे। सोलस वक्खारगिरि, दो चित्तविचित्त दो जमगा ११
दोसय कणयगिरीणं, चउगयदंता य तह सुमेरू य। ठ वासहरा पिंडे, एगुणसत्तरि सया डुन्नी ॥१२॥
सोलस वक्खारेसु, चउ चउ कूमा य हुंति पत्तेयं। सोमणस गंधमायण, सत्तऽठय रुप्पि महाहिमवे १३
चउतीसवियड्ढेसु, विज्जुप्पहनिसढनीलवंतेसु। तह मालवंत सुरगिरि, नव नव कूमाइं पत्तेयं ॥ १४ ॥
हिमसिहरिसु इक्कारस, इय इगसठी गिरीसु कूमाणं। एगत्ते सव्वधणं, सयचउरो सत्तसठीयं ॥ १५ ॥

चउ सत्त अठ नवगे, गारसकूडेहि गुणइ जहसख। सोलस दु दु गुणयाल, दुवे य सगसठि सयचउरो१६
चउतीस विजयएसु, उसहकूमा अठ मेरु जबुमि। अठय देवकुराइ, हरिकूरु हरिस्सए सठी ॥ १७ ॥
मागह वरदाम पजा–स तिन्न विजयेसु एरवय भरहे। चउतीसा तिहि गुणिया, दुरुत्तरसय तु तिथ्थाणं१८
विजाहर अभिउगिय, सेढीउ दुन्नि दुन्नि वेअड्ढे। इय चउगुण चउतीसा, छत्तीससयं तु सेढीण १९
चक्कीजेयवाइ, विजयाइ इत्थ हुति चउतीसा। मह दह छ प्पउमाई, कुरूसु दसगंति सोलसग ॥ २० ॥
गगा सिंधू रत्ता, रत्तवई चउ नईउ पत्तेयं। चउदसहि सहसेहि, समगग वच्चति जलहिम्मि ॥२१॥
एवं अभिंतरिया, चउरो पुण अठवीससहसेहि। पुणरवि छप्पन्नेहि, सहस्सेहि जंति चउ सलिला २२
कुरुमज्झे चउरासी–सहसाइ तहय विजयसोलससु। वत्तीसाए नईण, चउदससहसाइ पत्तेयं ॥ २३ ॥
चउदससहस्सगुणिया, अरूतिस नइउ विजयमज्झिल्ला। सीउयाए निवरू–ति तहय सीयाइ एमेव २४
सीया सीउया वि य, बत्तीससहस्सपचलक्खेहि। सबे चउदसलक्खा, छप्पन्नसहस्समेलविया ॥ २५ ॥
छज्जोयण सकोसे, गंगासिधूण विच्छरो मूले। दसगुणिउ पजांते, इय दु दु गुणणेण सेसाण ॥२६॥
जोयणसयमुच्चिठा, कणयमया सिहरिचुल्लहिमवंता। रुप्पि महाहिमवंता, दुसु उच्चा रुप्पकणयमया२७

चत्तारि जोयणसए, उच्चिठो निसढ नीलवंतो य। निसढो तवणिज्जमउ, वेरुलियो नीलवंतो य ॥२८॥
सव्वेवि पव्वयवरा, समयखित्तम्मि मंदरविहुणा। धरणितलम्मुवगाढा, उस्सेयचउब्भायम्मि ॥ २९ ॥
खंमाइगाहाहिं, दसहिं दारेहिं जंबुदीवस्स। संघयणी सम्मत्ता, रइया हरिभद्दसूरीहिं ॥ ३० ॥

[इति श्रीलघुसंग्रहणीप्रकरणं]

[अथ बृहत्संग्रहणीसूत्रम्]

नमिउं अरिहंताई, ठिइभवणोगाहणा य पत्तेयं। सुरनारयाण वुच्छं, नरतिरियाणं विणा भवणं ॥१॥
उववायचवणविरहं, संखं इगसमइअं गमाऽऽगमणे। दसवाससहस्साइं, भवणवईणं जहन्नठिई ॥२॥
चमरबलिसारमहिअं, तद्देवीणं तु तिन्नि चत्तारि। पलियाइं सड्ढाइं, सेसाणं नवनिकायाणं ॥ ३ ॥
दाहिणदिवड्ढपलिअं, उत्तरउ हुंति दुन्नि देसूणा। तद्देविमद्धपलिअं, देसूणं आउमुक्कोसं ॥ ४ ॥
वंतरयाण जहन्नं, दसवाससहस्स पलिअमुक्कोसं। देवीणं पलिअद्धं, पलिअं अहिअं ससिरवीणं ॥५॥
लक्खेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलिअमेएसिं। ठिइ अद्धं देवीणं। कमेण नक्खत्ततारणं ॥६॥
पलिअद्धं चउभागा, चउअद्धभागाहिगाउ देवीणं। चउजुअले चउभागो, जहन्नमद्धभाग पंचमए ॥७॥

दो साहि सत्त साहिअ–दस चउदस सतर अयर जा सुक्को। इक्किक्कमहियमित्तो, जा इगतीसुवरिगेविज्जे
तित्तीसऽणुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिई जिठा। सोहम्मे ईसाणे, जहन्नठिई पलिअमहियं च ॥ ए ॥
दोसाहिसत्तदसचउदस–सत्तरअयराइ जा सहस्सारो। तप्परउं इक्किकं, अहिअ जाऽणुत्तरचउक्के ॥१०॥
इगतीससागराइ, सबठे पुण जहन्नठिइ नत्थि। परिगहिआणिअराण य, सोहम्मीसाणदेवीणं ॥ ११ ॥
पलिअं अहिअ च कमा, ठिई जहन्ना इउं अ उक्कोसा। पलिआइं सत्त पन्ना–स तहय नव पंचवन्ना य
पण ठ चउ चउ अठ य, कमेण पत्तेअमग्गमहिसीउं। असुरनागाइवंतर–जोइसकप्पद्दुगिदाणं ॥ १३ ॥
डुसु तेरस डुसु वारस, ठ प्पण चउ चउ डुगे डुगे अ चऊ। गेविज्जाऽणुत्तरे दस, बिसठि पयरा उवरिलोए
सोहम्मुक्कोसठिइ, निअपयरविहत्तइच्छसंगुणिआ। पयरुक्कोसठिइउं, सवत्र जहन्नउं पलियं ॥ १५ ॥
सुरकप्पठिइविसेसो, सगपयरविहत्तइछसंगुणिउं। हिठिल्लठिइसहिउं, इच्छियपयरम्मि उक्कोसा॥१६॥
सोमजमाण सतिजा–ग पलिय वरुणस्स देसूणा। वेसमणे दो पलिया, एसा ठिई लोगपालाणं ॥१७॥
कप्पस्स अतपयरे, नियकप्पवम्सिया विमाणाउं। इंदनिवासा, तेसिं, चउदिसिं लोगपालाणं ॥ १८ ॥

[सुरेसु इंददारं सम्मत्तं, एएसु चेव भवणदारं भण्णइ]

असुरा[1] नागा[2] सुवन्ना[3], विज्जू[4] अग्गी[5] य दीव[6] उदही[7] अ। दिसि[8] पवण[9] थणियं[10] दसविह, भवणवई तेसु दुदु इंदा

चमरे[1] बली[2] अ धरणे[3], भूयाणंदे[4] अ वेणुदेवे[5] य। तत्तो अ वेणुदाली[6], हरिकंत[7] हरिस्सहे[8] चेव ॥ २० ॥

अग्गिसिह[9] अग्गिमाणव[10], पुण्ण[11] वसिट्ठे[12] तहेव जलकंते[13]। जलपह[14] तह अमिअगई[15], मिअवाहण[16] दाहिणुत्तरओ

वेलंबे[17] अ पहंजण[18], घोस[19] महाघोस[20] एसिमन्नयरो। जंबुद्दीवं छत्तं, मेरुं दंडं पहू काउं ॥ २२ ॥

चउतीसा चउचत्ता, अट्ठत्तीसा य चत्त पंचण्हं। पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणओ॥२३॥

चउचउलक्खविहूणा, तावइआ चेव उत्तरदिसाए। सव्वेवि सत्तकोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥२४॥

चत्तारि य कोडीओ, लक्खा छच्चेव दाहिणे भवणा। तिण्णेव य कोडीओ, लक्खा छावट्ठि उत्तरओ ॥२५॥

रयणाए हिट्ठुवरिं, जोयणसहस्सं विमुत्तु ते भवणा। जंबुद्दीवसमा तह, संखमसंखिज्जवित्थारा ॥ २६ ॥

चूडामणि[1] फणि[2] गरुडे[3], वज्जे[4] तह कलस[5] सीह[6] अस्से[7] अ। गय[8] मयर[9] वद्धमाणे[10], असुराईणं मुणसु चिंधे

असुरा काला नागुद–हि पंडुरा तह सुवण्ण दिसि थणिया।

कणगाभ विज्जु सिहि दीव, अरुण वाऊ पिअंगुनिभा ॥ २७ ॥

असुराण वन्न रत्ता, नागोदहि विज्जुदीवसिहि नीला। दिसियणिअसुवन्नाणं, धवला वाऊण संज्झरुई२९
चउसठि सठि असुरे, छच्च सहस्साइं धरणमाईण। सामाणिया इमेसिं, चउग्गुणा आयरक्खा य ॥३०॥
रयणाए पढमजोयण–सहसे हिट्ठुवरिं सयसयविहूणे। वंतरयाण रम्मा, भोमा नगरा असंखिज्जा ३१
बाहिं वट्टा अंतो, चउरंस अहो अ कण्णियायारा। भवणवईण तह वं–तराण इंदभवणा उ नायव्वा३२
तहिं देवा वंतरया, वरतरुणीगीयवाइयरवेण। निच्च सुहिया पमुइया, गयपि कालं न याणंति ॥ ३३॥
ते जंबुदीवभारह–विदेहसमगुरुजहन्नमज्झिमगा। वंतर पुण अठविहा, पिसाय भूया तहा जक्खा ३४
रक्खसकिन्नरकिंपुरिसा, महोरगा अठमा य गंधव्वा। दाहिणउत्तरभेआ, सोलस तेसिं इमे इंदा ॥ ३५॥
काले अ महाकाले, सुरूवपडिरूवपुण्णभद्दे अ। तह चेव माणिभद्दे, भीमे अ तहा महाभीमे ॥३६॥
किन्नरकिंपुरिसे सप्पुरिसे, महापुरिसे तह य अइकाए। महकाए गीअरई, गीअजसे दुन्नि दुन्नि कमा
चिंध कलंबसुलसे, वडखट्टंगे असोगचंपयए। नागे तुंबरु अ झए, खट्टंगविवज्जिया रुक्खा ॥ ३७॥
जक्खपिसायमहोरग–गंधव्वा साम किन्नरा नीला। रक्खसकिंपुरिसाऽवि अ, धवला भूआ पुणो काला३९
अणपन्नी पणपन्नी, इसिवाई अ भूअवाइए चेव। कंदी अ महाकंदी, कोहंडे चेव पयए अ ॥ ४०॥

इय पढमजोयणसए, रयणाए अट्ठ वंतरा अवरे । तेसु इह सोलसिंदा, रुयग अहो दाहिणुत्तरओ ॥४१॥
सन्निहिए[1] सामाणे[2], धाइ[3] विहाए[4] इसिय[5] इसिवाले[6] । ईसर[7] महेसरे[8]वि य, हवइ सुवच्छे[9] विसाले[10] य ॥४२॥
हासे[11] हासरई[12]वि य, सेए[13] य भवे तहा महासेए[14] । पयंगे[15] पयगवई[16]वि य, सोलसइंदाण नामाइं ॥ ४३ ॥
सामाणियाण चउरो, सहस्स सोलस य आयरक्खाणं । पत्तेयं सव्वेसिं, वंतरवइससिरवीणं च ॥ ४४ ॥
इंद[1] सम[2] तायतीसा[3], परिस[4] तिया रक्ख[5] लोगपाला[6] य । अणिय[7] पइण्णा[8] अभिओगा[9], किब्बिसं[10] दसभवण वेमाणी
गंधव्व[1] नट्ट[2] हय[3] गय[4]-रह[5] भड[6] अणियाणि सव्वइंदाणं । वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहोनिवासीणं ॥४६॥
तित्तीस तायतीसा, परिस तिआ लोगपाल चत्तारि । अणिआणि सत्त सत्त य, अणियाहिव सव्वइंदाणं
नवरं वंतरजोइस-इंदाण न हुंति लोगपालाओ । तायत्तीसभिहाणा, तियसावि य तेसिं नहु हुंति ॥४७॥
समभूतलाओ अट्ठहिं, दसूणजोयणसएहिं आरब्भ । उवरि दसुत्तरजोयण-सयम्मि चिट्ठंति जोइसिया
तत्थ रवी दसजोयण, असीइ तदुवरि ससी य रिक्खेसु । अह भरणि साइ उवरिं, बहि मूलोऽब्भिंतरे अभिई

तार रवि चंद रिक्खा, बुह सुक्का जीव मंगल सणिया ।
सगसयनउय दस असिइ, चउ चउ कमसो तिया चउसु ॥ ५१ ॥

इक्कारस जोयणसय, इगवीसिक्कारसाहिया कमसो । मेरुअलोगावाहं, जोइसचक्क चरइ ठाइ ॥ ५२ ॥
अद्धकविठ्ठाऽऽगारा, फलिहमया रम्म जोइसविमाणा । वंतरनयरेहितो, सखिज्जगुणा इमे हुति ॥ ५३ ॥
ताइ विमाणाइ पुण, सव्वाइ हुति फालिहमयाइ । दगफालिहमया पुण, लवणे जे जोइसविमाणा॥५४॥
जोयणिगसट्ठिभागा, छप्पन्नऽडयाल गाउदुइगद्धं । चंदाइविमाणाया-मवित्थडा अद्धमुच्चत्तं ॥ ५५ ॥
पणयाललक्खजोयण, नरखित्त तत्थिमे सया भमिरा । नरखित्ताउ वहि पुण, अद्धपमाणा ठिआ निच्च
ससिरविगहनक्खत्ता,तारा हुंति हु जहुत्तर सिग्घा । विवरीया उ महड्ढीआ, विमाणवहगा कमेणेसि ५७
सोलस सोलस अड चउ, दो सुरसहसा पुरो य दाहिणओ । पच्छिम उत्तर सीहा, हत्थी वसहा हया कमसो
गहअट्ठासी नक्खत्त, अडवीसं तारकोडिकोडीणं । छासट्ठिसहस नवसय, पणसत्तरि एगससिसिन्न ५९
कोडाकोडी सन्नं-तरंति मन्नंति खित्तथोवतया । केई अन्ने उस्से-हंगुलमाणेण ताराण ॥ ६० ॥
किण्ह राहुविमाण, निच्चं चंदेण होइ अविरहियं । चउरंगुलमप्पत्तं, हिट्ठा चंदस्स तं चरइ ॥ ६१ ॥
तारस्स य तारस्स य, जंबुद्दीवम्मि अतरं गुरुयं । बारसजोयणसहसा, दुन्निसया चेव बायाला ॥६२॥
निसढो य नीलवंतो, चत्तारिसय उच्च पंचसय कूडा । अद्धं उवरिं रिक्खा, चरंति उभयऽट्ठबाहाए॥६३॥

गावट्ठा दुन्निसया, जहन्नमेयं तु होइ वाघाए। निव्वाघाए गुरुलहु, दोगाउ य धणुसया पंच ॥ ६४ ॥
माणुसनगाउ बाहिं, चंदा सूरस्स सूर चंदस्स। जोयणसहस्सा पन्ना–सऽणूणगा अंतरं दिट्ठं ॥ ६५ ॥

ससि ससि रवि रवि साहिय–जोयणलक्खेण अंतरं होइ।
रविअंतरिया ससिणो, ससिअंतरिया रवी दित्ता ॥ ६६ ॥

बहियाउ माणुसुत्तर, चंदा सूरा अवट्ठिउज्जोया। चंदा अभीइजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ६७ ॥
उद्धारसागरदुगे, सड्ढे समएहिं तुल्ल दीवुदही। दुगुणा दुगुणपवित्थर, वलयागारा पढमवज्जं ॥ ६८ ॥
पढमो जोयणलक्खं, वट्टो तं वेढिउं ठिया सेसा। पढमो जंबुद्दीवो, सयंभुरमणोदही चरमो ॥ ६९ ॥

जंबू धायइ पुक्खर, वारुणिवर खीर घय खोय नंदिसरा।
अरुणऽरुणुवाय कुंडल, संख रुयग भुयग कुस कुंचा ॥ ७० ॥

पढमे लवणो जलही, बीए कालो य पुक्खराईसु। दीवेसु हुंति जलही, दीवसमाणेहिं नामेहिं ॥ ७१ ॥
आभरणवत्थगंधे, उप्पलतिलए य पउमनिहिरयणे। वासहरदहनईउ, विजया वक्खार कप्पिंदा ॥७२॥
कुरुमंदरआवासा, कूडा नक्खत्तचंदसूरा य। अन्नेवि एवमाई, पसत्थवत्थूण जे नामा ॥ ७३ ॥

तन्नामा दीवुदही, तिपडोयारा हवंति अरुणाई। जंबूलवणाईया, पत्तेयं ते असंखिज्जा ॥ ७४ ॥
ताणंतिमसूरवरा-वभासजलही पर तु इक्किक्का। देवे नागे जक्खे, भूए य सयंभुरमणे य ॥ ७५ ॥
वारुणिवर खीरवरो, घयवर लवणो य हुंति भिन्नरसा। कालो य पुक्खरोदहि, सयंभुरमणो य उदगरसा

इक्खुरस सेसजलही, लवणे कालोए चरिमि बहुमच्छा।
पणसगदसजोयणसय, तणू कमा थोव सेसेसु ॥ ७७ ॥
दो ससि दो रवि पढमे, दुगुणा लवणम्मि धायईसंडे।
बारस ससि बारस रवि, तप्पभिइ निदिट्ठ ससिरविणो ॥ ७८ ॥

तिगुणा पुव्विल्लजुया, अणंतराऽणंतरम्मि खित्तम्मि। कालोए बायाला, बिसत्तरी पुक्खरद्धम्मि॥७९॥
दो दो ससिरविपंती, एगंतरिया छसट्ठिसंखा य। मेरु पयाहिणंती, माणुसखित्ते परियडंति ॥ ८० ॥
छप्पन्न पंतीओ, नक्खत्ताणं तु मणुयलोगंम्मि। छावट्ठी छावट्ठी, होई इक्किक्किआ पंती ॥ ८१ ॥
एवं गहाइणोऽवि हु, नवरं धुवपासवत्तिणो तारा। तं चिय पयाहिणंता, तत्थेव सया परिब्भमंति ॥८२॥
चउयालसय पढमि-ल्लयाए पंतीए चंदसूराण। तेण परं पंतीओ, चउरुत्तरिआए वुड्डीए ॥ ८३ ॥

बावत्तरि चंदाणं, बावत्तरि सूरियाण पंतीए। पढमाए अंतरं पुण, चंदा चंदस्स लक्खदुगं ॥ ७४ ॥
जो जावइ लक्खाइं, वित्थरओ सागरो य दीवो वा। तावइआओ य तहिं, चंदासूराण पंतीओ ॥७५॥
पन्नरस चुलसीइसयं, इह ससिरविमंडलाइं तक्खित्तं। जोयणपणसयदसहिअ, भागा अडयाल इगसट्ठा
ती सिगसट्ठा चउरो, एगिगसट्ठस्स सत्तभईयस्स। पणतीसं च दुजोयण, ससिरविणो मंडलंतरयं ७७
पणसट्ठी निसढम्मि य, तत्तिय बाहा दुजोयणंतरिया। एगुणवीसं च सयं, सूरस्स य मंडला लवणे
मंडलदसगं लवणे, पणगं निसढम्मि होइ चंदस्स। मंडलअंतरमाणं, जाणपमाणं पुरा कहियं॥७९॥

ससिरविणो लवणम्मि य, जोयणसयतिण्णि तीसअहियाइं।
असिअं तु जोयणसयं, जंबुद्दीवम्मि पविस्संति ॥ ८० ॥

गहरिक्खतारसंखं, जत्थेच्छसि नाउमुदहि दीवे वा। तस्ससिहि एगससिणो, गुणसंखं होइ सव्वग्गं ८१
बत्तीसऽट्ठावीसा, बारस अड चउ विमाणलक्खाइं। पन्नास चत्त छ सहस, कमेण सोहम्ममाईसु ॥८२॥
दुसु सयचउ दुसु सयतिग-मिगारसहियं सयं तिगे हिट्ठा। मज्झे सत्तुत्तरसय-मुवरितिगे सयमुवरि पंच
चुलसीइलक्खसत्ता-णवइ सहस्सा विमाण तेवीसं। सव्वग्गमुड्ढलोग-म्मि इंदया बिसट्ठि पयरेसु ॥८४॥

चउदिसि चउपंतीउ, वासठि विमाणिया पढमपयरे। उवरि इक्किकहीणा, अणुत्तरे जाव इक्किकं॥९५॥
इदय वट्टा पतिसु, तो कमसो तंसचउरसावट्टा । विविहा पुप्फवकिण्णा, तयंतरे मुत्तु पुव्वदिसि ॥९६॥
वट्ट वट्टेसुवरि, तंसं तसस्स उवरिमं होइ। चउरसे चउरंसं, उड्ढ तु विमाणसेढीओ ॥ ९७ ॥
सवे वट्टविमाणा, एगदुवारा हवंति नायवा । तिण्णि य तंसविमाणे, चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥ ९८ ॥
आवलियविमाणाणं, अतरं नियमसो असंखिज्जं । संखिज्जमसंखिज्ज जणिय पुप्फावकिण्णाणं ॥९९॥
एग देवे दीवे, दुवे य नागोदहीसु बोद्धवे । चत्तारि जक्खदीवे, जूयसमुद्देसु अठेव ॥ १०० ॥
सोलस सयजुरमणे, दीवेसु पइठिया य सुरजवणा । इगतीसं च विमाणा, सयजुरमणे समुद्दे य १०१
अच्चतसुरहिगधा, फासे नवणीयमउअसुहफासा । निच्चुज्जोआ रम्मा, सयंपहा ते विरायंति ॥१०२॥
जे दक्खिणेण इदा, दाहिणउ आवली मुणेयवा । जे पुण उत्तरइदा, उत्तरउ आवली तेसि ॥ १०३ ॥
पुव्वेण पच्छिमेण य, सामण्णा आवली मुणेयवा । जे पुण वट्टविमाणा, मज्झिल्ला दाहिणिल्लाण॥१०४॥
पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा तेवि दाहिणिल्लस्स । तंसचउरंसगा पुण, सामण्णा हुति दुण्हंपि॥१०५॥
पागारपरिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवंति सव्वेवि । चउरंसविमाणाणं, चउद्दिसि वेइया होइ ॥ १०६ ॥

जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तंसस्स वेइया होइ। पागारो बोद्धव्वो, अवसेसेसुं तु पासेसुं ॥ १०७ ॥
पढमंतिमपयरावलि–विमाणमुहभूमितस्समासऽद्धं। पयरगुणमिट्ठकप्पे, सव्वग्गं पुप्फकिण्णियरे॥१०८॥
इगदिसिपंतिविमाणा, तिविभत्ता तंसचउरसा वट्टा। तंसेसु सेसमेगं, खिव सेसदुगस्स इक्किक्कं १०९
तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासितिगंपि चउगुणं काउं। वट्टेसु इंदयं खिव, पयरधणं मीलियं कप्पे ११०
कप्पेसु य मिय[1] महिसो[2], वराह[3] सीहा[4] य छगल[5] सालूरा[6]।
हय[7] गय[8] भुयंग[9] खग्गी[10], वसहा[11] विडिमाइं[12] चिंधाइं ॥ १११ ॥
चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सट्ठी य पन्न चत्ताला।
तुल्लसुर तीस वीसा, दस सहस्सा आयरक्ख चउगुणिया ॥ ११२ ॥
दुसु तिसु तिसु कप्पेसु, घणुदहि घणवाय तदुभयं च कमा। सुरभवणपइट्ठाणं, आगासपइट्ठिया उवरिं
सत्तावीस सयाइं, पुढवीपिंडो विमाणउच्चत्तं। पंचसया कप्पदुगे, पढमे तत्तो य इक्किक्कं ॥ ११४ ॥
हायइ पुढवीसु सयं, वड्ढइ भवणेसु दुदुदुकप्पेसु। चउगे नवगे पणगे, तहेव जाऽणुत्तरेसु भवे ॥ ११५ ॥
इगवीससया पुढवी, विमाणमिक्कारसेव य सयाइं। बत्तीस जोयणसया, मिलिया सव्वत्थ नायव्वा ११६

पणचउतिदुवण्ण विमाणा, सधय दुसु दुसु य जा सहस्सारो।
उवरि सिय भवणवंतर–जोइसियाण विविहवण्णा ॥ ११७ ॥

रविणो उदयत्थतर, चउणवइसहस्सपणसयछवीसा। वायाल सट्ठिभागा, कक्कडसकतिदियहम्मि ११८
एयम्मि पुणो गुणिए, तिपचसगनवहिं होइ कममाण। तिगुणम्मी दो लक्खा, तेसीइसहस्सपचसया
असिईं छ सट्ठिभागा, जोयणचउलक्ख बिसत्तरिसहस्सा। छच्च सया तेत्तीसा, तीसकला पंचगुणियम्मि
सत्तगुणे छल्लक्खा, इगसट्ठिसहस्स छसय छासीया। चउपन्नकला तह नव–गुणम्मि अडलक्ख सड्ढा उ
सत्त सया चत्ताला, अट्ठारकला य इय कमा चउरो। चडा चवला जयणा, वेगा य तहा गई चउरो
इत्थ य गइ चउन्हि, जयणयरिं नाम केइ मन्नति। एहि कमेहिमिमाहिं, गईहि चउरो सुरा कमसो १२३
विक्खंभ आयाम, परिहिं अब्भितरं च बाहिरियं। जुगवं मिणति छम्मा–स जाव न तहावि ते पार
पावंति विमाणाण, केसिपि हु अहव तिगुणियाईए। कमचउगे पत्तेय, चंडाईगईउ जोइज्जा ॥१२५॥
जोयणलक्खपरिमाण, निमेसमित्तेण जाइ जो देवा। छम्मासेण य गमण, एग रज्जू जिणा बिंति॥१२६॥
तिगुणेण कप्पचउगे, पंचगुणेणं तु अठसु मिणिज्जा। गेविज्जे सत्तगुणेण, नवगुणेऽणुत्तरचउक्के ॥ १२७ ॥

पढमपयरम्मि पढमे, कप्पे उडुनाम इंदयविमाणं। पणयाललक्खजोयण, लक्खं सव्वुवरि सव्वट्ठं॥१२८॥
उडु चंदे रयय वग्गू, वीरिय वरुणे तहेव आणंदे। बंभे कंचण रुइले, वंचे अरुणे दिसे चेव ॥ १२९ ॥
वेरुलिय रुयग रुइरे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे। मेहे अग्घ हलिंदे, नलिणे तह लोहियक्खे य
वइरे अंजण वरमाल, अरिट्ठे तह य देव सोमे अ। मंगल बलभद्दे अ, चक्क गया सोत्थि णंदियावत्ते
आभंकरे य गिद्धी, केऊ गरुले य होइ बोद्धव्वे। बंभे बंभहिए पुण, बंभोत्तर लंतए चेव ॥ १३२ ॥
महसुक्क सहस्सारे, आणय तह पाणए य बोद्धव्वे। पुप्फेऽलंकारे अ, आरणे तहा अच्चुए चेव ॥ १३३ ॥
सुदंसण सुप्पडिबुद्धे मणोरमे चेव होइ पढमतिगे। तत्तो य सव्वओभद्दे, विसाले अ सुमणे चेव॥१३४॥
सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइयतिगे। सव्वट्ठसिद्धनामे, सुरिंदया एव बासट्ठी ॥ १३५ ॥
पणयालीसं लक्खा, सीमंतय माणुसं उडु सिवं च। अपइट्ठाणो सव्वट्ठ जंबुद्दीवो इमं लक्खं ॥ १३६ ॥

अहभागा सग पुढवीसु, रज्जू इक्किक्क तह य सोहम्मे।
माहिंदे लंते सहसारच्चुय गेविज्ज लोगंते ॥ १३७ ॥

[सुरेसु जवणदार सम्मत्त, इण्हि उंगाहणादार जणइ]

जवणवणजोइसोह–म्मीसाणे सत्तहत्थ तणुमाणं । ड्डुड्डुड्डुचउक्के गेविं–ज्जाऽणुत्तरे हाणि इक्किके ॥१३८॥

कप्पडुगडुडुडुचउगे, नवगे पणगे य जिठठिइ अयरा ।

दोसत्तचउदऽठ्ठारस–बावीसिगतीसतित्तीसा ॥ १३९ ॥

विवरे ताणिक्कूणे, इक्कारसगाउ पाडिए सेसा । हत्थिक्कारसजागा, अयरे अयरे समहियम्मि ॥ १४० ॥

चय पुव्वसरीराउ, कमेण एगुत्तराइ वुड्ढीए । एवं ठिईविसेसा, सणकुमाराइतणुमाणं ॥ १४१ ॥

जवधारणिज्ज एसा, उक्कोस विउव्वि जोयणा लक्ख । गेविज्जऽणुत्तरेसुं, उत्तरवेउव्विआ नत्थि ॥ १४२ ॥

साहावियवेउव्विय–तणू जहन्ना कमेण पारंजे । अंगुलअसंखजागो, अगुलसंखिज्जजागो य ॥१४३॥

[सुरेसु उंगाहणादार सम्मत्त, इण्हि विरहकालो उववाओवट्टणाण दार जणइ]

सामन्नेण चउविह–सुरेसु बारसमुहुत्त उक्कोसो । उववायविरहकालो, अह जवणाईसु पत्तेयं ॥ १४४ ॥

जवणवणजोइसोह–म्मीसाणेसु मुहुत्त चउवीस । तो नवदिण वीसमुहू, बारस दिण दस मुहुत्ता य १४५

बावीस सड्ढदीअहा, पणयाल असीइ दिणसय तत्तो । संखिज्जा डुसु मासा डुसु वासा तिसु तिगेसु कमा

वासाण सया सहसा, लक्खा तह चउसु विजयमाईसुं। पलियाअसंखभागो, सवट्ठे संखभागो य १४७
सवेसिंपि जहन्नो, समउ एमेव चवणविरहोऽवि। इगदुतिसंखमसंखा, इगसमए हुंति अ चवंति॥१४८॥
नरपंचिंदियतिरिया–णुप्पत्तीसुरभवे पजत्ताणं। अज्झवसायविसेसा, तेसिं गइतारतम्मं तु ॥ १४९ ॥
नरतिरिअसंखजीवी, सवे नियमेण जंति देवेसु। नियआउअसमहीणा–उएसु ईसाणअंतेसुं॥१५०॥
जंति समुच्छिमतिरिया, भवणवणेसु न जोइमाईसुं। जं तेसिं उववाउ, पलियाऽसंखंसआऊसुं ॥१५१॥
बालतवे पडिबद्धा, उक्कडरोसा तवेण गारविआ। वेरेण य पडिबद्धा, मरिउं असुरेसु जायंति ॥१५२॥
रज्जुगाहविसभक्खण–जलजलणपवेसतण्हछुहदुहउ। गिरिसिरपडणाउ मया, सुहभावा हुंति वंतरया
तावस जा जोइसिया, चरगपरिवाय बंभलोगो जा। जा सहसारो पंचिं–दितिरिअ जा अच्चुउ सड्ढा
जइलिंगमिच्छदिट्ठि, गेवेज्जा जाव जंति उक्कोसं। पयमवि असद्दहंतो, सुत्तुत्तं मिच्छदिट्ठी उ ॥ १५५ ॥
सुत्तं गणहररइअं, तहेव पत्तेयबुद्धरइअं च। सुयकेवलिणा रइअं, अभिण्णदसपुविणा रइअं ॥ १५६ ॥
छउमत्थसंजयाणं, उववाउक्कोसउ अ सवट्ठे। तेसिं सड्ढाणंपि अ, जहन्नउ होइ सोहम्मे ॥ १५७ ॥
लंतम्मि चउदपुविस्स, तावसाईण वंतरेसु तहा। एसो उववायविही, नियनियकिरियठियाण सवोऽवि

वजरिसहनाराय, पढमं वीअ च रिसहनाराय। नारायमद्धनारायं, कीलिया तह य छेवट्ठ ॥ १५९ ॥
एए छस्संघयणा, रिसहो पट्टो य कीलिया वज्ज। उभओ मक्कडबंधो, नाराओ होइ विन्नेओ ॥ १६० ॥
छ गब्भतिरिनराणं, संमुच्छिमपणिदिविगलछेवट्ठं। सुरनेरइया एगिंदिया य सव्वे असंघयणा ॥१६१॥
छेवट्ठेण उ गम्मइ, चउरो जा कप्प कीलियाईसु। चउसु दुदुकप्पवुड्ढी, पढमेणं जावसिद्धीवि॥१६२॥
समचउरंसे निग्गो-ह साइ वामेण य खुज्जं हुंडे य। जीवाण छ संठाणा, सव्वत्थ सुलक्खण पढमं १६३
नाहीइ उवरि वीअं, तइअमहो पिट्ठिउयरउरवज्ज। सिरगीवपाणीपाए, सुलक्खणं तं चउत्थ तु॥१६४॥
विवरीय पंचमग, सव्वत्थ अलक्खण छट्ठं। गब्भयनरतिरिय छहा, सुरा समा हुंडया सेसा॥ १६५ ॥
[इति देवाना गतिद्वार, अधुना आगतिद्वारमाह]
जंति सुरा संखाउअ-गब्भयपज्जत्तमणुअतिरिएसु। पज्जत्तेसु य बायर-भूदगपत्तेयगवणेसु ॥ १६६ ॥
तत्थवि सणंकुमार-प्पभिई एगिंदिएसु नो जंति। आणयपमुहा चविउं, मणुएसु चेव गच्छंति ॥१६७॥
दो कप्प कायसेवी, दो दो दो फरिसरूवसद्देहिं। चउरो मणेणुवरिमा, अप्पवियारा अणंतसुहा॥१६८॥
जं च कामसुहं लोए, जं च दिव्व महासुहं। वीयरायसुहस्सेअं, णंतभागंपि नग्घई ॥ १६९ ॥

उववाउ देवीणं, कप्पदुगं जा परो सहस्सारा। गमणाऽऽगमणं नत्थी, अच्चुअपरउ सुराणंपि ॥ १७० ॥

तिपलिअ तिसार तेरस–सारा कप्पदुग तइअ लंत अहो।

किब्बिसिअ न हुंतुवरिं, अच्चुअपरउऽभिउगाई ॥ १७१ ॥

अपरिग्गहदेवीणं, विमाणलक्खा छ हुंति सोहम्मे। पलियाई समयाहिय, ठिइ जासिं जाव दसपलिया

ताउ सणंकुमारा–णेवं वड्ढंति पलियदसगेहिं। जा बंभसुक्कआणय–आरणदेवाण पन्नासा ॥ १७२ ॥

ईसाणे चउलक्खा, साहियपलियाइ समयअहियठिई। जा पनरपलिय जासिं, ताउ माहिंददेवाणं

एएण कमेण भवे, समयाहियपलियदसगवुड्ढीए। लंत सहसारपाणय–अच्चुयदेवाण पणपन्ना ॥१७४॥

किण्हा–नीला–काऊ–तेऊ–पम्हा य सुक्कलेसा उ। भवणवण पढमचउले–स जोइस कप्पदुगे तेऊ

कप्पतियपम्हलेसा, लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा। कणगाभपउमकेसर–वण्णा दुसु तिसु उवरि धवला

दसवाससहस्साइं, जहन्नमाउं धरंति जे देवा। तेसि चउत्थाऽऽहारो, सत्तहि थोवेहि ऊसासो ॥१७७॥

आहिवाहिविमुक्कस्स, नीसासूसास एगगो। पाण सत्तइमो थोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥ १७९ ॥

लवसत्तहरीए, होइ मुहुत्तो इमम्मि ऊसासा। सगतीससय तिहुत्तर, तीसगुणा ते अहोरत्ते ॥ १८० ॥

लक्ख तेरस सहसा, नउअ सय अयरसंखया देवे। पक्खेहिं ऊसासो, वाससहस्सेहि आहारो॥१०१॥
दसवाससहस्सुवरिं, समयाई जाव सागरं ऊण। दिवसमुहुत्तपुहुत्ता, आहारूसास सेसाण ॥१०२॥
सरिरेणोआहारो, तयाइ फासेण लोमआहारो। पक्खेवाहारो पुण, कावलिउ होइ नायवो ॥ १०३ ॥
उआहारा सवे, अपजत्त पजत्त लोमआहारो। सुरनिरयइगिदि विणा, सेसनवत्था सपक्खेवा ॥ १०४ ॥
सचित्ताऽचित्तोनय-रूवो आहार सवतिरिआण। सवनराण च तहा, सुरनेरइयाण अचित्तो ॥१०५॥
आजोगाऽणाजोगा, सवेसिं होइ लोमआहारो। निरयाण अमणुन्नो, परिणमइ सुराण स मणुण्णो१०६
तह विगलनारयाण, अतमुहुत्ता स होइ उक्कोसो। पचिंदितिरिनराण, साहाविय ठठअठमउ॥१०७॥
विग्गहगइमावन्ना, केवलिणो समुहया अजोगी य। सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा१०८
केसठिमंसनहरो-मरुहिरवसचम्ममुत्तपुरिसेहिं। रहिआ निम्मलदेहा, सुगंधिनीसास गयलेवा॥१०९॥
अतमुहुत्तेण चिय, पज्जत्ता तरुणपुरिससंकासा। सवंगजूसणधरा, अजरा निरुआ समा देवा ॥११०॥

अणिमिसनयणा मणक-ज्जसाहणा पुप्फदामअमिलाणा।
चउरयुलेण जूमि, न ठिवति सुरा जिणा विति ॥ १११ ॥

पंचसु जिणकल्लाणे-सु चेव महरिसितवाणुभावाओ । जम्मंतरनेहेण य, आगच्छंति सुरा इहइं ॥१९२॥
संकंतदिव्वपेमा, विसयपसत्ता ऽसमत्तकत्तव्वा । अणहीणमणुअकज्जा, नरभवमसुहं न इंति सुरा ॥१९३॥
चत्तारिपंचजोयण-सयाइं गंधो य मणुअलोगस्स । उड्ढं वच्चइ जेणं, न उ देवा तेण आवंति ॥१९४॥
दो पढमकप्प पढमं, दो दो दो बीअतइयगचउत्थिं । चउउवरिम ओहीए, पासंति अ पंचमं पुढविं१९५
छट्ठिं छग्गेविज्जा, सत्तमिमियरे अणुत्तरसुरा उ । किंचूणलोगनालिं, असंखदीवुदहि तिरियं तु ॥१९६॥
बहुअयरं उवरिमगा, उड्ढं सविमाणचूलियधयाई । ऊणद्ध सागरे सं-खजोयणा तप्परमसंखा ॥१९७॥
पणवीसजोयण लहू, नारयभवणवणजोइकप्पाणं । गेविज्जणुत्तराण य, जहसंखं ओहिआगारा ॥१९८॥
तप्पागारे[१] पल्लग[२]-पडहग[३]झल्लरि[४]मुइंग[५]पुप्फ[६]जवे । तिरियमणुएसु ओही, नाणाविहसंठिओ भणिओ ॥१९९॥
उड्ढं भवणवणाणं, बहुगो वेमाणियाणऽहो ओही । नारयजोइस तिरियं, नरतिरियाणं अणेगविहो॥२००
इअ देवाणं भणियं, ठिइपमुहं नारयाण वुच्छामि । इग तिन्नि सत्त दस सतर, अयर बावीस तित्तीसा॥
सत्तसु पुढवीसु ठिई, जिट्ठोवरिमा य हिट्ठपुढवीए । होइ कमेण कणिट्ठा, दसवाससहस्स पढमाए२०२
नवइसमसहसलक्खा, पुव्वाणं कोडि अयरदसभागो । एगेगभागवुड्ढी, जा अयरं तेरसे पयरे ॥२०३॥

इग्र जिठ जहन्ना पुण, दसवाससहस्सलक्ख पयरदुगे ।
सेसेसु उवरिजिठा, अहो कणिठा उ पइपुढवि ॥ २०४ ॥
उवरिखिइठिइविसेसो, सगपयरविहत्तु इच्छसगुणिर्ड ।
उवरिमखिइठिइसहिर्ड, इच्छिअपयरम्मि उक्कोसा ॥ २०५ ॥
सत्तसु खित्तजविअणा, अन्नोन्नकया वि पहरणेहि विणा ।
पहरणकयाऽवि पचसु, तिसु परमाहम्मिअकया वि ॥ २०६ ॥

वंधण गई सठाणा, भेया वन्ना य गंध रस फासा । अगुरुलहु सद दसहा, असुहा वि य पुग्गला निरए॥
नरया दसविहवेयण, सीओसिणखुहपिवासकडूहि । परवस्स जर दाहं, भय सोगं चेव वेयति २०७
पण कोडि अट्ठसट्ठी-लक्खा नवनवइसहस पचसया । चुलसी अहिया रोगा, छट्ठी तह सत्तमी नरए ॥
रयणप्पह सक्करपह, वालुअपह पकपह य धूमपहा । तमपहा तमतमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइं२१०
घम्मा वसा सेला, अजण रिट्ठा मघा य माघवई । नामेहि पुढवीओ, छत्ताइच्छत्तसठाणा ॥ २११ ॥
असिइ यत्तीसडवीस-वीस अट्ठार सोल अड सहस्सा । लक्खुवरि पुढविपिडो, घणुदहि घणवायतणुवाया॥

गयणं च पइट्ठाणं, वीस सहस्साइं घणुदहिपिंडो । घणतणुवायागासा, असंखजोयणजुआ पिंडे ॥२१३॥
न फुसंति अलोगं चउ-दिसिं पि पुढवीउ वलयसंगहिआ । रयणाए वलयाणं छद्धपंचमजोअणं सड्ढं ॥
विक्खंभो घणउदही-घणतणुवायाण होइ जहसंखं । सतिभागगाऊअं, गाऊअं च तह गाउअतिभागो ॥
पढममहीवलएसुं, खिवेज एअं कमेण बीआए । [2]दु ति[3] च[4]उ पं[5]च[6]छगुणं, तइआइसु तंपि खिव कमसो ॥
मज्झे च्चिय पुढवि अहे, घणुदहिपमुहाण पिंडपरिमाणं । भणियं तओ कमेणं, हायइ जा वलयपरिमाणं ॥
तीस-पणवीस-पनरस-दस-तिन्नि-पणूणएगलक्खाइं । पंच य नरया कमसो, चुलसी लक्खाइं सत्तसु वि ॥
तेरिक्कारसनवसग-पणतिन्निग पयर सव्वि गुणवन्ना । सीमंताई अपइ-ट्ठाणंता इंदया मज्झे ॥ २१९ ॥
सी[1]मंतउत्थ पढमो, बीओ पुण रोरु[2]अ त्ति नायव्वो । भं[3]तो उणत्थ तइओ, चउत्थउ होइ उ[4]ब्भंतो ॥२२०॥
[5]संभंतमसं[6]भंतो, वि[7]ब्भंतो चेव सत्तमो निरओ । अट्ठमओ तत्तो पुण, नवमो सीउ त्ति णायव्वो ॥ २२१ ॥
वक्कं[10]तम[11]ऽवक्कंतो, वि[12]क्कंतो चेव रोरु[13]उ निरउ । पढमाए पुढवीए, तेरस निरइंदया एए ॥ २२२ ॥
थ[1]णिए थ[2]णए य तहा, म[3]णए व[4]णए अ होइ नायव्वो । घं[5]ट्टे तह संघं[6]ट्टे, जिं[7]भे अ[8]वजिब्भए, चेव ॥२२३॥
लो[9]ले लो[10]लावत्ते, तहेव थणलोलुए य बोद्धव्वे । बीयाए पुढवीए, इक्कारस इंदया एए ॥ २२४ ॥

तत्तो तविउं[2] तवणो[3], तावणो य पंचमो निदाघो अ । छट्ठो पुण पज्जलिउ, उज्जलिउ सत्तमो निरओ ॥
संजलिउं अट्ठमउ, संपज्जलिउं य नवमउ भणिउं । तइआए पुढवीए, एए नव होंति निरइन्दा॥२२६॥
आरे तारे[2] मारे[3], वच्चे तमए अ होइ नायव्वे । खाडखडे अ खडखडे, इंदयनिरया चउत्थीए ॥ २२७ ॥
खाए तमए[2] अ तहा, झसे[3] य [4]अंधे अ तहय तिमिसे अ । एए पचमपुढवीए, पंच निरइंदया हुंति२२८
हिमे वद्दल[2] लल्लके[3], तिन्नि उ निरइंदया उ छट्ठीए । एक्को य सत्तमाए, बोद्धव्वो अप्पइट्ठाणो ॥२२९॥
पुव्वेण होइ कालो, अवरेण पइट्ठिउ महाकालो । रोरो दाहिणपासे, उत्तरपासे महारोरो ॥ २३० ॥

तेहिंतो दिसि विदिसि, विणिग्गया अट्ठ निरयआवलिया ।
पढमे पयरे दिसि इगु णवन्न विदिसासु अडयाला ॥ २३१ ॥
बीयाइसु पयरेसु, इगइगहीणाउ हुंति पतीउं ।
जा सत्तममहिपयरे, दिसि इक्किक्को विदिसि नत्थि ॥ २३२ ॥

इटपयरेगदिसि-सख,अडगुणा चउविणा सइगसंखा । जह सीमंतयपयरे, एगुणनउआ सया तिन्नि ॥
अपइट्ठाणे पंच उ, पढमो मुहमतिमो हवइ भूमी । मुहभूमिसमासद्धं, पयरगुण होइ सवधण॥२३४॥

छन्नवइ सय तिपन्ना, सत्तसु पुढवीसु आवलीनरया ।
सेस तिअसीइलक्खा, तिसयसियाला नवइ सहसा ॥ २३५ ॥

तिसहस्सुच्चा सव्वे, संखमसंखिज्ज विच्छडाऽऽयामा। पणयाल लक्ख सीमं-तउ अ लक्खं अपइठाणो २३६
हिठा घणो सहस्सं, उप्पिं संकोयओ सहस्सं तु । मज्झे सहस्सझुसिरा, तिन्नि सहस्सूसिया निरया॥
छसु हिठोवरि जोयण-सहस्सं बावन्न सड्ढ चरिमाए । पुढवीए नरयरहियं नरया सेसम्मि सव्वासु॥
बिसहस्सूणा पुढवी, तिसहसगुणिएहिं निअयपयरेहिं। ऊणा रूवूणनियपयर-भाइया पच्छडंतरयं २३८
तेसीआ पंचसया, इक्कारस चेव जोयणसहस्सा । रयणाए पच्छडंतर-मेगो च्चिअ जोअणतिभागो॥२४०॥
सत्ताणवइ सयाइं, बीयाए पच्छडंतरं होइ। पणसत्तरि तिन्नि सया, बारसहस्सा य तइयाए ॥ २४१ ॥
छावठ सयं सोलस-सहस्स पंकाए दो तिभागा य । अड्ढाइज्ज सयाइं, पणवीस सहस्स धूमाए॥२४२॥
बावन्न सड्ढ सहसा, तमप्पभाः पत्थडंतरं होइ। एगो च्चिअ पत्थडउ, अंतररहिउ तमतमाए ॥२४३॥
पउणठधणु छअंगुल, रयणाए देहमाणमुक्कोसं । सेसासु दुगुणदुगुणं, पणधणुसय जाव चरिमाए२४४
रयणाए पढमपयरे, हत्थतियं देहमाणमणुपयरं । छप्पणंगुल सड्ढा, वुड्ढी जा तेरसे पुण्णं ॥ २४५ ॥

ज देहपमाण उवरि-माए पुढवीए अतिमे पयरे । त चिय हिठिमपुढवीए पढमपयरम्मि बोद्धव्वं २४६
त चेगूणगसगपयर-न्नइय वीयाइ पयरवुड्ढि नवे । तिकर तिअगुल करसत्त, अगुला सढिगुणवीसं २४७
पण धणु अगुल वीस,पणरस धणु डुन्नि हड सड्ढा य । वासठिधणुह सड्ढा,पणपुढवी पयरवुड्ढि इमा ॥
इअ साहाविअदेहो, उत्तरवेउव्विउ य तद्दुगुणो । डुविहोऽवि जहण्ण कमा, अंगुलअस्सखसंखसो २४९
सत्तसु चउवीस मुहू, सग पनरदिणेग डु चउ छम्मासा । उववायचवणविरहो, ओहे वारस मुहुत्त गुरू ॥
लहुउ डुहावि समउ, सखा पुण सुरसमा मुणेयव्वा । संखाउपजत्तपणि-दितिरिनरा जति नरएसुं २५१
मिच्छदिट्ठि महार-न परिग्गहो तिव्वलोह निस्सीलो । नरयाउअ निबधइ, पावरुई रुद्दपरिणामो २५२
असन्नि सरिसिव पक्खी, सीहँ उरँगिछिँ जति जा छट्ठि । कमसो उक्कोसेण, सत्तमपुढवी मणुँअमछा ॥
वाला दाढी पक्खी, जलयरनरयाऽऽगया उ अइकूरा । जति पुणो नरएसु, वाहुल्लेण न उण नियमो२५४
दो पढमपुढविगमण, छेवट्ठे कीलिआइसघयणे । इक्किक्कपुढविवुड्ढी, आइतिलेसाउ नरएसु ॥ २५५ ॥
डुसु काउ तइआए, काउ नीला य नील पकाए । धूमाए नीलकिण्हा, डुसु किण्हा हुंति लेसाउ ॥
सुरनारयाण ताउ, दव्वलेसा अवट्ठिया नणिया । नावपरावत्तीए, पुण एसि हुंति छल्लेसा ॥ २५७ ॥

निरउव्वट्टा गब्भे,पजत्तसंखाउ लद्धि एएसिं। [1]चक्कि [2]हरिजुअल [3]अरिहा, [4]जिण [5]जइ [6]दिसि [7]सम्म पुहविकमा॥
रयणाए ओहि गाउअ, चत्तारद्धुट्ठ गुरुलहु कमेणं । पइपुढवि गाउअद्धं, हायइ जा सत्तमि इगद्धं २५९
[निरयदारं सम्मत्तं, मणुअदारं जणणइ]
गब्भनर तिपलिआऊ, तिगाउ उक्कोसतो जहन्नेणं। मुच्छिम दुहावि अंतमुहु, अंगुलाऽसंखभागतणू ॥
बारसमुहुत्त गब्भे, इयरे चउवीस विरह उक्कोसो । जम्ममरणेसु समउ, जहण्ण संखा सुरसमाणा२६१
सत्तममहिनेरइए, तेऊ वाऊ असंखनरतिरिए। मुत्तूण सेसजीवा, उप्पज्जंति नरभवम्मि ॥ २६२ ॥
सुरनेरइएहिं चिय, हवंति हरिअरिहचक्किबलदेवा ।
चउविहसुर चक्किबला, वेमाणिअ हुंति हरिअरिहा ॥ २६३ ॥
हरिणो मणुस्सरयणाइं हुंति नाणुत्तरेहिं देवेहिं । जह संभवमुववाओ, हयगयएगिंदिरयणाणं ॥२६४॥
वामपमाणं [1]चक्कं, [2]छत्तं [3]दंडं दुहत्थयं [4]चम्मं । बत्तीसंगुल [5]खग्गो, सुवण्ण[6]कागिणि चउरंगुलिआ ॥ २६५ ॥
चउरंगुलो दुअंगुल, पिहुलो य [7]मणी [8]पुरोहि[9]गय[10]तुरया । [11]सेणावइ[12]गाहावइ-[13]वड्ढइ[14]थीचक्किरयणाइं ॥२६६॥
चउरो आयुजगेहे, भंडारे तिन्नि दुन्नि वेअड्ढे । एगं रायगिहम्मि य, नियनयरे चेव चत्तारि ॥२६७॥

णेसप्पे पंडुए, पिंगलए सव्वरयण महपउमे। कोले अ महाकाले, माणवगे तह महासंखे ॥ २६८ ॥
जंबुद्दीवे चउरो, सयाइ वीसुत्तराइ उक्कोसं। रयणाइ जहण्णं पुण, हुंति विदेहंमि छप्पन्ना ॥ २६९ ॥
चक्क धणुहं खग्गो, मणी गया तहय होइ वणमाला। संखो सत्त इमाइ, रयणाइं वासुदेवस्स ॥२७०॥
सखनरा चउसु गइसु, जंति पंचसु वि पढमसंघयणे।
इग दु ति जा अठसय, इगसमए जंति ते सिद्धि ॥ २७१ ॥
वीसित्थि दस नपुंसग, पुरिसठसयं तु एगसमएणं।
सिज्झइ गिहि अन्न सलिंग चउ दस अठाहिअसय च ॥ २७२ ॥
गुरुलहुमज्झिम दो चउ, अठसय उड्ढहोतिरिअलोए। चउवावीसठसय, दु समुद्दे तिन्नि सेसजले॥
नरयतिरियाऽऽगया दस, नरदेवगईउ वीस अठसय। दस रयणासक्करवा लुयाउ चउ पंकभूदगउ॥
छच्च वणस्सइ दस तिरि,तिरित्थि दस मणुअ वीस नारीउ। असुराइ वंतरा दस,पण तद्देवीउ पत्तेय॥
जोइ दस देवि वीसं, विमाणि अठसय वीस देवीउ। तह पुंवेएहिंतो, पुरिसो होऊण अठसयं २७६
सेसठभंगएसु, दस दस सिज्झंति एगसमयम्मि। विरहो छमास गुरुउ, लहु समउ चवणमिह नत्थि॥

अड सग छ पंच चउ तिन्नि, दुन्नि इक्को य सिज्झमाणेसु । बत्तीसाइसु समया, निरंतरं अंतरं उवरिं ॥
[३२]बत्तीसा [४८]अडयाला, [६०]सट्ठी [७२]बावत्तरी य अवहीओ । [८४]चुलसीई [९६]छन्नउई, [१०२]दुरहिअम[१०८]ट्ठुत्तरसयं च ॥२७९॥

पणयाललक्खजोयण-विक्खंभा सिद्धसिल फलिहविमला ।
तदुवरिगजोअणंते, लोगंतो तत्थ सिद्धठिई ॥ २८० ॥

बहुमज्झदेसभाए, अट्ठेव य जोयणाइ बाहल्लं । चरिमंतेसु य तणुई, अंगुलसंखेज्जइभागं ॥ २८१ ॥
तिन्नि सया तित्तीसा, धणुतिभागो य कोसछब्भागो । जं परमोगाहोऽयं, तो ते कोसस्स छब्भागो२८२
एगा य होइ रयणी, अट्ठेव य अंगुलेहिं साहीया । एसा खलु सिद्धाणं, जहन्न ओगाहणा भणिया२८३

[मणुअदारं समत्तं, तिरिअदारं भण्णइ]

बावीससगतिदसवा-ससहस्सगणितिदिणबेंदियाईसु ।
बारसवासुणपणदिण, छमासतिपलिअठिई जिट्ठा ॥ २८४ ॥

सण्हा य सुद्धवालुअ, मणोसिला सक्करा य खरपुढवी । इगबारचउदसोल-ट्ठारसबावीससमसहसा ॥
गब्भभुअजलचरोभय-गब्भोरगपुव्वकोडि उक्कोसा । गब्भचउप्पयपक्खिसु, तिपलिअ पलियाअसंखंसो २८६

पुव्वस्स उ परिमाणं, सयरिं खलु वासकोडिलक्खाओ। छप्पण्ण च सहस्सा, बोद्धव्वा वासकोडीणं॥२८७
समुच्छपणिदिथलखं-यरउरंगभूयगजिठठिइ कमसो। वाससहस्सा चुलसी, बिसत्तरि तिपन्न बायाला
एसा पुढवाईणं, नवठिई संपय तु कायठिई। चउ एगिंदिसु नेआ, ओसप्पिणीउ असंखेज्जा॥२८८॥
ताओ वणम्मि अणंता, सखिज्जा वाससहस विगलेसु। पंचिंदितिरिनरेसु, सत्तठभवा उ उक्कोसा॥२८९
सव्वेसि पि जहन्ना, अंतमुहुत्त भवे अ काए य। जोयणसहस्समहिअं, एगिंदियदेहमुक्कोसं॥२९०॥
बितिचउरिंदिसरीरं, बारसजोयणतिकोसचउकोसं। जोयणसहसपणिदिय, उहे वुच्छ विसेसं तु॥२९१॥
अंगुलअसंखभागो, सुहुमनिगोउ असखगुण वाऊ। तो अगणि तउ आऊ, तत्तो सुहुमा भवे पुढवी॥२९२
तो बायरवाउगणी-आउ पुढवी निगोअ अणुकमसो। पत्तेयवणसरीरं, अहिय जोयणसहस्सं तु॥२९३
उस्सेहगुलजोयण-सहस्समाणे जलासए नेय। तं वल्लिपउमपमुहं, अउ पर पुढविरूवं तु॥२९४
बारसजोयण संखो, तिकोस गुम्मीय जोयण भमरो। मुच्छिमचउपयभुयगुरग, गाउअधणुजोयणपुहुत्तं॥
गब्भचउप्पय छग्गा-उयाइ भुयगा उ गाउअपुहुत्त। जोयणसहस्समुरगा, मच्छा उभए वि य सहस्सं॥
पक्खिदुगधणुपुहुत्तं, सव्वाणंगुलअसखभाग लहू। विरहो विगला सन्नी-ण जम्ममरणेसु अंतमुहू॥२९५॥

गप्रे मुहुत्त बारस, गुरुउ लहु समयसंख सुरतुल्ला । अणुसमयमसंखिज्जा, एगिंदिय हुंति अ चवंति ॥
वणकाइउ अणंता, इक्किक्काउ वि जं निगोयाउ । निच्चमसंखो जागो, अणंतजीवो चयइ एइ ॥२००॥
गोला य असंखिज्जा, असंखनिग्गोउअ हवइ गोलो । इक्किक्कंमि निगोए, अणंत जीवा मुणेयव्वा २०१
अत्थि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइपरिणामो । उप्पज्जंति चयंति अ, पुणोवि तत्थेव तत्थेव २०२
सव्वोऽवि किसलउ खलु, उग्गममाणो अणंतउ भणिउ । सो चेव विवड्ढंतो,होइ परित्तो अणंतो वा॥२०३॥
जया मोहोदउ तिव्वो, अन्नाणं सुमहब्भयं । पेलवं वेयणीयं तु, तया एगिंदिअत्तणं ॥ २०४ ॥
तिरिएसु जंति संखाउ-तिरिनरा जा दुकप्पदेवा उ । पज्जत्तसंखगप्भय-बायरभूदगपरित्तेसुं ॥ २०५ ॥
तो सहसारंतसुरा, निरया य पज्जत्तसंखगप्भेसु । संखपणिंदियतिरिया, मरिउं चउसु वि गइसु जंति
थावरविगला नियमा, संखाउअतिरिनरेसु गच्छंति ।
विगला लभिज्ज विरइं, सम्मं पि न तेउवाउचुआ ॥ २०७ ॥
पुढवीदगपरित्तवणा, बायरपज्जत्त हुंति चउलेसा । गप्भयतिरियनराणं, छल्लेसा तिन्नि सेसाणं ॥ २०८ ॥
अंतमुहुत्तंमि गए, अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव । लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा वच्चंति परलोअं ॥ २०९ ॥

तिरिनरआगामिभव-ल्लेसाए अइगए सुरा निरया । पुव्वभवलेससेसे, अंतमुहुत्ते मरणमिति ॥ ३१० ॥
अंतमुहुत्तठिईओ, तिरियनराण हवंति लेसाओ । चरमा नराण पुण नव-वासूणा पुव्वकोमीवि ॥३११॥
तिरियाण वि ठिइपमुहं, जणियमसेसं पि संपयं वुछ । अभिहियदारप्पहियं, चउगइजीवाण सामन्नं ॥
देवा असंखनरतिरि, इत्थीपुवेअ गप्भनरतिरिया । संखाउआ तिवेया, नपुंसगा नारयाईया ॥ ३१३॥
आयंगुलेण वत्थु, सरीरमुस्सेहअगुलेण तहा । नगपुढविविमाणाईं, मिणसु पमाणंगुलेणं तु ॥ ३१४ ॥
सत्थेण सुतिक्खेणवि, छित्तुं भित्तुं व ज किर न सक्का । तं परमाणु सिद्धा, वयंति आइं पमाणाण३१५
परमाणू तसरेणू, रहरेणू वालअग्गलिक्खा य । जूअ जवो अट्ठगुणो, कमेण उस्सेहअगुलयं ॥ ३१६ ॥
अंगुलछक्क पाओ,सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो । चउहत्थ धणु दुसहस,कोसो ते जोयण चउरो॥
चउसयगुण पमाणं-गुलमुस्सेहंगुलाओ बोद्धव्वं । उस्सेहंगुलदुगुणं, वीरस्सायंगुलं भणिय ॥ ३१७ ॥

पुढवाइसु पत्तेयं, सग वणपत्तेयणंत दस चउदस ।
विगले दु दु सुरनारय-तिरि चउ चउ चउदस नरेसु ॥ ३१९ ॥

जोणीण हुंति लक्खा, सव्वे चुलसी इहेव घिप्पंति । समवन्नाइसमेया, एगत्तेणेव सामन्ना ॥३२०॥

एगिंदिएसु पंचसु, बार सत्त तिग सत्त अट्ठवीसा य ।
विगलेसु सत्त अरु नव, जलखहचउपयउरगभुयगे ॥ ३२१ ॥
अद्धत्तेरस बारस, दस दस नवगं नरामरे नरए। बारस छवीस पणविस, हुंति कुलकोडिलक्खाइं३२२
इगकोडि सत्तणवई-लक्खा सड्ढा कुलाण कोडीणं ॥
संवुडजोणि सुरेगिं-दिनारया वियड विगल गब्भुभया ॥ ३२३ ॥
अचित्तजोणि सुरनिरय,मीस गब्भे तिभेअ सेसाणं। सीउसिण निरय सुरगब्भ,मीस तेउसिण सेस तिहा
हयगब्भ संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइ जायंति। अरिहहरिचक्किरामा, वंसीपत्ताइ सेसनरा ॥ ३२५ ॥
आउस्स बंधकालो, अबाहकालो अ अंतसमओ य। अपवत्तणणपवत्तण, उवक्कमणुवक्कमा भणिया३२६
बंधंति देवनारय, असंखतिरिनर छमाससेसाऊ। परभविआउं सेसा, निरुवक्कम तिभागसेसाऊ॥३२७॥
सोवक्कमाउआ पुण, सेसतिभागे अहव नवमभागे। सत्तावीसइमे वा, अंतमुहुत्तंतिमे वावि ॥ ३२८॥
जइमे भागे बंधो, आउस्स भवे अबाहकालो सो। अंते उजुगइ इगसमय वक्क चउपंचसमयंता ३२९
उज्जुगइ पढमसमए, परभविअं आउअं तहाऽऽहारो। वक्काए बीअसमए, परभविआउं उदयमेई ३३०

इगदुतिचउवक्कासु, दुगाइसमएसु परभवाहारो। दुगवक्काइसु समया, इग दो तिन्नि अ अणाहारा३३१
वहुकालवेयणिज्जं, कम्मं अप्पेण जमिह कालेण। वेइज्जइ जुगवं चिय, उइन्नसव्वप्पएसग्गं ॥ ३३२ ॥
अपवत्तणिज्जमेय आउ अहवा असेसकम्मं पि। वधसमएवि वद्ध, सिढिल चिय तं जहाजोग॥३३३॥
ज पुण गाढनिकायण-वधेण पुवमेव किल वद्ध। तं होइ अणपवत्तण जुग्ग कमवेयणिज्जफलं ॥३३४॥
उत्तमचरमसरीरा, सुरनेरइया असखनरतिरिया। हुति निरुवक्कमाऊ, दुहावि सेसा मुणेयव्वा ३३५
जेणाउमुवक्कमिज्जइ, अप्पसमुत्थेण इयरगेणावि। सो अज्झवसाणाई, उवक्कमोऽणुवक्कमो इयरो॥३३६॥
अज्झवसाण निमित्ते[२], आहारे[३] वेयणा[४] पराघाए[५]। फासे[६] आणापाणू[७], सत्तविहं झिज्झए आउं ॥३३७॥
आहार सरीरिंदिय[२,३], पज्जत्ती आणपाण[४] भासमणे[५,६]। चउ पंच पंच छप्पिय, इगविगलासन्निसन्नीण३३८
आहारसरीरिंदिय-ऊसासवउमणोऽभिनिव्वत्ती। होइ जओ दलियाओ, करण पइ सा उ पज्जत्ती ॥३३९॥

पणइंदियतिवलूसा-साऊ अ दस पाण चउ छ सग अट्ठ।
इगदुतिचउरिंदीण, असन्निसन्नीण नव दस य ॥ ३४० ॥

आहारे भय[२] मेहुण[३], परिग्गहा[४] कोह[५] माण[६] माया[७] य। लोभे[८] ओहे[९] लोगे[१०], दस सण्णा हुंति सव्वेसि ३४१

सुह[11] दुह[12] मोहा[13] सन्ना, वितिगिंछा[14] चउदमा मुणेयव्वा। सोए[15] तह धम्म[16] सन्ना सोलसमा हवइ मणुएसु ॥
संखित्ता संघयणी, गुरुतरसंघयणिमज्झउ एसा। सिरिसिरिचंदमुणिंदेण, णिम्मिया अत्तपढणट्ठा ३४३
संखित्तयरी उ इमा, सरीरमोगाहणा य संघयणा। सन्ना संठाण कसाय-लेसइंदिय दुसमुग्घाया ॥
दिठ्ठी दंसण नाणे, जोगुवउगोववायचवणठिई। पज्जत्ति किमाहारे, सन्नी गई आगई वेए ॥ ३४५ ॥
तिरिया[1] मणुआ[2] काया[3], तहाऽग्गबीया[4] चउक्कगा चउरो। देवा नेरइया वा, अठारस भावरासीउ ३४६
एगा कोडी सतसट्ठी-लक्खा सत्तहुत्तरी सहस्सा य। दो य सया सोलहिया, आवलियाणं मुहुत्तंमि॥

पणसठि सहस पणसय, छत्तीसा इगमुहुत्तखुड्डभवा।
दो य सया छप्पन्ना, आवलिया एगखुड्डभवे ॥ ३४८ ॥

सलहारिहेमसूरिण, सीसलेसेण विरइयं सम्मं। संघयणिरयणमेयं, नंदउ जा वीरजिणतिथ्थं ॥ ३४९॥

[इति श्रीत्रैलोक्यदीपिकानाम संग्रहणी]

---

१ तिर्यंचके ४ प्रकार [बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौरेंद्री, पंचेंद्री] २ मनुष्यके ४ प्रकार [कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अंतरद्वीप, तथा संमूर्छिम मनुष्य] ३ काया के ४ प्रकार [पृथ्विकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय] ४ वनस्पतिकायके अग्रबीजादि ४ प्रकार [मूलबीज, स्कंधबीज, अग्रबीज, पर्वबीज.] देवता, तथा नारकी कुल १८ भावराशी हैं.

[अथ श्रीरत्नशेखरसूरिकृतलघुक्षेत्रसमासप्रकरणम्]

वीरं जयसेहरपय-पइट्ठिअं पणमिऊण सुगुरुं च । मंदु त्ति सस्सरणट्ठा, खित्तविआराऽणुमुंछामि ॥ १ ॥
तिरिएगरज्जुखित्ते, असंखदीवोदही उ ते सव्वे । उद्धारपलियपणवीस-कोडाकोडीसमयतुल्ला ॥ २ ॥
कुरुसगदिणावि अंगुल-रोमे सगवारविहिअअडखंडे । बावण्णसयं सहसा, सगनवई वीसलक्खाणू॥
ते थूला पल्ले वि हु, संखिज्जा चेव हुंति सव्वेऽवि । ते इक्किक्क असंखे, सुहुमे खंडे पकप्पेह ॥ ४ ॥
सुहुमाणुणिचियउस्से-हंगुलचउकोसपल्लिघणवट्टे । पइसमयमणुग्गह-निट्ठिअम्मि उद्धारपलिउ त्ति॥५॥
पढमो जंबू बीओ, धायइसंडो अ पुक्खरो तइओ । वारुणिवरो चउत्थो, खीरवरो पंचमो दीवो ॥ ६ ॥
घयवरदीवो छट्ठो इक्खुरसो सत्तमो अ अट्ठमओ । नंदीसरो अ अरुणो,नवमो इच्चाइअसंखिज्जा ॥७॥
सुपसत्थवत्थुनामा, तिपडोआरा तहाऽरुणाईया । इगनामेऽवि असंखा, जाव य सूरावभास त्ति ॥८॥
तत्तो देवे नागे, जक्खे भूए अ सयंभुरमणे य । एए पंच वि दीवा, इगेगनामा मुणेयव्वा ॥ ९ ॥
पढमे लवणो बीए, कालोदहि सेसएसु सव्वेसु । दीवसमनामया जा, सयंभुरमणोदही चरमो ॥ १० ॥
बीओ तइओ चरमो, उदगरसा पढमचउत्थपंचमगा । छट्ठोऽवि सनामरसा,इक्खुरसा सेसजलनिहिणो॥

जंबूद्दीवपमाणंगुलजोअणलक्खवट्टविक्खंभो। लवणाईया सेसा, वलयाभा दुगुणदुगुणा य ॥ १२ ॥
वयरामईहि नियनिय-दीवोदहिमज्झगणियमूलाहिं। अट्ठुच्चाहिं बारस-चउमूले उवरि रुंदाहिं ॥ १३ ॥
वित्थारदुगविसेसो, उस्सेहविभत्तखउ चउ होइ। इअ चूलागिरिकूडाइ-तुल्लविक्खंभकरणाहिं॥१४॥
गाउदुगुच्चाइ तय-ट्ठभागरुंदाइ पउमवेईए। देसूणदुजोयणवर-वणाहि परिमंडियसिराहिं ॥ १५ ॥
वेईसमेण महया, गवक्खकडएण संपरित्ताहिं। अट्ठारसूणचउभत्त-परिहिदारंतराहिं च ॥ १६ ॥
अद्धुच्चचउसुवित्थर-दुपाससक्कोसकुड्डदाराहिं । पुव्वाइमहड्ढियदेव-दारविजयाइनामाहिं ॥ १७ ॥
नाणामणिमयदेहलि-कवाडपरिघाइदारसोहाहिं। जगईहिं ते सव्वे, दीवोदहिणो परिक्खित्ता ॥१८॥
वरतिणतोरणझयछत्त-वाविपासायसेलसिलवट्टे। वेइवणे वरमंडव-गिहासणेसुं रमंति सुरा ॥ १९ ॥
इह अहिगारो जेसिं, सुराण देवीण ताणमुप्पत्ती। नियदीवोदहिनामे, असंखइमे सनयरीसु॥२०॥
जंबूद्दीवो छहि कुल-गिरिहि सत्ताहिं तहेव वासेहिं। पुव्वावरदीहेहिं, परिछिन्नो ते इमे कमसो २१
हिमवंसिहरी महहिम-वरुप्पिनिसढो य नीलवंतो य। बाहिरओ दुदुगिरिणो,उभउ वि सवेइया सव्वे॥
भरहेरवय त्ति दुगं, दुगं च हेमवयरण्णवयरूवं। हरिवासरम्मयदुगं, मज्झि विदेहु त्ति सग वासा२२

दो दीहा चउ वट्टा, वेअड्ढा खित्तछक्कमज्झम्मि । मेरू विदेहमज्झे, पमाणमित्तो कुलगिरीण ॥ २४ ॥
इगदोचउसयउच्चा, कणगमया कणगरायया कमसो । तवणिज्जसुवेरुलिया, वहिमज्झब्भिंतरा दो दो२५

दुग अरु दुतीस अंका, लक्खगुणा कमेण नउअसयभइया ।
मूलोवरि समरूवं, विच्छारं विति जुअलतिगे ॥ २६ ॥

बावण्णहियं सहसो, बारकला बाहिराण विच्छारो । मज्झिमगाण दसुत्तर-बायालसया दस कला य ॥
अब्भिंतराण दुकला, सोलसहस्सऽडसया सबायाला । चउचत्तसहस दोसय, दसुत्तरा दस कला सव्वे२७
इगचउसोलसंका, पुव्वुत्तविहीइ खित्तजुअलतिगे । विच्छारं विति तहा, चउसट्ठिको विदेहस्स ॥ २८॥
पंचसया छव्वीसा, छच्च कला खित्तपढमजुअलम्मि, । बीए इगवीससया, पणुत्तरा पंच य कला य॥३०॥

चुलसीसय इगवीसा, इक्ककला तइयगे विदेहि पुणो ।
तित्तीससहस छस्सय, चुलसीया तह कला चउरो ॥ ३१ ॥
पणपन्नसहस सग सय, गुणणउआ नव कला सयलवासा ।
गिरिखित्तंकसमासे,, जोअणलक्ख हवइ पुण्ण ॥ ३२ ॥

पन्नासमुद्ध बाहिर-खित्ते द्लियम्मि डुसय अमतीसा ।
तिणि य कला य एसो, खंमचनक्कस्स विक्खंन्नो ॥ ३३ ॥

गिरिनवरि सवेइदद्हा, गिरिनच्चत्तान दसगुणा दीहा। दीहत्तअद्धरुंदा, सव्वे दसजोअणुव्वेहा ॥ ३४ ॥
बहि पनमपुंमरीया, मज्झे ते चेव हुंति महपुव्वा । तेगछिकेसरीया, अप्निंतरिया कमेणेसुं ॥ ३५ ॥
सिरिलछी हिरिबुद्धी, धीकित्ती नामियान देवीर्न । नवणवईर्न पलिर्न-वमान वरकमलनिलयार्न ३६
जलुवरि कोसडुगुच्चं, दहविछरपणसयंसविछारं । बाहल्ल विछरद्धं, कमलं देवीण मूलिल्लं ॥ ३७ ॥
मूले कंदे नाले, तं वयरारिठवेरुलिअरूवं । जंबुणयमज्झतवणि-ज्जबहिदलं रत्तकेसरयं ॥ ३८ ॥
कमलद्धपायपिहुलुच्च-कणगमयकण्णिगोवरिं नवणं । अद्धेगकोसपिहुदीह-चनदसयचालधणुहुच्चं ३९

पछिमदिसि विणु धणुपण-सयनच्च ढाइज्जसय पिहुपवेसं ।
दारतिगं इह नवणे, मज्झे दहदेविसयणिज्जं ॥ ४० ॥

तं मूलकमलद्धप्प-माणकमलाण अडहिअसएणं । परिखित्तं तन्नवणे-सु भूसणाईणि देवीणं ॥ ४१ ॥
मूलपउमान पुव्विं, महयरियाणं चनण्ह चनपनमा । अवराइ सत्त पनमा, अणिआहिवईण सत्तण्हं ॥

वायव्वाइसु तिसु सिरि-सामन्नसुराण चउसहसपउमा ।
अट्ठदसबारसहसा, अग्गेयाइसु तिपरिसाण ॥ ४३ ॥
इअ बीअपरिक्खेवो, तइए चउसु वि दिसासु देवीणं ।
चउ चउ पउमसहस्सा, सोलसहस्साऽऽयरक्खाण ॥ ४४ ॥

अभिओगाइ तिवलए, दुतीसचत्ताऽयाललक्खाइ । इगकोडि वीसलक्खा, पण्णाससहस्स वीससयं ४५
पुव्वावरमेरुमुहं, दुसु दारतिगं पि सदिसि दहमाणा । असीइभागपमाण, सतोरणं निग्गयनईय॥४६॥
जामुत्तरदारदुगं, सेसेसु दहेसु ताण मेरुमुहा । सदिसि दहासियभागा, तयऽमाणा य बाहिरिआ
गंगा सिंधू रत्ता, रत्तवई बाहिरं नइचउक्कं । बहिदहपुव्वावरदार-वित्थरं वहइ गिरिसिहरे ॥ ४७ ॥
पंचसय गंतु नियगा-वत्तणकूडाउ वहिमुहं वलई । पणसयतेवीसेहि, साहियतिकलाहि सिहराउ॥४८॥
निवडइ मगरमुहोवम-वयरामयजिब्भियाइवयरतले । नियगे निवायकुंडे, मुत्तावलिसमप्पवाहेण॥५०॥
दहदारविहाराउ, विहरपन्नासभागजड्डाउ । जड्डत्ताउ चउगुण-दीहाउ सवजिब्भीउ ॥ ५१ ॥
कुंडतो अडजोअण, पिहुलो जलउवरि कोसदुगमुच्चो । वेइजुउ नइदेवी-दीवो दहदेविसमभवणो॥

जोअणसट्ठिपिहुत्ता, सवायछप्पिहुलवेइतिदुवारा । एए दसुंड कुंडा, एवं अन्ने वि नवरं ते ॥ ५३ ॥
जोअणसट्ठिपिहुत्ता, सवायछप्पिहुलवेइतिदुवारा । एए दसुंड कुंडा, एवं अन्ने वि इह नवई ५४
एसिं विछारतिगं, पडुच्च समदुगुणचउगुणट्ठगुणा । चउसट्ठिसोलचउदो, कुंडा सव्वेऽवि इह नवई ॥ ५५ ॥
एअं च नइचउक्कं, कुंडाउ बहिदुवारपरिवूढं । सगसहसनइसमेअं, वेअड्ढगिरिं पि भिंदेई ॥ ५६॥
तत्तो बाहिरखित्त-द्ध मज्झउ वलइ पुव्वअवरमुहं । नइसत्तसहससहिअं जगइतलेणं उदहिमेइ ॥५७॥
धुरि कुंडदुवारसमा, पज्जंते दसगुणा य पिहुलत्ते । सव्वछ महनईउ, वित्थरपन्नासजागुंडा ॥५८॥
पणखित्तमहनईउ, सदारदिसि दहविसुद्धगिरिअद्धं । गंतूण सजिब्भीहिं, निअनिअकुंडेसु निवडंति॥
निअजिब्भिअपिहुलत्ता, पणवीसंसेण मुत्तु मज्झगिरिं । जाममुहा पुव्वुदहिं, इअरा अवरोअहिमुविंति॥
हेमवइ रोहिअंसा, रोहिआ गंगदुगुणपरिवारा । एरन्नवए सुवन्न-रुप्पकूलाउ ताण समा ॥ ६० ॥
हरिवासेहरिकंता, हरिसलिला गंगचउगुणनईआ । एसि समा रम्मयए, नरकंता नारिकंता य ॥६१॥
सीउआ सीआउ, महाविदेहम्मि तासु पत्तेयं ।
निवडइ पणलक्ख, दुतीससहस अडतीस नइसलिलं ॥ ६२ ॥
कुरुनइ चुलसीसहसा, छच्चेवंतरनईउ पइविजयं । दो दो महानईउ, चउदसहस्सा उ पत्तेयं ॥ ६३ ॥

अरूसयरि महानइर्ज, बारस अंतरनईउ सेसाओ। परिअरनईओ चउद्द-सलक्खा छप्पन्नसहसा य ६४
एगाररूनवकूना,कुलगिरिजुअलत्तिगे वि पत्तेअं। इइ छप्पन्ना चउ चउ,वक्खारेसु त्ति चउसट्ठी॥६५॥

सोमणसि गंधमायणि, सग सग विज्जुप्पनिमालवंति पुणो।
अट्ठट्ठसयलतीस, अरू नंदणि अट्ठ करिकूना ॥ ६६ ॥

इअ पणसयउच्च गसट्ठि-सय कुना तेसु दीहरगिरीण। पुव्वनइमेरुदिसि अतसिद्धकूडेसु जिणजवणा॥
ते सिरिगिहाउ दोसय-गुणप्पमाणा तहेव तिडुवारा। नवर अडवीसाहिअ-सयगुणदारप्पमाणमिह ६७
पणवीसं कोससयं, समचउरसविच्छडा डुगुणमुच्चा। पासाया कूनेसु, पणसयउच्चेसु सेसेसु॥ ६ए ॥
वलहरिसहहरिकूडा, नंदनवणि मालवंति विज्जुपन्ने। ईसाणुत्तरदाहिण-दिसासु सहसुच्च कणगमया ७०
वेअद्धेसु वि नव नव, कूडा पणवीसकोसउच्चा ते। सव्वे तिसय छडुत्तर, एसु वि पुव्वति जिणकूना ॥ ७१ ॥
ताणुवरि चेईहरा, दहदेवीजवणतुल्लपरिमाणा। सेसेसु अ पासाया, अद्धेगकोसं पिहुच्चत्ते॥ ७२ ॥
गिरिकरिकूडा उच्च-त्तणाओ समअद्धमूलुवरि रुंदा। रयणमया नवरि विअद्धमज्झिमा ति ति कणगरूवा॥
जंबूणयरययमया, जगइसमा जंबुसामलीकूडा। अठ्ठ तेसु दहदे-विगिहसमा चारुचेइहरा ॥७४॥

तेसि समोसहकूडा; चउतीसं चुल्लकुंडजुअलंतो । जंबूणएसु तेसु अ, वेअड्ढेसुं व पासाया ॥ ३५ ॥
पंचसए पणवीसे, कूडा सव्वे वि जंबुदीवंमि । ते पत्तेअं वरवण-जुआहि वेईहि परिक्खित्ता ॥ ३६ ॥
छसयरि कूडेसु तहा, चूला चउवणतरूसु जिणभवणा । भणिया जंबूद्दीवे, सदेवया सेसठाणेसु ॥ ३७ ॥
करिकूडकुंडनइदह-कुरुकंचणयमलसमविअड्ढेसु । जिणभवणविसंवाओ, जो तं जाणंति गीअत्था ॥३८॥
पुव्वावरजलहिंता, दसुच्चदसपिहुलमेहलचउक्का । पणवीसुच्चा पन्नासतीसदसजोअणपिहुत्ता ॥ ३९ ॥
वेईहिं परिक्खित्ता, सखयरपुरपन्नसट्ठिसेणिदुगा । सदिसिंदलोगपालो-वभोगउवरिल्लमेहलया ॥४०॥
दुदुखंडविहिअभरहे-रवया दुदुगुरुगुहायरुप्पमया । दो दीहा वेअड्ढा, तहा दुतीसं च विजएसु ॥४१॥
नवरं ते विजयंता सखयरपणपन्नपुरदुसेणीआ । एवं खयरपुराइं, सगतीससयाइं चालाइं ॥ ४२ ॥
गिरिविच्छरदीहाओ, अडुच्चचउपिहुपवेसदाराओ । बारसपिहुलाउ अडु-च्चयाउ वेअड्ढ दुदुगुहाओ ॥४३॥
तम्मज्झदुजोअणअं-तराउ ति ति विच्छराओ दुनईओ । उम्मग्गनिमग्गाओ, कडगाओ महानइगयाओ॥
इह पइभित्तिं गुणव-न्नमंडले लिहइ चक्कि दुदुसमुहे । पणसयधणुहपमाणे, बारेगडजोअणुज्जोए ॥ ४५ ॥
सा तिमिसगुहा जीए, चक्की पविसेइ मज्झखंडंतो । उसहं अंकिअ सो जीए वलइ सा खंडगपवाया ॥४६॥

कयमाल-नट्टमालय-सुराउ वडूइनिबद्धसलिलाओ। जा चक्की ता चिठति, ताओ जग्घभिअदाराओ ८७
बहिखडंतो वारस-दीहा नवत्तिरथडा अउज्झपुरी। सा लवणा वेअड्डा, चउद्दहिअँसयं चिगारकला॥८८॥
चक्किवसनइपवेसे, तित्थडुग मागहो पभासो अ। ताणतो वरदामो, इह सव्वे विडुत्तरसयंत्ति ॥ ८९ ॥
नरहेरवए छअर-मयावसप्पिणिउसप्पिणीरूव। परिजमइ कालचक्कं, डुवालसार सया वि कमा॥९०॥

सुसमसुसमा य सुसमा, सुसमडुसमा य डुसमसुसमा य ॥
डुसमा य डुसमडुसमा, कमुक्कमा डुसु वि अरछक्कं ॥ ९१ ॥

पुव्वुत्तपल्लि समसय-अणुगहणा निठिए हवइ पलिउ। दसकोडिकोडिपलिए-हि सागरो होइ कालस्स९२
सागरचउतिडुकोडा-कोडिमिए अरतिगे नराण कमा। आउ तिडुइगपलिआ, तिडुइगकोसा तणुच्चत्त॥
तिडुइगदिणेहिं तूवरि-बयरामलमित्तु तेसिमाहारो। पिठकरंडा दोसय, छप्पन्ना तहलं च दल ॥ ९४॥

गुणवन्नदिणे तह पन-रपनरअहिए अवच्चपालणया।
अवि सयलजिआ जुअला, सुमणसुरूवा य सुरगइआ ॥ ९५ ॥

तेसि मत्तंगे भिंगा, तुडिअंगा जोइँ दीव चित्तंगा। चित्तरसा मणिअंगा, गेहागारा अणिअंयक्खा॥ ९६ ॥

पाणं जायणपिच्छण, रविपहदीवपह कुसुममाहारो। भूसण गिह वत्थासण, कप्पदुमा दसविहा दिंति ॥
मणुआउसम गयाई, हयाइ चउरंसऽजाइ अट्ठंसा। गोमहिसुट्टखराई, पणंस साणाइ दसमंसा ॥ ९८ ॥
इच्चाइ तिरच्छाण वि, पायं सव्वारएसु सारिच्छं। तइआरसेसि कुलगर-नयजिणधम्माइ उप्पत्ती ॥९९॥
कालदुगे तिचउत्था-रगेसु एगूणनवइपक्खेसु। सेसि गएसु सिज्झंति, हुंति पढमंतिमजिणिंदा॥२००॥
बायालसहसवरिसू-णिगकोडाकोडिअयरमाणाए। तुरिए नराउ पुव्वा-ण कोडि तणु कोसचउरंसं २०१
वरिसेगवीससहस-प्पमाणपंचमरए सगकरुच्चा। तीसहियसयाउ नरा, तयंति धम्माइयाणंतो ॥ २०२ ॥
सुअसूरिसंघधम्मो, पुव्वण्हे छिज्जिही अगणि सायं। निवविमलवाहणो सुह-ममंति तरूम्म मज्झण्हे २०३
खारग्गिविसाईहिं, हाहाभूआकयाइ पुहवीए। खगबीयं विअड्ढाइसु, नराइबीयं बिलाईसु ॥ २०४ ॥
बहुमच्छचक्कवहनइ-चउक्कपासेसु नव नव बिलाइं। वेअड्ढोभयपासे, चउआल सयं बिलाणेवं ॥२०५॥
पंचमसमछट्ठारे, दुकरुच्चा वीसवरिसआउ नरा। मच्छासिणो कुरूवा, कूरा बिलवासि कुगइगमा॥२०६॥
निल्लज्जा निव्वसणा, खरवयणा पिअसुआइठिइरहिया। थीउ छवरिसगब्भा, अइदुहपसवा बहुसुआ य ॥
इअ अरछक्केणऽवस-प्पिणि त्ति उस्सप्पिणी वि विवरीआ। वीसं सागरकोडा-कोडीउ कालचक्कंमि २०७

कुरुदुगि हरिरम्मयदुगि, हेमवएरन्नवइदुगि विदेहे। कमसो सयाऽवसप्पिणि, अरयचउक्काइसमकालो॥
हेमवेएरन्नवेए, हरिवासे रम्मए अ रयणमया। सद्दावइ विअडावइ, गधावइ मालवंतक्खा ॥ ११० ॥
चउवट्टविअड्ढा साइअरुणपउमप्पभासुरवासा। मूलुवरि पिहुत्ते तह, उच्चत्ते जोयणसहस्सं ॥ १११ ॥
मेरू वट्टो सहस्स-कंदो लक्खूसिओ सहस्सुवरिं। दसगुण भुवि तं सनवइ, दसिगारंसं पिहुलमूले ॥ ११२ ॥
पुढवुवलवयरसक्कर-मयकंदो उवरि जाव सोमणस। फलिहंकरययकंचण-मओ य जंबूणओ सेसो ॥११३॥
तदुवरि चालीसुच्चा, वट्टा मूलुवरि बार चउ पिहुला। वेरुलिआ वरचूला, सिरिभवणपमाणचेइहरा ११४
चूलातलाउ चउसय, चउणवई वलयरूव विक्खंभ। बहुजलकुंड पडग-वण च सिहरे सवेईअ॥ ११५॥
पन्नासजोअणेहिं, चूलाओ चउदिसासु जिणभवणा। सविदिसि सक्कीसाण चउवाविजुआ य पासाया॥
कुलगिरिचेइहराण, पासायाण चिमे समठ्ठगुणा। पणवीसरुंदद्दुगुणा-यामाउ इमा उ वावीओ ॥ ११७॥

जिणहरबहि दिसि जोअण-पणसयदीहद्धपिहुल चउउच्चा।
अद्धससिसमा चउरो, सिअकणगसिला सवेईआ ॥ ११८ ॥

सिलमाणद्धसहस्सं-समाणसीहासणेहि दोहि जुआ सिल पंडुकंबला र-त्तकंबला पुव्वपच्छिमओ ॥११९॥

जामुत्तराओ ताउ,इगेगसीहासणाउ अइपुव्वा। चउसु वि तासु नियासण-दिसिभव जिणमज्जणं होई १२०
सिहराच्छत्तीसेहिं, सहसेहिं मेहलाइ पंचसए। पिहुलं सोमणसवणं, सिलविणु पंडगवणसरिच्छं॥१२१॥
तब्बाहिरि विक्खंभो, बायालसयाइं डुसयरिजुआइं। अट्ठेगारसभागा, मज्झे तं चेव सहसूणं ॥१२२॥
तत्तो सड्ढडुसट्ठी-सहस्सेहिं नंदणं पि तह चेव। नवरि भवणपासायं-तरट्ठदिसि कुमरिकूडा वि॥१२३॥
नवसहस नवसयाइं, चउपण्णा छच्चिगारभागा य। नंदणबहि विक्खंभो, सहसूणो होइ मज्झंमि॥१२४॥
तदहो पंचसएहिं, महिअलि तह चेव भद्दसालवणं। नवरमिह दिग्गय च्चिय, कूडा वणवित्थरं तु इमं ॥
बावीससहस्साइं, मेरूउ पुव्वउ अ पच्छिमउ। तं चाडसीविहत्तं, वणमाणं दाहिणुत्तरउ ॥ १२६ ॥
छव्वीससहस चउसय, पणहत्तरि गंतु कुरुनइपवाया। उभउ विनिग्गया गय-दंता मेरुम्मुहा चउरो॥१२७॥
अग्गेआइसु पयाहि-णेण सिअरत्तपीयनीलाभा। सोमणसविज्जुप्पह-गंधमायणमालवंतक्खा ॥१२८॥
अहलोगवासिणीउ, दिसाकुमारीउ अट्ठ एएसिं। गयदंतगिरिवराणं, हिट्ठा चिट्ठंति भवणेसु॥ १२९॥
धुरि अंते चउपणसय,उच्चत्ति पिहुत्ति पणसयाऽसिसमा। दीहत्ति इमे छकला,डुसय नवुत्तर सहसतीसं॥
ताणं तो देवुत्तर-कुराउ चंदद्धसंठिआ उ डुवे। दससहसविसुद्धमहा-विदेहदलमाणपिहुलाउ ॥ १३१ ॥

नइपुवावरकूले, कणगमया वलसमा गिरी दो दो। उत्तरकुराइ जमगा, विचित्तचित्ता य इअरीए ॥१३२॥
नइवहदीहा पण पण हरया डुडुदारया इमे कमसो। निसहो तह देवकुरू, सूरो सुलसो य विज्जुपज्जो ॥
तह नीलवंत उत्तर-कुरु चंदेरवय मालवंतु त्ति। पउमदहसमा नवर, एएसु सुरा दहसनामा ॥१३४॥
अडसय चउतीस जोअ-णाइं तह सेगसत्तनागाउं। इक्कारस य कलाउं गिरिजमलदहाणमंतरय ॥१३५॥
दहपुवावरदसजो-अणेहि दस दस विअड्ढकूडाणं। सोलसगुणप्पमाणा, कचणगिरिणो डुंसय सवे ॥१३६
उत्तरकुरुपुवरू, जवूणयजवुपीढमंतेसु। कोसडुगुच्च कमि व-ड्ढमाणु, चउवीसगुण मज्झे ॥ १३७ ॥
पणसयवट्टपिहुत्त, त परिक्खिव-त्तं च पउमवेईए। गाउडुगुच्चरूपिहुत्त, चारुचउदारकलिआए ॥ १३८ ॥
त मज्झे अडवित्थर, चउच्च मणिपीढिआइ जवुतरू। मूले कदे खधे, वरवयरारिठ्ठवेरु-लिउं ॥ १३९ ॥
तस्स य साहपसाहा, दला य विंटा य पल्लवा कमसो। सोवण्णजायरूवा, वेरुलितवणिज्जजंवुणया ॥१४०
सो रययमयपवालो, राययविडिमो य रयणपुप्फफलो। कोसडुग उवेहे, थुडसाहाविडिमविक्खंभे १४१
थुडसाहविडिमदीह-त्ति गाउए अठ्ठपनरचउवीसं। साहा सिरिसमभवणा, तम्माणसचेइय विडिम ॥
पुविल्लि सिज्ज तिसु आ-सणाणि भवणेसु णाढिअसुरस्स। सा जंवू वारसवे-इआहि कमसो परिक्खित्ता ॥

दहपउमाणं जं वि-त्थरं तु तमिहा वि जंबुरुक्खाणं । नवरं महयरियाणं, ठाणे इह अग्गमहिसीउ ॥१४४॥
कोसदुसएहि जंबू, चउद्दिसिं पुव्वसालसमभवणा ।विदिसासु सेसतिसमा, चउवाविजुया य पासाया ॥
ताणंतरेसु अड जिण-कूडा तह सुरकुराइ अवरद्धे । रायययपीढे सामलि-रुक्खो एमेव गरुलस्स ॥ १४६ ॥
बत्तीस सोल बारस, विजया वक्खार अंतरनईउ । मेरुवणाउ पुव्वा-वरासु कुलगिरिमहनयंता ॥ १४७ ॥
विजयाण पिहुत्ति सग-ठभाग बारुत्तरा दुवीससया । सेलाणं पंचसए, सवेइनइ पन्नवीससयं ॥ १४८ ॥
सोलससहस्स पणसय, बाणउआ तह य दो कलाउ य ।एएसिं सव्वेसिं, आयामो वणमुहाणं च ॥१४९॥
गयदंतगिरिवुच्चा, वक्खारा ताणमंतरनईणं । विजयाणं च भिहाणा-इं मालवंता पयाहिणउ ॥ १५० ॥
चि[1]त्ते य बं[2]भकूडे, नलि[3]णीकूडे य ए[4]गसेले य । ति[5]उडे वे[6]समणे वि य, अं[7]जण मा[8]यंजणे चेव ॥ १५१ ॥
अं[9]कावइ, प[10]म्हावइ, आ[11]सीविस तह सु[12]हावहे चं[13]दे । सू[14]रे ना[15]गे दे[16]वे, सोलस वक्खारगिरिनामा ॥ १५२॥
गा[1]हावइ द[2]हवई, वे[3]गवई त[4]त्त म[5]त्त उ[6]म्मत्ता । खी[7]रोय सी[8]यसोया, तह अंतोवा[9]हिणी चेव ॥ १५३ ॥
उ[10]म्मीमालिणि गंभी-र[11]मालिणी फे[12]णमालिणी चेव । सव्वत्थ वि दसजोयण-उंडा कुंडुप्पवा एया ॥ १५४ ॥
क[1]च्छु सु[2]कच्छो य म[3]हा-कच्छो क[4]च्छावई तहा । आ[5]वत्तो मं[6]गलावत्तो, पु[7]क्खलो पु[8]क्खलावई ॥ १५५॥

वत्थु सुवत्थो य महा-वत्थो वत्थावई वि य । रम्मो य रम्मउे चेव, रमणिज्जो मंगलावई ॥ १५६ ॥
पम्हु सुपम्हो य महा-पम्हो पम्हावई तओ । संखो नलिणनामा य, कुमुओ नलिणावई ॥ १५७ ॥
वप्पु सुवप्पो य महा-वप्पो वप्पावई त्ति य । वग्गू तहा सुवग्गू य, गंधिलो गंधिलावई ॥ १५८ ॥
एए पुव्वावरगय-विअडदलिय त्ति नईदिसि दलेसु । जरऊपुरीसमाउे, इमेहि नामेहि नयरीउे ॥१५९॥
खेमा खेमपुरा वि अ, अरिट्ठ रिट्ठावई य नायव्वा । खग्गी मंजूसा वि य, उसहिपुरी पुंडरिगिणी य ॥१६०॥
सुसीमा कुंडला चेव, अवराइय पहंकरा । अंकावइ पम्हावइ, सुभा रयणसंचया ॥ १६१ ॥
आसपुरा सीहपुरा, महापुरा चेव हवइ विजयपुरा । अवराइया य अवरा, असोगा तह वीयसोगा य १६२
विजया य वेजयंती, जयंति अपराजिया य बोद्धव्वा । चक्कपुरा खग्गपुरा, होइ अवज्झा य अउज्झा य १६३
कुडुप्रवा उ गगा-सिधूउे कच्छपम्हपमुहेसु । अठठसु विजएसु सेसेसु य रत्त रत्तवई ॥ १६४ ॥
अविवक्खिऊण जगई, सवेइवणमुहचउक्कपिहुलत्तं । गुणतीससय दुवीसा, नइंति गिरिअंति एगकला॥

पणतीससहस चउसय, छडुत्तरा सयलविजयविक्खंभो ।
वणमुहदुगविक्खंभो, अडवन्नसया य चउआला ॥ १६६ ॥

सगसय पन्नासा नइ-पिहुत्ति चउवन्नसहस मेरुवणे। गिरिवित्थरि चउसहसा, सव्वसमासो हवइ लक्खं॥
जोयणसयदसगंते, समधरणीउ अहो अहोगामा ।बायालीससहसेहिं, गंतुं मेरुस्स पच्छिमउ ॥ १६७ ॥
चउ चउतीसं च जिणा, जहन्नमुक्कोसउ अ हुंति कमा । हरिचक्किबला चउरो, तीसं पत्तेअमिह दीवे १६९
ससिदुगरविदुगचारो, इह दीवे तेसिं चारखित्तं तु । पणसय दसुत्तराइं, इगसट्ठिभागा य अडयाला ॥
पनरस चुलसीइसयं, छप्पन्नऽडयालभागमाणाइं । ससिसूरमंडलाइं, तयंतराणिगिगहीणाइं ॥ १७१ ॥
पणतीसजोअणे भा-गतीस चउरो अ भागसगभाया । अंतरमाणं ससिणो, रविणो पुण जोअणे दुन्नि ॥
दीवंतो असि[१८०]अंसए, पण पणसट्ठी य मंडला तेसिं। तीसहिं[३३०]अंतिसय लवणे, दसिगुणवीसं सयं कमसो ॥

ससिससि रविरवि अंतरि, मज्झे इगलक्खु तिसयसाठूणो ।
साहियदु[७२]सयरिपण[५]चय, बहि लक्खो छसय साठहिउ ॥ १७४ ॥
साहियपणसहस-तिहु-त्तराइ ससिणो मुहुत्तगइ मज्झे ।
बावन्नहिआ सा बहि, पइमंडलपउणचउवुड्ढी ॥ १७५ ॥

जा ससिणो सा रविणो, [१७८]अडसयरिसएण ऽसीस[१८०]एण हिआ । किंचूणाणं अठा-रसठिभागाणमिह वुड्ढी॥

मज्झे उदयत्थतरि, चउणवइसहस्स पणसय छवीसा। बायालसठिभागा, दिण च अठारसमुहुत्त॥१७७॥
पइमंडल दिणहाणी, डुण्ह मुहुत्तेगसठिभागाण॥ अते बारमुहुत्त, दिण निसा तस्स विवरीआ॥ १७८॥
उदयत्थतरि बाहि, सहसा तेसठि छसय तेसट्ठा। तह इगससिपरिवारे, रिक्खडवीसाऽडसीइ गहा॥१७९
छासठिसहस नवसय, पणहत्तरि तारकोडिकोडीणं। सण्णंतरेण वुस्से-हंगुलमाणेण वा हुंति॥ १८०॥
गहरिक्खतारगाण, संख ससिसखसंगुण काउ। इच्छिअदीवुदहिम्मि य, गहाइमाण विआणेह॥१८१॥
चउ चउ बारस बारस, लवणे तह धायइम्मि ससि सूरा। परउदहिदीवेसु य, तिगुणा पुविल्लसंजुत्ता॥
नरखित्तं जा समसे-णिचारिणो सिग्घसिग्घतरगइणो। दिठिपहमिति खित्ता-णुमाणउ ते नराणेवं॥१८३
पणसय सत्तत्तीसा, चउतीससहस्स लक्खइगवीसा। पुक्खरदीवड्ढनरा, पुव्वेण ऽवरेण पिच्छति॥१८४॥
नरखित्तबाहि ससिरवि-संखा करणतरेहि वा होइ। तह तत्थ य जोइसिआ, अचलद्धपमाणसुविमाणा॥
जबूपरिहि तिलक्खा, सोलसहस डुसय पउणअडवीसा। धणुअडवीससयंगुल-तेरससड्ढा समहिआ य॥
सगसयनउआकोडी, लक्खा छप्पन्न चउणवइसहसा। सड्ढसय पउणडुको-स सड्ढबासठिकर गणियं॥
वट्टपेरिहि च गेणिअ, अतिमखडाइउसु जिअ च धणु। बाहु पयर च घण, गणिअव्व मिमेहि करणेहि१८८

विक्खंभवग्गदहगुण-मूलं वट्टस्स परिरओ होई । विक्खंभपायगुणिओ, परिरओ तस्स गणिअपयं॥१८९॥
ओगाहूणसू सुच्चिअ गुणवीसगुणो कला-उसू होई। विउसुपिहुत्ते चउगुण-उसुगुणिए मूलमिह जीवा ॥
उसुवग्गि छगुणि जीवा-वग्गजुए मूल होइ धणुपिट्ठं । धणुदुगविसेससेसं, दलिअं बाहादुगं होई ॥१९१॥
अंतिमखंडस्सिसुणा, जीवं संगुणिअचउहि भईऊणं। लद्धंमि वग्गिए दस-गुणंमि मूलं हवइ पयरो१९२
जीवावग्गाण दुगे, मिलिए दलिए य होइ जं मूलं। वेअड्ढाईण तयं, सपिहुत्तगुणं हवइ पयरो ॥ १९३ ॥
एअं च पयरगणिअं, संववहारेण दंसिअं तेण। किंचूणं होइ फलं, अहिअं पि हवइ सुहुमगणणा ॥ १९४॥
पयरो सोस्सेहगुणो, होइ घणो परिरयाइसव्वं वा । करणगणणालसेहिं, जंतगलिहिआउ दट्ठव्वं ॥१९५॥

[इति श्रीलघुक्षेत्रसमासप्रकरणे प्रथमो जंबूद्वीपाधिकारः, अथ द्वितीयो लवणसमुद्राधिकारो भण्यते]

गोतित्थं लवणोभय, जोअणपणनवइसहस जा तत्थ। समभूतलाओ सगसय-जलवुड्ढी सहसमोगाहो ॥
तेरासिएण मज्झि-ल्लरासिणा संगुणिज्ज अंतिमगं। तं पढमरासिभइयं, उव्वेहं मुणसु लवणजले ॥ १९७ ॥
हिट्ठुवरि सहसदसगं, पिहुला मूलाउ सतरसहसुच्चा। लवणसिहा सा तदुवरि, गाउदुगं वड्ढइ दुवेलं॥
बहुमज्झे चउदिसि चउ, पायाला वयरकलससंठाणा। जोअणसहस्स जड्डा, तद्दसगुणहिट्ठुवरिरुंदा ॥

सक्स च मज्झि पिहुला, जोअणलक्खं च नूमिमोगाढा।पुव्वाइसु वडवामुहं-केजुवंजूंवेसरंचिहाणा॥२००
अन्ने लहुपायाला, सगसहसा अडसया सचुलसीआ।पुव्वुत्तसयंसपमा-णा तत्थ तत्थ प्पएसेसु ॥ २०१ ॥
कालो अ महाकालो, वेलव पभजणो अ चउसु सुरा।पलिउवमाउणो तह, सेसेसु सुरा तयद्धाऊ॥२०२॥
सवेसिमहो-नागे वाऊ मज्झिल्लयम्मि जलवाऊ। केवलजलमुवरिल्ले, नागडुगे तत्थ सासुव ॥ २०३ ॥
वहवे उदारवाया, मुच्छंति खुहंति डुण्णिवाराउं। एगअहोरत्ततो, तया तया वेलपरिवुड्डी ॥ २०४ ॥
वायालसठिडुसयरि-सहसा नागाण मज्झुवरिवाहिं। वेलं धरंति कमसो,चउहत्तरुलक्खु ते सवे ॥२०५॥
वायालसहस्सेहिं, पुव्वीसाणाइदिसिविदिसिलवणे। वेलधराणुवेलं-धरराईण गिरिसु वासा ॥ २०६ ॥
गोथूंने दगंजासे, संखे दगसीम नामि दिसि सेले।गोथूंनो सिवंदेवो, संखो अ मणोसिलो राया॥२०७॥
कक्कोडे विज्जुंपहे, केलाँस रुणेप्पहे विदिसिसेले। कक्कोडगु कहंमऊं, केलाँस रुणप्पहो सामी ॥ २०७ ॥
एए गिरिणो सवे,वावीसहिआ य दससया मूले।चउसय चउवीसहिआ, विच्छिन्ना हुंति सिहरतले ॥
सतरससय इगवीसा, उच्चत्ते ते सवेइआ सवे।कणंगंकेरयंयफाॅलिह, दिसासु विदिसासु रयणमया॥२१०
नवगुणहत्तरिजोअण, वहि जलुवरिचत्तपणनवइभाया। एए मज्झे नवसय, तेसठा नाग सगसयरि ॥

हिमवंतंता विदिसी-साणाइगयासु चउसु दाढासु । सग सग अंतरदीवा, पढमचउक्कं च जगईउ ॥२१२॥
जोअणतिसएहि तउ, सयसयवुड्ढी अ छसु चउक्केसु । अन्नुन्नजगइअंतरि, अंतरसमवित्थरा सव्वे ॥ २१३॥
पढमचउक्कुच्च बहिं, अड्ढाइअजोअणे य वीसंसा । सयरिंसवुड्ढिपुरउ, मज्झदिसिं सव्वि कोसदुगं ॥ २१४ ॥
सव्वे सवेइअंता, पढमचउक्कंमि तेसि नामाइं । [1]एगोरुय [2]आभासिय, [3]वेसाणिय चेव [4]लंगूले ॥ २१५ ॥
बीअचउक्के [1]हय[2]गय-[3]गोस[4]क्कुलिपुव्वकण्णनामाणो । [1]आयंस[2]मिंढग[3]अउ-[4]गोपुव्वमुहा य तइयंमि ॥ २१६ ॥
[1]हय[2]गय[3]हरि[4]वग्घमुहा, चउत्थए [1]आसकण्णु [2]हरिकण्णो । [3]अकन्नु [4]कण्णपावरणु दीवो पंचमचउक्कंमि २१७
[1]उक्कमुहो [2]मेहमुहो, [3]विज्जुमुहो [4]विज्जुदंत छट्ठम्मि । सत्तमगे दंतंता, [1]घण[2]लट्ठ[3]निगूढ[4]सुद्धा य ॥ २१८ ॥
एमेव य सिहरम्मि वि, अडवीसं सव्वि हुंति छप्पन्ना । एएसु जुअलरूवा, पलिआसंखंसआउ नरा ॥२१९॥
जोयणदसमंसतणू, पिट्ठिकरंडाणमेसि चउसट्ठी । असणं च चउत्थाउ, गुणसीदिणवच्चपालणया ॥२२०

पच्छिमदिसि सुत्थियलव-णसामिणो गोयमु त्ति इगु दीवो ।
उत्तरउ वि जंबुलावण, दु दु रवि दीवा य तेसिं च ॥ २२१ ॥

जगइपरुप्परअंतरि, तह वित्थर बारजोयणसहस्सा । एमेव य पुव्वदिसिं, चंदचउक्कस्स चउदीवा ॥२२२॥

एवं चिय बाहिरउ, दीवा अट्ठ पुवपच्छिमउ । डुडुलवणछछधायइ-संडससीणं रवीणं च ॥२२३॥
एए दीवा जलुवरि, बहि जोयणसड्ढअट्ठसीइ तहा । भागा वि य चालिसा, मज्झे पुण कोसडुगमेव ॥
कुलगिरिपासायसमा, पासाया एसु नियनियपहूणं । तह लावणजोइसिया, दगफालिह उद्धलेसागा ॥
[इति श्रीलवणसमुद्राधिकारो द्वितीयः, अथ तृतीयधातकीखंडद्वीपाधिकारः]
जामुत्तरदीहेणं, दससयसमपिहुलपणसयुच्चेणं । उसुयारगिरिडुगेणं, धायइसंडो डुहविहत्तो ॥२२६॥
संडडुगे छ छ गिरिणो, सग सग वासा य अरविवररूवा ।
धुरि अंति समा गिरिणो, वासा पुण पिहुलपिहुलयरा ॥ २२७ ॥
दहकुंडउंडत्तममे-रुमुस्सयं वित्थरं वियड्ढाणं । वट्टगिरीण च सुमे-रुवज्जमिह जाण पुवसमं ॥ २२८ ॥
मेरुडुगपि तह चिय, नवरं सोमणसहिट्ठुवरिदेसे । सगअडसहस्सऊणुत्ति सहसपणसीइ उच्चत्ते ॥२२९॥
तह पेणंनयई चउणउइं, अडचउणंउ य अट्ठतीसा य । दस य सयाइ कमेणं, पणठाण पिहुत्ति हिठाओ॥
नइकुंडदीववणमुह-दहदीहरसेलकमलवित्थारं । नइउंडत्तं च तहा, दहदीहत्तं च इह डुगुणं ॥ २३१ ॥
इगलक्खु सत्तसहसा, अडसय गुणसीइ भद्दसालवण । पुवावरदीहंतं, जामुत्तर अट्ठसीभइयं ॥२३२॥

बहिगयदंता दीहा, पणलक्खुणसयरिसहस दुगुणठा ।
इयरे तिलक्ख छप्प-णसहस सय दुन्नि सगवीसा ॥ २३३ ॥

खित्ताणुमाणउ से-ससेलनईविजयवणमुहायामो । चउलक्खदीहवासा,वासविजयवित्थरो उ इमो ॥
खित्तंकगुणधुवंके, दोसयबारुत्तरेहिं पविभत्ते । सव्वत्थ वासवासो, हवेइ इह पुण इय धुवंका ॥ २३५ ॥

धुरि चउदलक्ख दुसहस दोसगनउआ धुवं तहा मज्झे ।
दुसय अडुत्तर सतस-ट्ठिसहस छवीसलक्खा य ॥ २३६ ॥
गुणवीससयं बत्तीस-सहस गुणयाललक्ख धुवमंते ।
नइगिरिवणमाणविसु-ऊ खित्तसोलंस पिहु विजया ॥ २३७ ॥

नवसहसा छसय तिहु-त्तरा य छच्चेव सोलभाया य । विजयपिहुत्तं नइगिरि-वणविजयसमासि चउलक्खा
पुव्वं व पुरी य तरू, परमुत्तरकुरुसु धाइ महधाई । रुक्खा तेसु सुदंसण-पियदंसणनामया देवा ॥२३९॥
धुवरासीसु अ मिलिया, एगो लक्खो य अडसयरिसहसा । अट्ठसया बायाला, परिहितिगं धायईसंडे ॥

.[इति लघुक्षेत्रसमासप्रकरणे धातकीखण्डद्वीपाधिकारस्तृतीयः अथ चतुर्थः कालोदसमुद्राधिकारो भण्यते]

कालोओ सवत्थ वि, सहस्सुंडो वेलविरहिउं तत्थासुत्थियसम कालमहा-कालसुरा पुवपच्छिमउं॥२४१
लवणमिव जहसंजव, ससिरविदीवा इहं पि नायवा। नवर समंतउं ते कोसडुगुच्चा जलस्सुवरिं॥२४२॥

[इति कालोदसमुद्राधिकारश्चतुर्थ, अथ पञ्चम पुष्करवरद्वीपार्धाधिकारो जण्यते]

पुक्खरदलवहिजगइ व संठिउं माणुसुत्तरो सेलो। वेलंधरगिरिमाणो, सीहनिसाई निसढवन्नो ॥२४३॥
जह खित्तनगाईण, सठाणो धाइए तहेव इहं। डुगुणो य नदसालो, मेरुसुयारा तहा चेव ॥ २४४ ॥

इह वाहिरगयदंता, चउरो दीहत्ति वीससयसहसा।
तेयालीससहस्सा, उणवीसहिया सया डुन्नि ॥ २४५ ॥

अप्रिंतर गयदंता, सोलसलक्खा य सहसछवीसा। सोलहिअं सयमेगं, दीहत्ते हुंति चउरो वि ॥२४६॥
सेसा पमाणउं जह, जंबूदीवाउ धाइए जणिया। डुगुणा समा य ते तह, धायइसंमाउ इह नेया २४७
अडसीलक्खा चउदस-सहसा तह नवसया य इगवीसा। अप्रिंतरधुवरासी, पुवुत्तविहीइ गणियवो ॥
इगकोडि तेरलक्खा, सहसा चउचत्त सगसय तियाला। पुक्खरवरदीवड्ढे, धुवरासी एस मज्झमि॥२४ए॥
एगा कोडी अमती-सलक्ख चउहत्तरी सहस्सा य। पचसया पणसट्ठा, धुवरासी पुक्खरकूते ॥ २५० ॥

गुणवीससहस सगसय, चउणउ य सवाय विजयविक्खंभो ।
तह इह बहिवहसलिला, पविसंति य नरनगस्साहो ॥ २५१ ॥

इह पउममहापउमा, रुक्खा उत्तरकुरूसु पुव्वं व । तेसु वि वसंति देवा, पउमो तह पुंडरीउ य ॥ २५२ ॥

पुक्खरदलपुव्वावर-खंडंतो सहसडुग पिहु उकूडा । भणिया तट्ठाणं पुण, गीयत्था चेव जाणंति ॥२५३॥

दोगुणहत्तरि पढमे, अड लवणे बीअदीवि तइयद्धे ।
पिहु पिहु पणसयचाला, इअ नरखित्ते सयलगिरिणो ॥ २५४ ॥

तेरहसय सगवन्ना, ते पण मेरूहिं विरहिया सव्वे । उस्सेहपायकंदा, माणुससेलो वि एमेव ॥ २५५ ॥

धुवरासीसु तिलक्खा, पणपन्न सहस्स छसय चुलसीया ।
मिलिया हवंति कमसो, परिहितिगं पुक्खरद्धस्स ॥ २५६ ॥

नइदहघणथणियागणि-जिणाइनरजम्ममरणकालाई । पणयाललक्खजोयण-नरखित्तं मुत्तु नो पुरउ ॥

[इति लघुक्षेत्रसमासप्रकरणे पुष्करवरद्वीपार्धाधिकारः पञ्चमः, अथेषुकारेषु जिनभवनन्याह]

चउसु वि उसुयारेसु, इक्किक्कं नरनगम्मि चत्तारि । कूडोवरि जिणभवणा, कुलगिरिजिणभवणपरिमाणा

तत्तो डुगुणपमाणा, चउदारा थुत्तवणिअसरूवे ।
नंदीसरि वावन्ना, चउ कुंमलि रुयगि चत्तारि ॥ २५ए ॥
वहुसंखविगप्पे रुय-गदीवि उच्चत्ति सहस चुलसीई ।
नरनगसम रुयगो पुण, वित्थरि सयठाणि सहसंको ॥ २६०॥
तस्स सिहरम्मि चउदिसि, वीयसहस्सिगिगु चउत्थि अठ्ठा ।
'विदिसि चऊ इअ चत्ता, दिसिकुमरिकूमसहस्संका ॥ २६१ ॥
इइ कश्वयदीवोदहि-वियारलेसो मए विमइणावि । लिहिउं जिणगणहरगुरु-सुयसुयदेवीपसाएणं ॥
सेसाण दीवाण तहोदहीणं, वियारवित्थारमणोरपारं ।
सया सुयाउ परिजावयंतु, सवं पि सवन्नुमइक्कचित्ता ॥ २६३ ॥
सुरिहि ज रयणसेहरनामएहिं, अप्पत्थमेव रइयं नरखित्तविक्खं ।
संसोहियं पयरण सुयणेहि लोए, पावेउ तं कुसलरंगमइं पसिद्धिं ॥ २६४ ॥
[इति ईपुकारेपु जिनजवनानि । श्रीलघुक्षेत्रसमासप्रकरण सपूर्णम्]

[अथ श्रीदेवेंद्रसूरिकृतकर्मविपाकाख्यः प्रथमकर्मग्रंथः]

सिरिवीरजिणं वंदिअ, कम्मविवागं समासउं वुच्छं। कीरइ जिएण हेउहिं, जेणं तो भण्णए कम्मं॥१॥
पयइठिइरसपएसा, तं चउहा मोअगस्स दिट्ठंता। मूलपगइट्ठउत्तर-पगईअडवन्नसयभेअं॥२॥
इह नाणदंसणाऽऽवर-णवेअमोहाउनामगोआणि। विग्घं च पणनवदुअ-ट्ठवीसचउतिसयदुपणविहं॥३॥
मईसुअउहीमणके-वलाणि नाणाणि तत्थ मइनाणं। वंजणवग्गह चउहा, मणनयणविणिंदिअचउक्का॥
अत्थुग्गहईहावा-यधारणा करणमाणसेहिं छहा। इअ अट्ठवीसभेअं, चउदसहा वीसहा व सुअं॥५॥
अक्खर सन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसिअं च। गमिअं अंगपविट्ठं, सत्त वि एए सपडिवक्खा॥६॥
पज्जयअक्खरपयसं-घाया पडिवत्ति तह य अणुउगो। पाहुडपाहुडपाहुड-वत्थूपुव्वा य ससमासा॥७॥
अणुगामिवड्ढमाणय-पडिवाईयरविहा छहा उही। रिउमइविउलमई मण-नाणं केवलमिगविहाणं॥८॥
एसिं जं आवरणं, पडु व चक्खुस्स तं तयावरणं। दंसणचउ पणनिद्दा, वित्तिसमं दंसणावरणं॥९॥
चक्खूदिट्ठिअचक्खू-सेसिंदियउहिकेवलेहिं च। दंसणमिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा॥१०॥
सुहपडिबोहा निद्दा, निद्दानिद्दा य दुक्खपडिबोहा। पयला ठिउवविट्ठ-स्स पयलपयला उ चंकमउ॥११॥

दिणचितिअत्थकरणी, थीणद्धी अद्धचक्किअद्धबला। महुलित्त खग्गधारा-लिहणं व दुहा उ वेअणिअं॥
उसन्न सुरमणुए, सायमसाय तु तिरिअनिरएसु। मज्ज व मोहणीअं, दुविहं दंसणचरणमोहा ॥१३॥
दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीसं तहेव मिच्छत्तं। सुद्धं अद्धविसुद्धं, अविसुद्धं तं हवइ कमसो ॥ १४ ॥
जिअअजिअपुण्णपावाऽऽसवसंवरबंधमुक्खनिज्जरणा। जेण सद्दहइ तयं, सम्मं खइगाइबहुभेअं ॥ १५ ॥
मीसा न रागदोसो, जिणधम्मे अंतमुहु जहा अन्ने। नालिअरदीवमणुणो, मिच्छं जिणधम्मविवरीअं ॥
सोलसकसाय नव नो-कसाय दुविहं चरित्तमोहणिय। अण अप्पच्चक्खाणा, पच्चक्खाणा य संजलणा ॥
जाजीववरिसचउमा-सपक्खगा नरयतिरियनरअमरा। सम्माणुसव्वविरई-अहक्खायचरित्तघायकरा॥
जलरेणुपुढविपव्वय-राईसरिसो चउव्विहो कोहो। तिणिसलयाकट्ठट्ठिअ-सेलत्थंभोवमो माणो ॥ १९ ॥
मायाऽवलेहिगोमु-त्तिमिंढसिंगघणवंसिमूलसमा। लोहो हलिद्द-खंजण-कद्दमकिमिरागसामाणो ॥२०॥
जस्सुदया होइ जिए, हास रई अरइ सोग भय कुच्छा। सनिमित्तमन्नहा वा, तं इह हासाइमोहणिअं ॥
पुरिसित्थितदुभयं पइ, अहिलासो जव्वसा हवइ सो उ। थीनरनपुवेउदओ, फुंफुमतणनगरदाहसमो॥
सुरनरतिरिनिरयाऊ, हडिसरिसं नामकम्म चित्तिसमं। बायालतिनवइविहं, तिउत्तरसयं च सत्तट्ठी ॥

गइआइतणुउवंगा, बंधणसंघायणाणि संघयणा । संठाणवन्नगंधरसफासअणुपुव्विविहगगई ॥ २४ ॥
पिंडपयडित्ति चउदस, परघाउस्सासआयवुज्जोअं । अगुरुलहुतित्थनिमिणोवघायमिअ अट्ठ पत्तेआ २५
तसबायरपज्जत्तं, पत्तेयथिरं सुभं च सुभगं च । सुसराऽऽइज्जजसं तस-दसगं थावरदसं तु इमं ॥ २६ ॥
थावरसुहुमअपज्जं, साहारणअथिरअसुभदुभगाणि । दुस्सरणाइज्जाऽऽजस-मिअ नामे सेअरा वीसं॥२७
तसचउथिरछक्कं अथिर-छक्कसुहुमतिगथावरचउक्कं । सुभगतिगाइविभासा, तयाइसंखाहिं पयडीहिं ॥
वन्नचउ अगुरुलहुचउ, तसाइदुतिचउरछक्कमिच्चाइ । इअ अन्नावि विभासा तयाइसंखाहिं पयडीहिं ॥
गइआईण उ कमसो, चउपणपणतिपणपंचछछक्कं । पणदुगपणट्ठचउदुग, इअ उत्तरभेअपणसट्ठी॥३०॥
अडवीसजुआ तिनवइ, संते वा पनरबंधणे तिसयं । बंधणसंघायगहो, तणूसु सामन्नवन्नचऊ ॥ ३१ ॥
इअ सत्तट्ठी बंधो-दए अ न य सम्ममीसया बंधे । बंधुदए सत्ताए, वीसदुवीसट्ठवन्नसयं ॥ ३२ ॥
नरयतिरिनरसुरगई, इगबिअतिअचउपणिंदिजाईओ । ओरालविउव्वाहा-रतेअकम्मणपणसरीरा ॥३३॥
बाहूरुपिट्ठिसिरउर-उअरंगउवंगअंगुलीपमुहा । सेसा अंगोवंगा, पढमतणुतिगस्सुवंगाणि ॥ ३४ ॥
उरलाइपुग्गलाणं, निबद्धबज्झंतयाण संबंधं । जं कुणइ जउसमं तं, उरलाईबंधणं नेयं ॥ ३५ ॥

ज संघायइ उरला-इपुग्गले तणगण व दंताली । तं संघायं वंधण-मिव तणुनामेण पंचविहं ॥ ३६ ॥
उरालविउव्वाहा-रयाण सगतेअकम्मजुत्ताण । नववंधणाणि इअर-डुसहिआणं तिन्नि तेसिं च ॥३७॥
संघयणमट्ठिनिचओ, तं छद्धा वज्जरिसहनाराय । तह य रिसहनारायं, नारायं अद्धनाराय ॥ ३८ ॥
कीलिअ छेवट्ठं इह, रिसहो पट्टो अ कीलिआ वज्जं । उभओ मक्कडवंधो, नारायं इममुरालंगे ॥ ३९ ॥
समचउरंसं निग्गो-हसाइखुज्जाइ वामणं हुंडं । संठाणा वन्ना किण्ह-नीललोहियहलिद्दसिआ ॥४०॥
सुरहिडुरही रसा पण, तित्तकडुकसायअंबिलामहुरा ।
फासा गुरुलहुमिउखर-सीउण्हसिणिद्धरुक्खट्ठा ॥ ४१ ॥
नीलकसिणं डुगंधं, तित्तं कडुअं गुरु खरं रुक्खं । सीअं च असुहनवगं, इक्कारसगं सुभं सेसं ॥ ४२ ॥
चउहगइव्वणुपुव्वी, गइपुव्विडुगं तिगं निआउजुअं । पुव्वीउदओ वक्के, सुहअसुहवसुट्टविहगगई ॥ ४३ ॥
परघाउदया पाणी, परेसि वलिण पि होइ डुद्धरिसो । ऊससणलद्धिजुत्तो, हवेइ ऊसासनामवसा ॥४४॥
रविबिंबे उ जिअंग, तावजुअं आयवाउ न उ जलणे । जमुसिणफासस्स तहिं, लोहिअवन्नस्स उदउ त्ति
अणुसिणपयासरूवं, जिअंगमुज्जोअए इहुज्जोआ । जइ देवुत्तरविक्किअ-जोइसखज्जोअमाइ व ॥ ४६ ॥

अंगं न गुरु न लहुअं, जायइ जीवस्स अगुरुलहुउदया ।
तित्थेण तिहुअणस्स वि, पुज्जो से उदओ केवलिणो ॥ ४७ ॥

अंगोवंगनिअमिणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहारसमं । उवघाया उवहम्मइ, सतणुवयवलंबिगाईहिं ॥४८॥
बितिचउपणिंदिय तसा बायरओ बायरा जिआ थूला । निअनिअपज्जत्तिजुआ, पज्जत्ता लद्धिकरणेहिं ॥
पत्तेअतणू पत्ते-उदएणं दंतअट्ठिमाइ थिरं । नाभुवरि सिराइ सुहं, सुभगाओ सव्वजणइट्ठो ॥ ५० ॥
सुसरा महुरसुहज्झुणी, आइज्जा सव्वलोअगिज्झवओ । जसओ जसकित्तीओ, थावरदसगं विवज्जत्थं ॥५१॥
गोअं दुहुच्चनीअं, कुलाल इव सुघडभुंभलाईअं । विग्घं दाणे लाभे, भोगुवभोगेसु विरिए अ ॥५२॥
सिरिहरिअसमं एअं, जह पडिकूलेण तेण रायाई । न कुणइ दाणाईअं, एवं विग्घेण जीवो वि ॥५३॥
पडिणीअत्तणनिन्हव-उवघायपओसअंतराएणं । अच्चाऽऽसायणयाए, आवरणदुगं जिओ जयई ॥ ५४ ॥
गुरुभत्तिखंतिकरुणा-वयजोगकसायविजयदाणजुओ । दढधम्माई अज्जइ, सायमसायं विवज्जयओ ॥५५॥
उम्मग्गदेसणाम-ग्गनासणादेवदव्वहरणेहिं । दंसणमोहं जिणमुणि-चेइअसंघाइपडिणीओ ॥ ५६ ॥
दुविहं पि चरणमोहं, कसायहासाइविसयविवसमणो । बंधइ नरयाउ महा-रंभपरिग्गहरओ रुद्दो॥५७॥

तिरिआउ गूढहिअउं, सढो ससल्लो तहा मणुस्साउ, । पयईइ तणुकसाउं, दाणरुई मज्झिमगुणो अ ॥
अविरयमाइ सुराउ, बालतवोऽकामनिज्जरो जयइ। सरलो अगारविल्लो, सुहनामं अन्नहा असुहं ॥५९॥
गुणपेही मयरहिउं, अज्झयणज्झावणारुई निच्च । पकुणइ जिणाइभत्तो, उच्चं नीअं इअरहा उ ॥६०॥
जिणपूआविग्घकरो, हिंसाइपरायणो जयइ विग्घ। इअ कम्मविवागोय, लिहिउं देविंदसूरीहिं ॥६१॥

[इति कर्मविपाकनामा प्रथम कर्मग्रंथः समाप्त]

[अथ श्रीमद्देवेन्द्रसूरिविरचितकर्मस्तवाख्यो द्वितीयकर्मग्रंथः]

तह थुणिमो वीरजिणं, जह गुणठाणेसु सयलकम्माइं। बंधुदउदीरणयासत्तापत्ताणि खविआणि ॥ १॥
मिच्छे सासण मीसे, अविरय देसे पमत्त अपमत्ते ।
निअट्टि अनिअट्टि सुहु-मुवसम खीण सजोगि अजोगि गुणा ॥ २ ॥
अभिनवकम्मग्गहणं, बंधो ओहेण तत्थ वीससय। तित्थयराऽऽहारगदुग-वज्ज मिच्छंमि सतरसयं ॥३॥
नरयतिग जाइथावर-चउ हुंडाऽऽयवछिवट्ठनपुमिच्छं ।
सोलंतो इगहिअ सय, सासणि तिरिथीणदुहगतिगं ॥ ४ ॥

अणमज्झागिइसंघय-णचउ निउज्जोअ कुखगइत्थि त्ति। पणवीसंतो मीसे, चउसयरि दुआउअअबंधा
सम्मे सगसयरि जिणा-उबंधि वइरनरतिअ बिअकसाया। उरलदुगंतो देसे, सत्तट्ठी तियकसायंतो॥६॥
तेवट्ठि पमत्ते सोग अरइ अथिरदुग अजस अस्सायं। वुच्छिज्ज छच्च सत्त व, नेइ सुराउं जया निठं॥७॥
गुणसठि अप्पमत्ते, सुराउबंधंतु जइ इहाऽऽगच्छे। अन्नह अठावन्ना, जं आहारगदुगं बंधे॥८॥
अडवन्न अपुव्वाइंमि, निद्ददुगंतो छपन्न पणभागे। सुरदुगपणिंदिसुखगइ-तसनवउरल विणु तणुवंगा॥९॥
समचउरनिमिणजिणवन्न-अगुरुलहु चउ छलंसि तीसंतो। चरमे छवीसबंधो, हासरईकुच्छभयभेओ॥१०॥
अनिअट्टि भागपणगे, इगेगहीणो दुवीसविहबंधो। पुमसंजलणचउण्हं, कमेण छेओ सतर सुहुमे॥११॥
चउदंसणुच्चजसना-णविग्घदसगं ति सोलसुच्छेओ।
तिसु सायबंध छेओ, सजोगिबंधंतु णंतो अ॥१२॥ [बंधो सम्मत्तो] ॥१॥
उदओ विवागवेअण-मुदीरणमपत्ति इह दुवीससयं। सतरसयं मिच्छे मी-ससम्मआहारजिणणुदया॥
सुहुमतिगाऽऽयवमिच्छं, मिच्छंतं सासणे इगारसयं। निरयाणुपुव्विणुदया, अणथावरइग विगलअंतो॥१४
मीसे सयमणुपुव्वी-णुदया मीसोदएण मीसंतो। चउसयमजए सम्मा-णुपुव्विखेवा बिअकसाया॥१५॥

मणुतिरिणुपुव्वि विउव्व-ट्ठ दुहग अणाइज्जदुग सतरछेओ ।
सगसीइ देसि तिरिगइ-आउनिउज्जोअ तिकसाया ॥ १६ ॥

अट्ठच्छेओ इगसी, पमत्ति आहारजुअलपक्खेवा । थीणतिगाऽऽहारगदुग-छेओ छस्सयरि अपमत्ते ॥१७॥
संमत्ततिमसंघय-णतिअगछेओ बिसत्तरि अपुव्वे । हासाइछक्कअंतो, छसट्ठि अनिअट्टि वेअतिगं ॥ १८ ॥
संजलणतिग छछेओ, सट्ठी सुहुमंमि तुरिअलोभंतो । उवसंतगुणे गुणसट्ठि रिसहनारायदुगअंतो १९

सगवन्न खीणदुचरिमि, निद्ददुगंतो अचरिमि पणवन्ना ।
नाणंतरायदंसण-चउ छेओ सजोगि बायाला ॥ २० ॥

तित्थुदया उरलाथिर-खगइदुग परित्ततिग छ संठाणा ।
अगुरुलहुवन्नचउ निमि-णतेअकम्माइसंघयणं ॥ २१ ॥

दूसर सूसर सायाऽ-साएगयरं च तीस वुच्छेओ । बारस अजोगि सुभगाऽऽइज्जजसन्नयरवेअणिअं ॥ २२ ॥

तसतिग पणिदि मणुआउ-गइजिणुच्च ति चरमसमयंतो । [इति उदयाधिकार.]
उदउव्वुदीरणा पर-मपमत्ताइसगगुणेसु ॥ २३ ॥

एसा पयडीतिगूणा, वेअणियाऽऽहारजुअल थीणतिगं ।
मणुआउ पमत्तंता, अजोगि अणुदीरगो भगवं ॥२४॥[इति उदीरणाधिकारः]

सत्ता कम्माण ठिई, बंधाइलद्धअत्तलाभाणं । संते अडयालसयं, जा उवसमु विजिणु बिअतइए ॥२५॥

अपुव्वाइचउक्के, अणतिरिनिरयाउ विणु बिआलसयं । सम्माइचउसु सत्तग-खयंमि इगचत्तसयमहवा ॥

खवगं तु पप्प चउसु वि, पणयालं निरयतिरिसुराउ विणा ।
सत्तग विणु अडतीसं, जा अनिअट्टीपढमभागो ॥ २७ ॥

थावरतिरिनिरयायव-दुग थीणतिगेग विगल साहारं ।
सोलखओ दुवीससयं, बिअंसि बिअतिअकसायंतो ॥ २८ ॥

तइआइसु चउदसतेरबारछपणचउतिहिअसयकमसो ।
नपुइत्थिहासछगपुं-सतुरिअकोहमयमायखओ ॥ २९ ॥

सुहुमि दुसय लोहंतो, खीणदुचरिमेगसय दुनिद्दखओ। नवनवइ चरमसमए, चउदंसणनाणविग्घंतो ॥

पणसीइ सजोगि अजो-गि दुचरिमे देवखगइगंधदुगं। फासट्ठ वन्नरसतणु-बंधणसंघायपणनिमिणं ३१

संघयणअथिरसंठाण-छक्कअगुरुलहुचउ अपज्जत्तं। सायं व असायं वा, परित्तुवंग तिगसुसरनिअं ॥३३॥
बिसयरि खओ अ चरिमे, तेरस मणुअतसतिग जसाइज्ज। सुभगं जिणुच्चं पणिदिअ-सायासाएगयरछेओ ॥
नरअणुपुवि विणा वा, बारस चरिमसमयंमि जो खविउ। पत्तो सिद्धिं देविं-दवंदियं नमह तं वीरं ॥३४॥

[इति सत्ताधिकारः। समाप्तोऽयं कर्मस्तवाख्यो द्वितीयकर्मग्रंथः]

[अथ श्रीदेवेन्द्रसूरिकृतबंधस्वामित्वाख्यः तृतीयकर्मग्रंथः]

बंधविहाणविमुक्कं, वंदिअ सिरिवद्धमाणजिणचंदं। गइआईसुं वुच्छं, समासओ बंधसामित्तं ॥ १ ॥

जिणसुरविउवाऽऽहारदु, देवाउ अ नरयसुहुमविगलतिगं।
एगिंदियावराऽऽयव-नपुमिच्छं हुंड छेवट्ठं ॥ २ ॥
अण मज्झागिइसंघय-ण कुखगइनिअ इत्थि दुहगथीणतिगं।
उज्जोअ तिरिदुगं तिरि-नराउ नरउरलदुगरिसहं ॥ ३ ॥

[इति संकेतार्थ उपयोगि प्रकृतियोंका दो गाथाओंमें संग्रह ।]

---

* गइ इंदिए य काए, जोए वेए कसाय नाणे य। संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ यह गाथा चौथा कर्मग्रंथकी है, इस गाथामें गत्यादिमार्गणाओंके मूल १४ भेद उत्तर ६२ भेद हैं।

सुरइगुणवीसवज्जं, इग[१०१]सउ ओहेण बंधहिं निरया[१] ।
तित्थविणा मिच्छि[१] सयं[१००], सासणि[२] नपुचउ[४] विणा छनुई[९६] ॥ ४ ॥
विणु अणछवीस[२६] मीसे[३], बिसयरि[७२] सम्मंमि[४] जिणनराउजुआ[२] ।
इअ रयणाइसु भंगो, पंकाइसु तित्थयरहीणो ॥ ५ ॥
अजिणमणुआउ ओहे[९९], सत्तमिए नरदुग[२] उच्च[३] विणु मिच्छे[१]। इगनवई[९१] सासाणे[२], तिरिआउ[१] नपुंसचउवज्जं[५] ॥
अणचउवीसविरहिया, सनरदुग[२] उच्चा[३] य सयरि[७०] मीसदुगे[३-४] ।
सतरसउ[११७] ओहि मिच्छे[१], पज्जतिरिआ[२] विणु जिणाहारं[३] ॥ ७ ॥
[इति नरकगतिका बंधस्वामित्व चार गाथाओंसे]
विणु[१०१] निरयसोल सासणि[२], सुराउअणएगतीस विणु[६९] मीसे[३] ।
ससुराउ सयरि[७०] सम्मे[४], बीअकसाए विणा[६६] देसे[५] ॥ ८ ॥ [इति पर्याप्ततिर्यंचका बंधस्वामित्व]
इअ चउगुणेसु वि नरा[३], परमजया सजिण[७१] ओहु देसाई। जिणइक्कारसहीणं, नवसयं[१०९] अपजत्ततिरिअनरा ॥
[इति मनुष्यगतिका बंधस्वामित्व,]

निरय व सुरा नवरं, ओहे मिच्छे इगिंदितिगसहिआ। कप्पदुगे वि अ एवं, जिणहीणो जोइभवणवणे ॥
रयणु व सणकुमारा-इ आणयाई उज्जोअचउ रहिआ। [इति देवगतिका बंधस्वामित्व]

अपज्जतिरिअ व नवसय-मिगिदिपुढविजलतरुविगले ॥ ११ ॥
छनवइ सासणि विणु सुहु-मतेर केइ पुण विति चउनवइं।
तिरिअनराऊहि विणा, तणुपज्जत्ति न जति जओ ॥ १२ ॥
ओहु पणिंदितसे गई-तसे जिणिक्कार नरतिगुच्च विणा। मणवयजोगे ओहो, उरले नरभंगु तम्मिस्से॥१३॥

आहारछग विणोहे, चउदससउ मिच्छि जिणपणगहीणं।
सासणि चउनवइ विणा, नरतिरिआऊ सुहुमतेर ॥ १४ ॥
अणचउवीसाइ विणा, जिणपणजुअ सम्मि जोगिणो साय।
विणु तिरिनराउ कम्मे, वि एवमाहारदुगि ओहो ॥ १५ ॥
सुरओहो वेउव्वे, तिरिअनराउरहिओ अ तम्मिस्से। वेअतिगाइमबिअतिअ-कसाय नव दु चउ पंच गुणा॥

संजलणतिगे नव दस, [25]लोभे चउ [26]अजइ दु ति [29]अनाणतिगे ।
बारस [30]अचक्खु[31]चक्खुसु, पढमा [32]अहखाय चरिमचउ ॥ १७ ॥
[33]मणनाणि सग जयाई, [34]समइअ[35]छेअ चउ दुन्नि [36]परिहारे ।
[38]केवलदुगि दो चरमाऽजयाइ नव [39]मइ[40]सुअ[42]ओहिदुगे ॥ १८ ॥
अड [43]उवसमि चउ [44]वेअगि, [45]खइए इक्कार [48]मिच्छतिगि देसे[49] ।
[50]सुहुमि सठाणं तेरस, [51]आहारगि निअनिअगुणोहो ॥ १९ ॥

परमुवसमि वट्टंता, आउ न बंधंति तेण अजयगुणे । देवमणुआउहीणो, देसाइसु पुण सुराउ विणा ॥ २० ॥
ओहे अट्ठारसयं[118], आहारदुगूणमाइलेस[54]तिगे । तं तित्थोणं मिच्छे, साणाइसु सव्वहिं ओहो ॥ २१ ॥

तेउ[55] नरयनवूणा, उज्जोअचउ निरयबार विणु सुक्का[56] ।
विणु नरयबार पम्हा[57], अजिणाहारा इमा मिच्छे ॥ २२ ॥
सव्वगुण [58]भव्वसन्निसु[59], ओहु [60]अभव्वा [61]असन्नि मिच्छसमा ।
सासणि असन्नि सन्निव, कम्मणभंगो [62]अणाहारे ॥ २३ ॥

तिसु दुसु सुक्काऽइगुणा, चउ सग तेर त्ति बंधसामित्तं। देविंदसूरिलिहिअ, नेयं कम्मत्थयं सोउं ॥ २४ ॥

[इति बधस्वामित्वाख्यस्तृतीय कर्मग्रंथ]

[अथ श्रीदेवेन्द्रसूरिविरचितषडशीतिनामां चतुर्थः कर्मग्रंथः]

नमिअ जिणं जिअमग्गण-गुणठाणुवओगजोगलेसाओ। बंधप्पबहू भावे, संखिज्जाई किमवि वुच्छं॥ १ ॥

[प्रथम जीवस्थानाधिकार,]

इह सुहुमबायरेगिं-दि बितिचउअसन्निसन्निपंचिंदी। अपजत्ता पजत्ता, कमेण चउदस जिअठाणा ॥२॥

[(१)–जीवस्थानोंमें गुणस्थान]

नमिअ जिण वत्तवा, चउदसजिअठाणएसु गुणठाणा । जोगुवओगो लेसा, बंधुदउदीरणा सत्ता ॥ १ ॥ तह मूल-चउदमग्गण-ठाणेसु बासट्ठिउत्तरसुं च । जियगुणजोगुवओगा, लेसप्पबहुं च छठाणा ॥ २ ॥ चउदसगुणेसु जिअजो-गुवओगलेसा य बंधहेक य । बधाइचउ अप्पा–बहुं च तो भाव संखाई ॥ ३ ॥ * इस ग्रथमें ८६ गाथाएं ग्रंथकर्ताने रचि हुई होनेसे षडशीतिनाम रखनेमें आयाहै, और ऊपर लिखी तीन गाथाएं प्रक्षेप होनेसे जुदी नोटमें दी हैं।

बायरअसन्निविगले, अपज्जि पढमबिअ सन्नि अपजत्ते। अजयजुअ सन्निपज्जे, सव्वगुणा मिच्छ सेसेसु॥३॥

[(२)-जीवस्थानोंमें योग दो गाथाओंसे]

अपजत्तछक्कि कम्मुर-लमीसजोगा अपज्जसन्नीसु। ते सविउव्वमीस-एसु तणुपज्जेसु उरलमन्ने ॥ ४ ॥
सव्वे सन्निपजत्ते, उरलं सुहुमे सभासु तं चउसु। बायरि सविउव्विडुगं, पजसन्निसु बार उवओगा ॥ ५ ॥

[(३)-जीवस्थानोंमें उपयोग,]

पजचउरिंदिअसन्निसु, डुदंस डुअनाण दससु चक्खुविणा।
सन्निअपज्जे मणना-ण चक्खुकेवलडुगविहूणा ॥ ६ ॥

[(४-८)-जीवस्थानोंमें लेश्या-बंध-उदय-उदीरण-सत्ता, दो गाथाओंसे,]

सन्निडुगि छलेस अप-ज्जबायरे पढमचउ ति सेसेसु।
सत्तट्ठ बंधुदीरण, संतुदया अट्ठ तेरससु ॥ ७ ॥
सत्तट्ठछेगबंधा, संतुदया सत्तअट्ठचत्तारि। सत्तट्ठछपंचडुगं, उदीरणा सन्निपजत्ते ॥ ८ ॥

[इति जीवस्थानाऽधिकार। अथ मार्गणास्थानाधिकार, प्रथम मार्गणाके मूल भेद,]

गई-इंदिए अ कॅाए, जोएँ वेएँ कसाय-नाणेसु । संजम-दंसण-लेसा-भव-सम्मे सन्नि-आहारे ॥ ए ॥

[मार्गणास्थानोंके अवान्तर (विशेष) भेद, चार गाथाओंसे]

सुरनरतिरिनिरयगई, इगबिअतिअचउपणिंदि छक्काया ।
भूजलजलणाऽनिलवण-तसा य मणवयणतणुजोगा ॥ १० ॥

वेअनरित्थिनपुंसा, कसाय कोहमयमायलोभ त्ति । मइसुअवहिमणकेवल विभंगमइसुअनाणसागारा

सामाइअछेअपरिहा-रसुहुमअहखायदेसजयअजया । चक्खुअचक्खू ओही-केवलदंसण अणागारा॥१२॥

किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्क भव्विअरा । वेअगखइगुवसममि-च्छ मीस सासाण सन्निअरे॥१३॥

[(१)-मार्गणाओंमें जीवस्थान, पाच गाथाओंसे,]

आहारेअर भेआ, सुरनिरयविभंगमइसुओहिदुगे । सम्मत्ततिगे पम्हा-सुक्कासन्निसु सन्निदुगं ॥ १४ ॥

तमसन्निअपज्जजुअं, नरे सबायरअपज्ज तेऊए । थावर इगिंदि पढमा-चउ बार असन्नि दु दु विगले॥१५॥

दस चरम तसे अजयाऽऽ-हारगतिरितणुकसायदुअनाणे ।
पढमतिलेसाभविअर-अचक्खुनपुमिच्छि सव्वे वि ॥ १६ ॥

पजसन्नी केवलदुग-संजममणनाणदेसमणमीसे। पण चरमपज्ज वयणे, तिय छ व पज्जिअर चक्खुम्मि ॥
थीनरपणिंदि चरमा-चउ अणहारे दुसन्नि छ अपज्जा। ते सुहुमअपज्ज विणा, सासणि इत्तो गुणे वुच्छं॥१८॥

[(२)-मार्गणाओंमें गुणस्थान, पांच गाथाओंसे]

पण तिरि चउ सुरनिरए, नरसन्निपणिंदिभवतसि सव्वे ।
इगविगलभूदगवणे, दु दु एगं गइतसअभव्वे ॥ १९ ॥
वेअतिकसाय नव दस, लोभे चउ अजय दु ति अनाणतिगे ।
बारस अचक्खुचक्खुसु, पढमा अहखाय चरम चऊ ॥ २० ॥
मणनाणि सग जयाई, समइअछेअ चउ दुन्नि परिहारे ।
केवलदुगि दो चरमा, जयाइ नव मइसुओहिदुगे ॥ २१ ॥

अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिच्छतिगि देसे। सुहुमे य सठाणं ते-र जोगआहारसुक्काए ॥२२॥
अस्सन्निसु पढमदुगं, पढमतिलेसासु छच्च दुसु सत्त। पढमंतिमदुगअजया, अणहारे मग्गणासु गुणा॥

[(३)-मार्गणाओंमें योग, छह गाथाओंसे]

सच्चेअरमीसअस-च्चमोसमणवइविउव्विआहारा। उरलं मीसा कम्मण, इअ जोगा कम्ममणहारे ॥ २४ ॥
नरगइपणिंदितसतणु-अचक्खुनरनपुकसायसम्मदुगे । संन्निछलेसाहारग-भवमइसुअओहिदुगि सव्वे
तिरिइत्थिअजयसासण-अनाणउवसमअभव्वमिच्छेसु । तेराऽहारदुगूणा, ते उरलदुगूण सुरनरए ॥२६

कम्मुरलदुगं थावरि, ते सविउव्विदुग पंच इगि पवणे ।
छ असन्नि चरमवइजुअ, ते विउवदुगूण चउ विगले ॥ २७ ॥
कम्मुरलमीस विणु मण-वयसमइअछेअचक्खुमणनाणे ।
उरलदुगकम्मपढम-तिममणवइ केवलदुगमि ॥ २८ ॥
मणवइउरला परिहा-रि सुहुमि नव ते उ मीसि सविउव्वा ।
देसे सविउव्विदुगा, सकम्मुरलमीस अहखाए ॥ २९ ॥

[(४)-मार्गणाओंमें उपयोग, छह गाथाओंसे]

तिअनाण नाण पण चउ, दंसण बार जिअलक्खणुवओगा ।
विणु मणनाणदुकेवल, नव सुरतिरिनिरयअजएसु ॥ ३० ॥

तसंजोअवेअसुक्काऽऽ-हारनरपणिंदिसन्निजवि सव्वे । नयणेअरपणलेसा-कसाइ दस केवलदुगूणा ॥३१॥

चउरिंदिअसन्नि दुअना-ण दुदंसण इगबितिथावरि अचक्खु ।

तिअनाण दंसणदुगं, अनाणतिगि अभवि मिच्छदुगे ॥ ३२ ॥

केवलदुगे निअदुगं, नव तिअनाण विणु खइअअहखाए ।

दंसण नाणतिगं दे-सि मीसि अन्नाणमीसं तं ॥ ३ ॥

मणनाणचक्खुवज्जा, अणहारि तिन्नि दंसण चउ नाणा । चउनाणसंजमोवस-मवेअगे ओहिदंसे अ ॥

दो तेर तेर बारस, मणे कमा अठ दु चउ चउ वयणे । चउ दु पण तिन्नि काए, जिअगुणजोगोवओगन्ने ॥

[(५)—मार्गणाओंमें लेश्या,]

छसु लेसासु सठाणं, एगिंदिअसन्निभूदगवणेसु । पढमा चउरो तिन्नि उ, नारयविगलग्गिपवणेसु ॥३६॥

अहखायसुहुमकेवल-दुगि सुक्का छावि सेसठाणेसु ।

[(६)—मार्गणाओंका अल्प–बहुत्व, आठ गाथाओंसे]

नरनिरयदेवतिरिआ, थोवा दु असंखणंतगुणा ॥ ३७ ॥

पणचउतिडुएगिंदी, थोवा तिन्नि अहिआ अणंतगुणा ।
तस थोव असंखग्गी, भूजलनिल अहिअ वण णंता ॥ ३० ॥
मणवयणकायजोगा, थोवा असंखगुण अणंतगुणा । पुरिसा थोवा इत्थी, संखगुणाणंतगुण कीवा ॥३९॥
माणी कोही माई, लोभी अहिअ मणनाणिणो थोवा ।
उहि असंखा मइसुअ, अहियसम असंख विब्भंगा ॥ ४० ॥
केवलिणोऽणंतगुणा, मइसुअअन्नाणि णतगुण तुल्ला । सुहुमा थोवा परिहा-र संख अहखाय संखगुणा४१
छेयसमईअ संखा, देस असंखगुण णतगुण अजया । थोवअसंखदुणता, उहिनयणकेवलअचक्खू ॥ ४२ ॥
पच्छाणुपुव्विलेसा, थोवा दो संख णंत दो अहिआ। अभविअर थोव णता, सासण थोवोवसम संखा॥४३
मीसा संखा वेअग, असंखगुण खइअमिच्छ दु अणंता। सन्निअर थोव णंताऽणहार थोवेअर असंखा॥
[(३) गुणस्थानाधिकार। (१) गुणस्थानोंमें जीवस्थान,]
सव जिअठाण मिच्छे, सग सासणि पण अपज्ज सन्निदुगं। सम्मे सन्नी दुविहो, सेसेसुं सन्निपज्जत्तो ॥४५
[(२)-गुणस्थानोंमें योग, दो गाथाओंसे]

मिच्छदुगि अजइ जोगाऽऽ-हारदुगूणा अपुव्वपणगे उ। मणवइ उरलं सविउव्व मीसि सविउव्वदुग देसे॥
साहारदुग पमत्ते, ते विउवाहारमीस विणु इअरे। कम्मुरलदुगंताइम-मणवयण सयोगि न अजोगि॥४७

[(३)–गुणस्थानों में उपयोग]

तिअनाणदुदंसाइम-दुगे अजइ देसि नाणदंसतिगं। ते मीसि मीसा समणा, जयाइ केवलदु अंतदुगे ४८
सासणभावे नाणं, विउव्वगाहारगे उरलमिस्सं। नेगिंदिसु सासाणो, नेहाहिगयं सुअमयं पि॥ ४९॥

[(४–५) गुणस्थानों में लेश्या तथा बंधहेतु]

छसु सव्वा तेउतिगं, इगि छसु सुक्का अयोगि अल्लेसा।
बंधस्स मिच्छ[1] अविरइ[2], कसाय[3] जोग[4] त्ति चउ हेऊ॥ ५०॥

[बंधहेतुओंके उत्तरभेद तथा गुणस्थानों में मूल बंधहेतु दो गाथाओंसे,]

अभिगहिअ[1]मणभिगहिआ[2]-भिनिवेसिअ[3]संसइअ[4]मणाभोगं।
पणमिच्छ बारअविरइ, मणकरणानिअमु छजिअवहो॥ ५१॥
नव सोल कसाया पन-र जोग इअ उत्तरा उ सगवन्ना। इगचउपणतिगुणेसु, चउतिदुइगपच्चओ बंधो ५२

[एक सौ बीस प्रकृतियोंके यथासम्भव मूलबंध हेतु,]

नउ मिच्छ मिच्छअविरइ-पच्चइआ साय सोल पणतीसा। जोग विणु तिपच्चइआऽऽहारग जिणवज्ज सेसाउ

[गुणस्थानोंमें उत्तर बंध-हेतुओंका सामान्य तथा विशेषवर्णन, पांच गाथाओंसे ।]

पणपन्न पन्न तिअछहि-अचत्त गुणचत्त छ चउ दुगवीसा ।
सोलस दस नव नव सत्त हेउणो न उ अजोगिम्मि ॥ ५४ ॥
पणपन्न मिच्छि हारग-दुगूण सासाणि पन्न मिच्छविणा ।
मिस्सदुगकम्मअण विणु, तिचत्त मीसे अह छचत्ता ॥ ५५ ॥
सदुमिस्सकम्म अजए, अविरइकम्मुरलमीसविकसाए। मुत्तु गुणचत्त देसे, छवीस साहारदु पमत्ते॥५६
अविरइइगारतिकसा-यवज्ज अपमत्ति मीसदुगरहिआ ।
चउवीस अपुव्वे पुण, दुवीस अविउव्वियाहारा ॥ ५७ ॥
अछहास सोल बायरि, सुहुमे दस वेअसंजलणति विणा ।
खीणुवसंति अलोभा, सजोगि पुव्वुत्तसगजोगा ॥ ५८ ॥

[(६)–गुणस्थानोंमें मूलप्रकृतिबंध ।]

अपमत्तंता सत्त-ट्ठ मीसअपुव्वबायरा सत्त । बंधइ छस्सुहुमो ए-गमुवरिमाऽबंधगाऽजोगी ॥ ५९ ॥

[(७–८) गुणस्थानोंमें सत्ता तथा उदय ।]

आसुहुमं संतुदए, अट्ठ वि मोह विणु सत्त खीणंमि। चउ चरिमदुगे अट्ठ उ, संते उवसंति सत्तुदए॥६०॥

[(९) गुणस्थानोंमें मूलप्रकृतिकी उदीरणा,]

उइरंति पमत्तंता, सगट्ठ मीसट्ठ वेअआउ विणा। छग अपमत्ताइ तओ, छ पंच सुहुमो पणुवसंतो ॥ ६१ ॥

[(१०) गुणस्थानोंमें अल्प–बहुत्व, दो गाथाओंसे ।]

पण दो खीण दु जोगी,णुदीरगु अजोगि थोव उवसंता ।
संखगुण खीण सुहुमाऽ-निअट्टिअपुव्व सम अहिआ ॥ ६२ ॥

जोगिअपमत्तइयरे, संखगुणा देससासणामीसा। अविरय अजोगि मिच्छा, असंख चउरो दुवे णंता ६३

[छह भाव और उनके भेद, पांच गाथाओंसे ।]

उवसम[1]खय[2]मीसो[3]दय[4]-परिणामा[5] दुनवट्ठारइगवीसा। तिअभेअ सन्निवाइअ[6], सम्मं चरणं पढमभावे ॥६४

वीए केवलजुअलं, सम्मं दाणाइलद्धि पण चरणं। तइए सेसुवओगा, पण लद्धी सम्मविरइदुगं ॥ ६५ ॥
अन्नाणमसिद्धत्ताऽ-संजमलेसाकसायगइवेआ। मिच्छं तुरिए भवाऽ-भवत्तजिअत्त परिणामे ॥ ६६ ॥

चउ चउगईसु मीसग-परिणामुदएहिं चउ सखइएहिं।
उवसमजुएहिं वा चउ, केवलि परिणामुदयखइए ॥ ६७ ॥

खयपरिणामे सिद्धा, नराण पणजोगुवसमसेढीए। इअ पनर संनिवाइअ-भेआ वीसं असंभविणो ॥६८॥

[कर्मके और धर्मास्तिकाय आदि अजीवद्रव्योंके भाव]

मोहेव समो मीसो, चउघाइसु अठकम्मसु अ सेसा। धम्माइ पारिणामिअ-भावे खंधा उदइए वि ॥६९

[(११)-गुणस्थानोंमें मूलभाव, एक जीवकी अपेक्षासे]

सम्माइचउसु तिग चउ, भावा चउ पणुवसामगुवसंते। चउखीणापुवे ति-न्नि सेसगुणठाणगेगजिए ७०

[(१२)-सख्यातादिका विचार, सोलह गाथाओंसे।]

संखिज्जेगमसंखं, परित्तजुत्तनिअपयजुअं तिविहं। एवमणंतं पि तिहा, जहन्नमज्झुकसा सवे ॥ ७१ ॥

[सख्यातके तीन भेदोंका स्वरूप,]

लहु संखिज्जं दुच्चिअ, अउ परं मज्झिमं तु जा गुरुअं । जंबूदीवपमाणय-चउपल्लपरूवणाइ इमं ॥ ७३ ॥

[पल्योंके नाम तथा प्रमाण,]

पल्लाणवट्ठिअसला-गपडिसलागमहासलागक्खा । जोअणसहसोगाढा, सवेइअंता ससिहभरिआ ॥७२

[पल्योंके भरने आदिका विधि,]

ता दीवुदहिसु इक्कि-क्कसरिसवं खिविअ निट्ठिए पढमे । पढमं व तदंतं चिअ, पुण भरिए तंमि तह खीणे॥
खिप्पइ सलागपल्ले-गु सरिसवो इय सलागखवणेणं । पुन्नो बीउ अ तउ, पुव्वं पि व तंमि उद्धरिए ॥ ७५ ॥
खीणे सलाग तइए, एवं पढमेहिं बीअयं भरसु । तेहिं तइअं तेहि अ, तुरिअं जा किर फुडा चउरो ॥७६॥

[सर्षप–परिपूर्णपल्योंका उपयोग,]

पढमतिपल्लुद्धरिआ, दीवुदही पल्लचउसरिसवा य । सव्वो वि एगरासी, रूवूणो परमसंखिज्जं ॥ ७७ ॥

[असंख्यात और अनंतका स्वरूप दो गाथाओंसे,]

रूवजुअं तु परित्ताऽ-संखं लहु अस्स रासिअब्भासे । जुत्ताऽसंखिज्जं लहु, आवलिआसमयपरिमाणं॥७८॥
बितिचउपंचमगुणणे, कमा सगाऽसंख पढमचउसत्ता । णंता ते रूवजुआ, मज्झा रूवूण गुरु पच्छा ॥७९

[असंख्यात तथा अनन्तके भेदोंके विषयमें कार्मग्रथिक मत,]

इय सुत्तुत्तं अन्ने, वग्गिअमिक्कसि चउत्थयमसंखं, । होइ असंखासंखं,लहु रूवजुअं तु तं मज्झ ॥ ८० ॥
रूवूणमाइमं गुरु, तिवग्गिउं तत्थिमे दसक्खेवे । लोगागासपएसा, धम्माऽधम्मेगजिअदेसा ॥ ८१ ॥
ठिइबंधज्झवसाया, अणुभागा जोगछेअपलिभागा । दुण्ह य समाण समया, पत्तेअनिगोअए खिवसु॥
पुणरवि तंमि तिवग्गिअ, परित्तणंत लहु तस्स रासीण । अब्भासे लहु जुत्ताऽणतं अभवजिअमाणं ॥८३॥
तव्वग्गे पुण जायइ, णंताऽणंत लहु तं च तिक्खुत्तो । वग्गसु तह वि न तं हो-इ णंतखेवे खिवसु छ इमे॥८४॥
सिद्धा निगोअजीवा, वणस्सई कालं पुग्गला चेव । सव्वमलोगनहं पुण, तिवग्गिउ केवलदुगंमि ॥ ८५ ॥
खित्तेऽणताणंतं, हवेइ जिट्ठ तु ववहरइ मज्झं । इय सुहुमत्थविआरो, लिहिओ देविंदसूरीहिं ॥ ८६ ॥

[इति षडशीतिकाख्यश्चतुर्थ कर्मग्रथ ।]

[अथ श्रीदेवेन्द्रसूरिविरचितशतकनामा पंचमः कर्मग्रंथः]

नमिअ जिणं धुवबंधो-दयसत्ताघाइपुन्नपरिअत्ता । सेअर चउह विवागा, वुच्छं बंधविहं सामी अ ॥ १ ॥

[(१)–ध्रुवबंधिप्रकृतियोंकी संख्या,]

वन्नचउतेअकम्मा-गुरुलहु निमिणोवघायभयकुच्छा। मिच्छकसायाऽऽवरणा, विग्घं धुवबंधि सगचत्ता॥२

[(२)–अध्रुवबंधिप्रकृतियोंकी संख्या तथा ध्रुवबंधि-अध्रुवबंधि-ध्रुवउदय-अध्रुवउदय-प्रकृतियोंके बंध-उदयको लेकर चार भंग, दो गाथाओंसे]

तणुवंगाऽऽगिइसंघयण-जाइगइखगइपुव्विजिणुसासं । उज्जोआयवपरघा-तसवीसा गोअवेयणियं ॥ ३ ॥

हासाइजुअलदुगवेअआउ तेवुत्तरी अधुवबंधी । भंगा अणाइसाई, अणंतसंतुत्तरा चउरो ॥ ४ ॥

[ध्रुवबंधिआदिप्रकृतियोंमें भंग अवतार ।]

पढमबिआ धुवउदइसु, धुवबंधिसु तइअवज्जभंगतिगं ।

मिच्छंमि तिन्नि भंगा, दुहा वि अधुवा तुरिअभंगा ॥ ५ ॥

[(३–४)–ध्रुवाध्रुवोदय प्रकृतियोंकी संख्या दो गाथाओंसे]

निमिणथिरअथिरअगुरुअ-सुहअसुहं तेअकम्मचउवन्ना। नाणंतरायदंसण-मिच्छं धुवउदय सगवीसा॥

थिरसुभिअर विणु अधुव-बंधी मिच्छ विणु मोहधुवबंधी। निद्दोवघायमीसं, सम्मं पणनवइ अधुवुदया॥७

[(५-६)-ध्रुवाध्रुवसत्ता-प्रकृतियोंकी सख्या दो गाथाओंसे ।]

तसवन्नवीससगते-अकम्म ध्रुवबंधिसेस वेयतिगं । आगिइतिग वेअणिअ, उजुअल सगउरल सासचउ

खगईतिरिदुगनीअं, ध्रुवसंता सम्ममीसमणुअदुग । विउविकार जिणाउ, हारसगुचा अध्रुवसंता ॥९॥

[गुणस्थानोंमें कितनीक प्रकृतियोंकी ध्रुवसत्ता, और अध्रुवसत्ता, तीन गाथाओंसे]

पढमतिगुणेसु मिच्छं, निअमा अजयाइअठगे भज्जं । सासाणे खलु सम्मं, संतं मिच्छाइदसगे वा ॥१०॥

सासणमीसेसु ध्रुवं, मीसं मिछाइनवसु भयणाए । आइदुगे अण नियमा, भइआ मीसाइनवगम्मि ॥११

आहारसत्तगं वा, सवगुणे वितिगुणे विणा तित्थ । नोभयसंते मिछो, अंतमुहुत्तं भवे तित्थे ॥ १२ ॥

[(७-८)-देशघाति-सर्वघाति-प्रकृतियोंकी सख्या दो गाथाओंसे ।]

केवलजुअलावरणा, पण निद्दा बारसाइमकसाया । मिच्छं ति सवघाई, चउनाणतिदंसणावरणा ॥१३॥

सजलण नोकसाया, विग्घं इअ देसघाइअ अघाई । पत्तेअतणुठाउ, तसवीसा गोअदुगवन्ना ॥ १४ ॥

[(९-१०)-पुण्य पाप प्रकृतियोंकी संख्या तीन गाथाओंसे ।]

सुरनरतिगुच्च सायं, तसदस तणुवंग वइर चउरंसं । परघासग तिरिआउ, वन्नचउ पणिंदि सुभखगई१५

बायाल पुन्नपगई, अपढमसंठाणखगइसंघयणा ।
तिरिदुग असाय नीउव-घायइगविगलनिरयतिगं ॥ १६ ॥

थावरदस वन्नचउ-क्क घाइपणयालसहिअ बासीई। पावपयडि त्ति दोसु वि, वन्नाइगहा सुहा असुहा॥१७

[(११-१२-१३)-अपरावर्त्तमान-परावर्तमान-प्रकृतियोंकी संख्या तथा क्षेत्रविपाकीप्रकृतियोंकी संख्या दो गाथाओंसे]

नामधुवबंधिनवगं, दंसण पणनाण विग्घ परघायं। भय कुच्छ मिच्छ सासं, जिण गुणतीसा अपरियत्ता॥१८
तणुअट्ठ वेअ दुजुअल, कसाय उज्जोअगोयदुग निद्दा। तसवीसाऽऽउ परित्ता, खित्तविवागाणुपुव्वीओ॥१९

[(१४-१५)-जीवविपाकी-भवविपाकीप्रकृतियां]

घणघाइदुगोअजिणा, तसिअरतिगसुभगदुभगचउसासं ।
जाइतिग जिअविवागा, आऊ चउरो भवविवागा ॥ २० ॥

[(१६-१७-१८-१९-२०) पुद्गल-विपाकीप्रकृतियां तथा चारप्रकारसे बंध,]

नामधुवोदय चउतणु-वघाय साहारणियरजोअतिगं। पुग्गलविवागि बंधो, पयइठिइरसपएस त्ति ॥२१॥

[(२१-२२-२३-२४) मूलप्रकृतियोंके बंधस्थानोंमें भूयस्कार अल्पतर-अवस्थित-अवक्तव्य रूप बंध-भेदविशेष,]

मूलपयडीण अडसत्तछेगबंधेसु तिन्नि भूगारा। अप्पतरा तिअ चउरो, अवट्ठिआ न हु अवत्तव्वो ॥२२॥

[भूयस्कारादिका स्वरूप]

एगादहिगे भूओ, एगाईऊणगम्मि अप्पतरो । तम्मत्तोऽवट्ठियओ, पढमे समए अवत्तव्वो ॥ २३ ॥

[उत्तरप्रकृतियोंके आश्रय भूयस्कारादि बंध,]

नवछच्चउदंसे दुदु, तिदु मोहे दुइगवीस सत्तरस। तेरस नव पण चउ ति दु, इक्को नव अट्ठ दस दुन्नि२४

[नामकर्मप्रकृतियोंमें भूयस्कारादि बंध]

तिपणछअट्ठनवहिया, वीसा तीसेगतीस इग नामे । छस्सगअट्ठतिबंधा, सेसेसु य ठाणमिक्किक्कं ॥२५॥

[मूलप्रकृयोंका उत्कृष्ट—जघन्यस्थितिबंध दो गाथाओंसे]

वीसयरकोडिकोडी, नामे गोए य सत्तरी मोहे । तीसियरचउसु उदही, निरयसुराउंमि तित्तीसा॥२६॥

मुत्तु अकसाय ठिइं, बार मुहुत्ता जहन्न वेयणिए । अट्ठ नामगोएसु सेसएसुं मुहुत्तंतो ॥ २७ ॥

[उत्तरप्रकृतियोंका उत्कृष्टस्थितिबंध सात गाथाओंसे]

विग्घावरण असाए, तीसं अट्ठार सुहुमविगलतिगे। पढमाऽऽगिइसंघयणे, दस दुसुवरिमेसु दुगवुड्ढी२८

चालीस कसाएसुं, मिउलहुनिद्धुण्हसुरहिसियमहुरे। दस दोसड्ढसमहिया, ते हालिद्दंबिलाईणं ॥२९॥
दस सुहविहगइउच्चे, सुरदुग थिरछक्क पुरिसरइहासे। मिच्छे सत्तरि मणुदुग-इत्थीसाएसु पन्नरस ॥३०॥
भयकुच्छअरइसोए, विउव्वितिरिउरलनिरयदुगनीए। तेअपण अथिरछक्के, तसचउ थावरइग पणिंदी॥३१
नपुकुखगइसासचउ-गुरुकक्खडरुक्खसीयदुग्गंधे। वीसं कोडाकोडी, एवइआबाह वाससया ॥ ३२ ॥
गुरु कोडिकोडि अंतो, तित्थाहाराण भिन्नमुहु बाहा। लहुठिइ संखगुणूणा, नरतिरियाणाउ पल्लतिगं३३
इगविगलपुव्वकोडिं, पलियासंखंस आउचउ अमणा। निरुवकमाण छमासा, अबाह सेसाण भवतंसो३४

[उत्तरप्रकृतियोंका जघन्यस्थितिबंध दो गाथाओंसे]

लहुठिइबंधो संजल-णलोहपणविग्घनाणदंसेसु । भिन्नमुहुत्तं ते अ-ट्ठ जसुच्चे बारस य साए ॥ ३५ ॥
दोइगमासो पक्खो, संजलणतिगे पुमट्ठवरिसाणि । सेसाणुक्कोसाउ, मिच्छत्तठिईइ जं लद्धं ॥ ३६ ॥

[एकेंद्रिय-विकलेंद्रिय-असन्नि-सन्निपंचेंद्रियका उत्कृष्ट–जघन्यस्थितिबंध दो गाथाओंसे]

अयमुक्कोसो गिंदिसु, पलियाऽसंखंसहीणलहुबंधो। कमसो पणवीसाए, पन्ना सय सहस संगुणिउ ॥३७
विगलि असन्निसु जिट्ठो, कणिट्ठउ पल्लसंखभागूणो। सुर नरयाउ समा दस-सहस्स सेसाउ खुड्डभवं ३८

[सर्वउत्तरप्रकृतियोंके आश्रय जघन्य अबाधा-काल]

सव्वाण वि लहुबंधे, भिन्नमुहू अबाह आउजिट्ठे वि। केइ सुराउसमं जिण-मंतमुहू बिंति आहारं ॥३९॥

[क्षुल्लक भवस्वरूप दो गाथाओंसे। तथा उत्तरप्रकृति आश्रय उत्कृष्ट स्थितिबंधके स्वामी एक गाथासे]

सत्तरस समहिआ किर, इगाणुपाणुंमि हुंति खुड्डभवा। सगतीससय तिहुत्तर, पाणू पुण इगमुहुत्तंमि॥४०

पणसट्ठि सहस पणसय, छत्तीसा इगमुहुत्त खुड्डभवा। आवलियाणं दोसय, छप्पन्ना एगखुड्डभवे ॥४१॥

अविरयसम्मो तित्थं, आहारदुगाऽमराउ अ पमत्तो। मिच्छद्दिट्ठी बंधइ, जिट्ठठिइं सेसपयडीणं ॥४२॥

[गतिके विषे उत्कृष्ट स्थितिबंध तीन गाथाओंसे]

विगलसुहुमाउगतिगं, तिरिमणुया सुरविउव्विनिरयदुगं। एगिंदिथावरायव, आईसाणा सुरुक्कोसं ॥४३॥

तिरिउरलदुगुज्जोअं, छिवट्ठ सुरनिरय सेस चउगइआ। आहारजिणमपुव्वोऽनियट्टि संजलणपुरिसलहुं

सायजसुच्चावरणा-विग्घं सुहुमो विउव्विछ असन्नी। सन्नी वि आउ बायर-पज्जेगिंदी उ सेसाणं ॥ ४५ ॥

[स्थितिबंधमें उत्कृष्टजघन्यादि भंग विचार दो गाथाओंसे]

उक्कोस जहन्नेयर, भंगा साईअणाइ धुव अधुवा। चउहा सग अजहन्नो, सेसतिगे आउचउसु दुहा ॥

चउत्तेउ अजहन्नो, संजलणावरणनवगविग्घाणं। सेसतिगि साइअधुवो, तह चउहा सेसपयडीणं॥४७॥

[सामान्यसे गुणस्थानोंमें स्थितिबंध]

साणाइअपुव्वंते, अयरंतो कोडिकोडिउ न हिगो। बंधो न हु हीणो न य, मिच्छे भवियरसन्निम्मि ॥४८॥

[एकेन्द्रियोंके आश्रय स्थितिबंधका अल्पबहुत्व तीन गाथाओंसे]

जइलहुबंधो बायर, पज्ज असंखगुण सुहुमपज्जहिगो। एसि अपज्जाण लहू, सुहुमेअर अपज्जपज्जगुरु॥४९

लहु बिअ पज्जअपज्जे, अपजेअर बिअगुरू हिगो एवं।
ति चउ असन्निसु नवरं, संखगुणो बिअअमणपज्जत्ते ॥ ५० ॥
तो जइ जिट्ठो बंधो, संखगुणो देसविरयहस्सिअरो।
सम्मचउ सन्निचउरो, ठिइबंधाणुकमसंखगुणा ॥ ५१ ॥

[कर्मस्थितिकी शुभाशुभ प्ररूपणा]

सव्वाण वि जिट्ठठिई, असुहा जं साऽइसंकिलेसेणं। इअरा विसोहिउ पुण, मुत्तुं नरअमरतिरिआउं॥५२

सुहुमनिगोआइखण-प्पजोगबायरयविगलअमणमणा ।
अपज्ज लहुपढमदुगुरु, पजहस्सियरो असंखगुणो ॥ ५३ ॥ [योगका अल्प बहुत्व]

[योग तथा स्थितिस्थान]

अपजत्ततसुक्कोसो, पज्जजहन्नियरु एव ठिइठाणा । अपजेयरसंखगुणा, परमपजबिए असंखगुणा

[प्रतिसमय जितनी योगवृद्धिसे बढते हैं उसका स्वरूप]

पइखणमसंखगुणविरिय अपज पइठिइमसंखलोगसमा ।
अज्झवसाया अहिया, सत्तसु आउसु असंखगुणा ॥ ५५ ॥

[अबन्धस्थिति दो गाथाओंसे]

तिरिनिरयतिजोयाणं, नरभवजुअ सचउपल्ल तेसट्ठं । थावरचउइगविगला-यवेसु पणसीइसयमयरा ॥५६
अपढमसंघयणाऽऽगिइ-खगईअणमिच्छदुहगथीणतिगं ।
निअनपुइत्थि दुतीसं, पणिंदिसु अबंधठिइ परमा ॥ ५७ ॥

[अबन्धकालकी सख्याका उपाय एक गाथासे तथा । नरंतर बन्ध चार गाथाओंसे]

विजयाइसु गेविज्जे, तमाइ दहिसय दुतीस तेसट्ठं । पणसीइ सययबंधो, पल्लतिगं सुरविउविदुगे ॥५८॥

समयादसंखकालं, तिरिदुगनीएसु आउ अंतमुहू । उरलि असंखपरट्टा, सायठिई पुव्वकोडूणा ॥ ५९ ॥
जलहिसयं पणसीयं, परघुस्सासे पणिंदितसचउगे । बत्तीसं सुहविहगइ-पुमसुभगतिगुच्चचउरंसे ॥६०॥
असुखगइजाइआगिइ-संघयणाऽऽहारनरयजोयदुगं । थिरसुभजसथावरदस-नपुइत्थीदुजुअलमसायं
समयादंतमुहुत्तं, मणुदुगजिणवइरउरलुवंगेसु । तित्तीसयरा परमो, अंतमुहू लहु वि आउजिणे ॥ ६२ ॥

[अनुभागबंध चतुर्धा दो गाथाओंसे]

तिव्वो असुहसुहाणं, संकेसविसोहिउ विवज्जयउ । मंदरसो गिरिमहियरय-जलरेहासरिसकसाएहिं ॥६३
चउठाणाई असुहा, सुहन्नहा विग्घदेसआवरणा । पुमसंजलणिगदुतिचउ-ठाणरसा सेस दुगमाई ६४

[शुभाशुभ रसका विशेषसे कुछ स्वरूप]

निंबुच्छुरसो सहजो, दुतिचउभागकड्ढिइक्कभागंतो । इगठाणाई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ६५

[उत्कृष्ट रसबंधके स्वामिका निरूपण तीन गाथाओंसे]

तिव्वमिगथावरायव, सुरमिच्छा विगलसुहुमनिरयतिगं ।
तिरिमणुआउ तिरिनरा, तिरिदुगछेवट्ठ सुरनिरया ॥ ६६ ॥

विउविसुराहारदुगं, सुखगइवन्नचउतेयजिणसायं। समचउपरघातसदस-पणिंदिसासुच्च खवगाउ॥६७

तमतमगा उज्जोयं, सम्मसुरा मणुयउरलदुगवइरं। अपमत्तो अमराउं, चउगइमिच्छा उ सेसाणं॥६८॥

[सर्वप्रकृतिआश्रय मंदरसबंधस्वामी पांच गाथाओंसे]

थीणतिग अणमिच्छं, मंदरसं संजमुम्मुहो मिच्छो। बियतियकसाय अविरय-देस पमत्तो अरइसोए ॥६९॥

अपमाइ हारगदुग, दुनिद्दअसुवन्नहासरइकुच्छा। भयमुवघायमपुव्वो, अनियट्टी पुरिससंजलणे॥७० ॥

विग्घावरणे सुहुमो, मणुतिरिआ सुहुमविगलतिगआऊ। वेउव्विछक्कममरा, निरया उज्जोयउरलदुगं७१

तिरिदुगनियं तमतमा, जिणमविरय निरयविणिगथावरयं।
आसुहुमायवसम्मो, व सायथिरसुहजसासियरा ॥ ७२॥
तसवन्नतेअचउमणु-खगइदुगपणिंदिसासपरघुच्चं।
सघयणाऽऽगिइ नपुत्थी-सुभगिअरति मिच्छ चउगइआ ॥ ७३ ॥

[मूलोत्तर-प्रकृतियोंको लेकर भंगद्वारा रसबंधका विचार]

चउतेअवन्न वेअणि-नामणुक्कोस सेसधुवबंधी। घाईण अजहन्नो, गोए दुविहो इमो चउहा ॥ ७४॥

[प्रदेशबंधमें औदारिकआदिवर्गणाओंका स्वरूप, तथा अवगाहक्षेत्रमान, दो गाथाओंसे]

सेसंमि दुहा इगदुग-णुगाइ जा अन्नवणंतगुणिआणू । खंधा उरलोचिअव-ग्गणा उ तह अगहणंतरिया
एमेव विउव्वाहा-रतेअभासाणुपाणमणकम्मे । सुहुमा कमावगाहो, ऊणूणंगुलअसंखंसो ॥ ७६ ॥

[एकादिवृद्धिसे वर्धमान अग्रहणवर्गणाओंका प्रमाण निरूपण]

इक्किक्कहिया सिद्धा-णंतंसा अंतरेसु अग्गहणा । सव्वत्थ जहन्नुचिया, नियणंतंसाहिआ जिट्ठा ॥ ७७ ॥

[जिस प्रकारका कर्मस्कंधदलिक जीव ग्रहण करता है उसको कहते हैं, तीन गाथाओंसे]

अंतिमचउफासदुगं-धपंचवन्नरसकम्मखंधदलं । सव्वजियणंतगुणरस-मणुजुत्तमणंतयपएसं ॥ ७८ ॥
एगपएसोगाढं, निअसव्वपएसउ गहेइ जिउ । थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिउ ॥ ७९ ॥
विग्घावरणे मोहे, सव्वोवरि वेअणीय जेणप्पे । तस्स फुडत्तं न हवइ, ठिईविसेसेण सेसाणं ॥ ८० ॥

[उत्तर प्रकृतियोंका कर्मदलिक भाग]

निअजाइलद्धदलिआ-णंतंसो होइ सव्वघाईणं । बज्झंतीण विभज्जइ, सेसं सेसाण पइसमयं ॥ ८१ ॥

[एकादश गुणश्रेणि नाम]

सम्मदरसव्वविरई, उ अणविसंजोअदंसखवगे अ। मोहसमसंतखवगे, खीणसजोगीअर गुणसेढी॥७२॥

[पूर्वोक्त गुणश्रेणि स्वरूप,]

गुणसेढी दलरयणा-णुसमयमुदयादसंखगुणणाए। एअगुणा पुण कमसो,असंखगुणनिज्जरा जीवा॥७३॥

[गुणस्थानप्राप्तिका जघन्य उत्कृष्ट अंतर]

पलिआऽसंखंसमुहू, सासणइअरगुण अंतरं हस्सं। गुरु मिच्छि वे छसठी, इयरगुणे पुग्गलद्धंतो ॥ ७४ ॥

[सविस्तार पल्योपम स्वरूप]

उद्धारअद्धखित्तं, पलिय तिहा समयवाससयसमए। केसवहारो दीवो-दहिआउतसाइपरिमाणं ॥७५॥

[पुद्गल परावर्त्तका स्वरूप,]

दव्वे खित्ते काले, भावे चउह दुह बायरो सुहुमो। होइ अणंतुस्सप्पिणि-परिमाणो पुग्गलपरट्टो ॥ ७६ ॥

[द्रव्यपुद्गलपरावर्त्तका स्वरूप]

उरलाइसत्तगेणं, एगजिउ मुअइ फुसिअ सव्वअणू। जित्तिअकालि स थूलो, दव्वे सुहुमो सगन्नयरा ॥७७॥

[क्षेत्रादि पुद्गल परावर्त्तका स्वरूप,]

लोगपएसोसप्पिणि-समया अणुभागबंधठाणा य । जह तह कममरणेणं, पुट्ठा खित्ताइ थूलियरा ॥८८॥

[उत्कृष्ट-जघन्य-प्रदेशबंधक]

अप्पयरपयडिबंधी, उक्कडजोगी अ सन्निपज्जत्तो । कुणइ पएसुक्कोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे ॥ ८९ ॥

[प्रदेश बंधके स्वामी चार गाथाओंसे]

मिच्छ अजयचउ आउ, बितिगुणविणु मोहि सत्त मिच्छाई। छण्हं सतरस सुहुमो, अजया देसा बितिकसाए

पणं अनिअट्टी सुखगइ-नराउसुरसुभगतिग विउविडुगं । समचउरंसमसायं, वइरं मिच्छो व सम्मो वा ॥९१

निद्दापयलाडुजुअल-भयकुच्छातित्थ सम्मगो सुजई। आहारडुगं सेसा, उक्कोसपएसगा मिच्छो ॥ ९२ ॥

सुमुणी डुन्नि असन्नी, नरयतिगसुराउ सुरविउविडुगं ।
सम्मो जिणो जहन्नं, सुहुमनिगोआइखणि सेसा ॥ ९३ ॥

[प्रदेशबंधके भंग चार गाथाओंसे]

६ ७ ८ १२ १६ २० २५ ३० ३६
दंसणछगभयकुच्छा, बितितुरिअकसायविग्घनाणाणं । मूलछगे ऽणुक्कोसो, चउह डुहा सेसि सव्वत्थ॥९४

सेढिअसंखिज्जंसे, जोगट्ठाणाणि पयडिठिइभेआ । ठिइबंधज्झवसाया-अणुभागठाणा असंखगुणा ॥९५

तत्तो कम्मपएसा, अणंतगुणिया तउ रसछेया । जोगा पयडिपएसं, ठिइअणुभागं कसायाउ ॥ ९६ ॥
चउदसरज्जू लोगो, बुद्धिकउ होइ सत्तरज्जुघणो । तद्दीहेगपएसा, सेढी पयरो अ तव्वग्गो ॥ ९७ ॥

[(२५)—उपशम श्रेणिका स्वरूप,]

अणदंसनपुंसित्थी-वेअच्छक्कं च पुरिसवेअं च । दो दो एगंतरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ९८ ॥

[(२६)—क्षपक श्रेणिका स्वरूप दो गाथाओंसे]

४ १ १ १ २ १ ४ ७ ८ १० १२ १४ १५ १६ ८ १ १
अणमिच्छमीससम्मं, तिआउ इगविगलथीणतिगुज्जोअं । तिरिनरयथावरदुग, साहारायव अडनपुत्थी ॥
छगपुमसंजलणा दो-निद्दविग्घावरणखए नाणी । देविंदसूरि लिहिअं, सयगमिण आयसरणट्ठा ॥१००॥

[इति शतकनामा पंचम कर्मग्रंथ]

[अथ श्रीचन्द्रमहत्तराचार्यप्रणीतः सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः]

सिद्धपएहिं महत्थं, बंधोदयसंतपयडिठाणाण । वुच्छं सुण संखेवं, नीसंदं दिट्ठिवायस्स ॥ १ ॥
कइ बंधंतो वेअइ, कइ कइ वा पयडिसंतठाणाणि । मूलुत्तरपगईणं, भगविगप्पा मुणेअव्वा ॥ २ ॥

[मूलप्रकृतिका बंधोदयसत्ता संवेध,]

अठविहसत्तछब्बं-धएसु अठेव उदयसंताइं । एगविहे तिविगप्पो, एगविगप्पे अबंधंमि ॥ ३ ॥

[जीवस्थानोंके विषे मूल प्रकृतियोंके भंग]

सत्तठबंधअठुद-यसंततेरससु जीवठाणेसु । एगंमि पंच भंगा, दो भंगा हुंति केवलिणो ॥ ४ ॥

[गुणस्थानोंके विषे भंग]

अट्ठसु एगविगप्पो, छस्सु वि गुणसन्निएसु डुविगप्पो । पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदयसंतकम्माणं ॥ ५ ॥

[कर्मोंकी उत्तर प्रकृतियोंकी संख्या]

पंच नव डुन्नि अठा-वीसा चउरो तहेव बायाला । डुन्नि य पंच य भणिया, पयडीउ आणुपुव्वीए ॥६॥

[उत्तरप्रकृतियोंका बंधोदयसत्ता संवेध]

बंधोदयसंतंसा, नाणावरणंतराइए पंच । बंधोवरमे वि तहा उदय-संता हुंति पंचेव ॥ ७ ॥

[दर्शनावरणीय कर्मके संवेध भंग तीन गाथाओंसे]

बंधस्स य संतस्स य, पगइठाणाइ तिन्नि तुल्लाइं । उदयट्ठाणाइं डुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥ ८ ॥

बीयावरणे नवबं-धगेसु चउपंचउदय नवसंता । छच्चउबंधे चेवं, चउबंधुदये छलंसा य ॥ ९ ॥

उवरयबंधे चउ पण, नवंस चउरुदय छच्च चउसंता। वेयणियाउअगोए, विभज्ज मोहं परं वुच्छं॥१०॥

[गोत्र-वेदनीय-आयु-कर्मके सवेध भंग]

गोअम्मि सत्त भंगा, अट्ठ य भंगा हवंति वेयणिए। पण नव नव पण भंगा, आउचउक्के वि कमसो उ ११

[मोहणीय-कर्मके बंधस्थान,]

बावीस एकवीसा, सत्तरसा तेरसेव नव पंच। चउ तिग दुगं च इक्कं, बंधट्ठाणाणि मोहस्स ॥१२॥

[मोहणीय-कर्मके उदयस्थान]

एगं व दो व चउरो, एत्तो एगाहिआ दसुक्कोसा। ओहेण मोहणिज्जे, उदयट्ठाणाणि नव हुंति ॥१३॥

[मोहणीय-कर्मके सत्तास्थान]

अट्ठग सत्तग छ चउ, तिग दुग एगाहिआ भवे वीसा। तेरस बारिक्कारस, इत्तो पंचाइ एगूणा॥१४॥
संतस्स पयडिठाणा- इं ताणि मोहस्स हुंति पन्नरस। बंधोदयसते पुण, भंगविगप्पा बहू जाण॥१५॥

[मोहणीय कर्मके बंधस्थानोंके विषे भंग]

छब्बावीसे चउ इग-वीसे सत्तरस तेरसे दो दो। नवबंधगे वि दुन्निउ, इक्किक्कमओ परं भंगा ॥ १६ ॥

[बंधस्थानोंमें उदयस्थान]

दस बावीसे नव इग-वीसे सत्ताइ उदयकम्मंसा । छाई नव सत्तरसे, तेरसि पंचाइ अट्ठेव ॥ १७ ॥

चत्तारिआइ नवबंध-एसु उक्कोस सत्तमुदयंसा । पंचविहबंधगे पुण, उदओ दुण्हं मुणेअव्वो ॥ १८ ॥

इत्तो चउबंधाइ, इक्किकुदया हवंति सव्वे वि । बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि वा हुज्जा ॥ १९ ॥

[दशआदि एकपर्यंत उदयस्थानोंमें भंग]

इक्कगछक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क इक्कगं चेव । एए चउवीसगया, बार दुगिक्कम्मि इक्कारा ॥ २० ॥

[उदयभंग तथा पदवृन्दकी संख्या]

नवतेसीइसएहिं, उदयविगप्पेहि मोहिआ जीवा । अउणुत्तरिसीआला, पयविंदसएहि विन्नेआ ॥ २१ ॥

[अन्यमतानुसार उदयभंग और पदवृंदकी संख्या]

नव पंचाणउअसए, उदयविगप्पेहि मोहिआ जीवा । अउणत्तरि एगुत्तरि, पयविंदसएहि विन्नेआ ॥ २२ ॥

[बंधस्थानोंमें सत्तास्थान तीन गाथाओंसे]

तिन्नेव य बावीसे, इगवीसे अट्ठवीस सत्तरसे । छच्चेव तेर नव बं-धएसु पंचेव ठाणाणि ॥ २३ ॥

पचविहचउविहेसु, छछक सेसेसु जाण पचेव । पत्तेअ पत्तेअं, चत्तारि उ बंधुवुच्छेए ॥ २४ ॥
दसनवपन्नरसाइ, बधोदयसंतपयडिठाणाणि, नणिआणि मोहणिज्जे, इत्तो नामं परं वुच्छ ॥ २५ ॥

[नामकर्मके वधस्थान]

तेवीस पणवीसा, छवीसा अट्ठवीस गुणतीसा । तीसेगतीसमेगं, वधट्ठाणाणि नामस्स ॥ २६ ॥

[वधस्थानोमें नग]

चउ पणवीसा सोलस, नव वाणउईसया य अडयाला । एयालुत्तर छाया-लसया इक्कि वंधविही ॥ २७ ॥

[नाम कर्मके उदयस्थानक]

वीसिगवीसा चउवी-सगा उ, एगाहिया य इगतीसा । उदयट्ठाणाणि नवे, नव अट्ठ य हुंति नामस्स ॥ २८ ॥

[उदयस्थानोमें नग]

इक्क विआलिक्कारस, तित्तीसा छस्सयाणि तित्तीसा । वारसत्तरससया-णहिगाणि विपचसीईहि ॥ २९ ॥
अउणत्तीसिक्कारस-सयाहिगा सतरपचसट्ठीहि । इक्किक्कगं च वीसा-दट्ठुदयतेसु उदयविही ॥ ३० ॥

[नामकर्मके सत्तास्थान.]

तिदुनउई गुणनउई, अडसी छलसी असीइ गुणसीई। अट्ठय छप्पन्नत्तरि, नव अट्ठय नाम संताणि ॥३१॥
अट्ठ य बारस बारस, बंधोदयसंतपयडिठाणाणि । ओहेणाएसेण य, जत्थ जहा संभवं विभजे ॥ ३२ ॥

[समान्यसे बंध-उदय-और सत्ताका-संवेध.]

नवपणगोदयसंता, तेवीसे पन्नवीस छवीसे । अट्ठ चउरट्ठवीसे, नव सगिगुणतीसतीसंमि ॥ ३३ ॥
एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय अट्ठ संतंमि । उवरयबंधे दस दस, वेअगसंतंमि ठाणाणि ॥ ३४ ॥
तिविगप्पपगइठाणेहिं, जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु । भंगा पउँजियव्वा, जत्थ जहा संभवो भवइ ॥३५॥

[जीवस्थानोंके विषे ज्ञानावरणीय तथा अंतराय कर्मके भंग]

तेरससु जीवसंखे-वएसु नाणंतरायतिविगप्पो । इक्कंमि तिदुविगप्पो, करणं पइ इत्थ अविगप्पो॥३६॥

[जीवस्थानोंमें दर्शनावरणीयके भंग]

तेरे नव चउ पणगं, नव संतेगंमि भंगमिक्कारा । वेअणिआउअगोए, विभज्ज मोहं परं वुच्छं ॥ ३७ ॥

[वेदनीय तथा गोत्रकर्मके भंग]

पज्जत्तगसन्निअरे, अट्ठ चउक्कं च वेअणिअभंगा । सत्तग तिगं च गोए, पत्तेअं जीवठाणेसुं ॥ ३८ ॥

[जीवस्थानोंमें आयुकर्मके भग]

पज्जत्ताऽपज्जत्तग-समणे पज्जत्तअमण सेसेसुं । अट्ठावीसं दसगं, नवगं पणगं च आउस्स ॥ ३९ ॥

[जीवस्थानोंमें मोहनीयकर्मके भग]

अट्ठसु पचसु एगे, एग दुगं दस य मोहबंधगए । तिग चउ नव उदयगए, तिग तिग पन्नरस संतंमि॥४०॥
पण दुग पणग पण चउ, पणग पणगा हवंति तिन्नेव । पण छप्पणगं छच्छ-प्पणगं अट्ठट्ठ दसगं ति॥४१॥
सत्तेव अपज्जत्ता,सामी सुहुमा य बायरा चेव।विगलिंदिआ उ तिन्नि उ, तह य असन्नी अ सन्नी अ ॥४२॥

[गुणस्थानोंमें ज्ञानावरणीय अतराय-और दर्शनावरणीयकर्मके भग]

नाणतराय तिविहमवि दससु दो हुंति दोसु ठाणेसु । मिच्छासाणे बीए, नव चउ पण नव य संतंसा४३
मिस्साई नियट्टी उ, छ च्चउपण नव य सतकम्मसा । चउबंध तिगे चउ पण, नवंस दुसु जुअल छस्संता४४
उवसते चउ पण नव, खीणे चउरुदय छच्च चउ सत्ता । वेअणिआउअगोए, विभज्ज मोहं परं वुच्छ ॥ ४५ ॥

[गुणस्थानोंमें वदेनीय तथा गोत्रकर्मके भग]

चउ छस्सु दुन्नि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेअणिअभगा। गोए पण चउ दो तिसु, एगट्ठसु दुन्नि इक्कमि४६

[गुणस्थानोंमें आयुकर्मके भंग]

अठ्ठच्छाहिगवीसा, सोलस वीसं च बारस छ दोसु । दो चउसु तिसु इक्कं, मिच्छाइसु आउए भंगा ॥ ४७ ॥

[गुणस्थानोंमें मोहणीयकर्मके बंधस्थान]

गुणठाणएसु अठसु, इक्किक्कं मोहबंधठाणं तु । पंच अनिअट्टिठाणे, बंधोवरमो परं तत्तो ॥ ४८ ॥

[गुणस्थानोंमें मोहणीयकर्मके उदयस्थान]

सत्ताइ दस उ मिच्छे, सासायणमीसए नवुक्कोसा । छाई नव उ अविरए, देसे पंचाई अठेव ॥ ४९ ॥

विरए खओवसमिए, चउराई सत्त छच्च पुव्वंमि । अनियट्टिबायरे पुण, इक्को व दुवे व उदयंसा ॥ ५० ॥

एगं सुहुमसरागो, वेएइ अवेअगा भवे सेसा । भंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिठेण नायव्वं ॥ ५१ ॥

[गुणस्थानोंमें मोहणीयकर्मके उदयस्थानोंकी भंगसंख्या]

एक्कें छक्केक्कारे, सेवं इक्कारसेवं नवं तिन्निं । एए चउवीसगया, बार दुगे पंच इक्कंमि ॥ ५२ ॥

बारसपणसठिसया, उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा । चुलसीई सत्तुत्तरि, पयविंदसएहि विन्नेआ ॥ ५३ ॥

[गुणस्थानोंमें मोहणीयकर्मके उदय भंग]

अट्ठंग चउ चउ चउर-ट्ठगा य चउरो अ हुंति चउवीसा। मिच्छाइअपुव्वंता, बारस पणगं च अनिअट्टी॥५४॥

[गुणस्थानोंमें उदयपद]

अट्ठ[1]ट्ठी बत्तीसं[2], बत्तीसं[3] सट्ठिमेव बावन्ना। चोआल[4] दोसु वीसा, विय मिच्छमाईसु सामन्नं॥ ५५ ॥

[गुणस्थानोंमें योगादिके भंग]

जोगोवओगलेसा-इएहि गुणिआ हवंति कायव्वा। जे जत्थ गुणठाणेसु, हवंति ते तत्थ गुणकारा॥५६॥

[गुणस्थानोंमें मोहनीयकर्मके सत्तास्थान]

तिन्नेगे[1] एगेगं, तिग मीसे[3] पंच चउसु तिग पुव्वे। इक्कार बायरंमि[10] उ, सुहुमे[11] चउ तिन्नि उवसंते॥ ५७ ॥

[गुणस्थानोंमें नामकर्मके बंध–उदय–सत्तास्थान]

छन्नवछक्कं तिग सत्त, दुगं[2] दुगतिगदुगं[3] तिअट्ठ चऊ।

दुगछचउ[5] दुगपणचउ[6], चउदुगचऊ पणगएगचउ॥ ५८ ॥

एगेगमट्ठ[9] एगे-गमट्ठ[10] छउमत्थकेवलिजिणाण। एगचऊ[11] एगचऊ[12], अट्ठचउ[13] दु छक्कमुदयंसा[14]॥ ५९ ॥

[मिथ्यात्वगुणस्थानमें बंध भंग]

चउ[२३] पणवीस[२५] सोलस[२६], नव[२८] चत्ताला सया य बाणउया[२९]। बत्तीसुत्तरछाया-लसया[३०] मिच्छस्स बंधविहा[१३९२६] ॥६०॥

[सास्वादनगुणस्थानमें बंध भंग]

अट्ठसया[२८] चउसट्ठी[२९], बत्तीससयाँ[३०] य सासणे भेआ। अट्ठावीसाईसुं[३], सव्वाणऽट्ठहिगछन्नउई[९६०८] ॥ ६१ ॥

[मिथ्यात्वगुणस्थानमें उदय भंग]

इगचे[२१]त्तिगार[२४] बत्ती[२५]-स छसय[२६] इगती[२७]सिगारनवनउई[२८]। सतरिगसि[२९] गुतीसचउद[३०], इगारचउसट्ठि[३१] मिच्छुदया[७७७३]

[सास्वादनगुणस्थानमें उदय भंग]

बत्तीस[२१] दुन्नि[२४] अट्ठ[२५] य, बासीइसया[२६] य पंच नव[२९] उदया। बारऽहिआ तेवीसा[३०], बावन्निक्कारस[३१] सया[४०९७] य ॥६३॥

[गतिमार्गणासे नामकर्मके बंधोदयसत्तास्थान]

दो[१] छक्कऽट्ठ[२,३] चउक्कं[४], पण[१] नव[२] इक्कार[३] छक्कगं[४] उदया। नेरइआइसु सत्ता, ति[१] पंच[२] इक्कारस[३] चउक्कं[४] ॥ ६४ ॥

[जातिमार्गणासे बंधोदयसत्तास्थान]

इगे विगलिंदिअ सगले, पण[१] पंच[२] य अट्ठ[३] बंधठाणाणि। पण[१] छक्किक्कारुदया[२,३], पण[१] पण[२] बारस[३] य संताणि ६५

इय कम्मपगइठाणा-णि सुट्ठु बंधुदयसंतकम्माणं। गइआइएहिं[१४] अट्ठसु, चउप्पगारेण नेआणि ॥ ६६ ॥

उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताउ न विज्जइ विसेसो । मुत्तूण य इगयाल, सेसाणं सवपयडीणं ॥ ६७ ॥
नाणतरायदसग, दंसणनव वेयणिज्जे मिच्छत्त । सम्मत्तलोभवेआऽऽउआणि नवनाम उच्चं च ॥ ६८ ॥
मणुयगइ जाइ तस बायरं च पज्जत्त सुभगआइज्जं । जसकित्ती तित्थयरं नामस्स हवंति नव एया ॥६९॥

[गुणस्थानोमें बंधप्रकृति]

तित्थयराऽऽहारगविर-हिआउ अज्जेइ सवपयडीओ । मिच्छत्तवेअगो सा-सणो वि गुणवीससेसाउ ॥७०॥
छायालसेस मीसो, अविरयसम्मो तियालपरिसेसा । तेवन्नदेसविरउ, विरउ सगवन्नसेसाउ ॥ ७१ ॥
इगुणट्ठिमप्पमत्तो, बधइ देवाउअस्स इअरो वि । अट्ठावन्नमपुवो, छप्पन्न वा वि छवीसं ॥ ७२ ॥
बावीसा एगूण, बधइ अट्ठारसंतमनिअट्टी । सत्तरस सुहुमसरागो, सायममोहो सजोगुत्ति ॥ ७३ ॥
एसो उ बंधसामि-त्त ओहो गइआइएसु वि तहेव । ओहाउ साहिज्जइ, जत्थ जहा पयडिसब्भावो ॥ ७४ ॥
तित्थयरदेवनिरिआ-उअ च तिसु तिसु गईसु बोद्धवं । अवसेसा पयडीउ, हवंति सवासु वि गईसु ॥७५॥

[उपशमश्रेणिका स्वरूप]

पढमकसायचउक्कं, दंसणतिग सत्तगा वि उवसंता । अविरयसम्मत्ताउ, जाव नियट्टित्ति नायवा ॥ ७६ ॥

सत्तट्ठ नव य पनरस, सोलस अट्ठारसेव गुणवीसा। एगाहि दु चउवीसा, पणवीसा बायरे जाण॥ ७७॥
सत्तावीसं सुहुमे, अट्ठावीसं च मोहपयडीओ। उवसंतवीअरागे, उवसंता हुंति नायव्वा॥ ७८॥

[क्षपकश्रेणिस्वरूप]

पढमकसायचउक्कं, इत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्तं। अविरयसम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीयंति॥ ७९॥
अनिअट्टिबायरे थी-णगिद्धितिग[3] निरयतिरिअनामाओ[13]। संखिज्जइमे सेसे, तप्पाउग्गाओ खीयंति॥ ८०॥
इत्तो हणइ कसाय-ट्ठगं पि पच्छा नपुंसगं इत्थीं। तो नोकसायछक्कं, छुहइ संजलणकोहम्मि॥ ८१॥
पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए। मायं च छुहइ लोहे, लोहं सुहुमं पि तो हणइ॥ ८२॥
खीणकसायदुचरिमे, निद्दं पयलं च हणइ छउमत्थो। आवरण[9]मंतराए[5], छउमत्थो चरमसमयंमि॥ ८३॥
देवगइसहगयाओ, दुचरमसमयभवियंमि खीअंति। सविवागेअरनामा, नीआगोअं पि तत्थेव॥ ८४॥
अन्नयरवेअणिज्जं, मणुआउ[2]अमुच्चगोअ[3]नव[12]नामा। वेएइ अजोगिजिणो, उक्कोस[12] जहन्नमिक्कारा[11]॥ ८५॥
मणुअगइ[1]जाइ[2]तस[3]बा-यरं[4] च पज्जत्त[5]सुभग[6]माइज्जं[7]। जसकित्ती[8] तित्थयरं[9], नामस्स हवंति नव एआ॥ ८६॥

[मतान्तरगाथा]

तच्चाणुपुव्विसहिया, तेरस जवसिद्धिअस्स चरिमंमि। संतंसगमुक्कोसं, जहन्नयं वारस हवंति ॥ ७७ ॥
मणुअगइसहगयाउ, जवखित्तविवागजिअविवागाउ। वेअणिअन्नयरुच्च, व चरमसमयमि खीयंति ७८

अह सुइअसयलजगसिह-रमरुअनिरुवमसहावसिद्धिसुहं ।
अनिहणमव्वावाहं, तिरयणसारं अणुहवंति ॥ ७९ ॥

[उपसंहार]

डुरहिगमनिउणपरम-त्थरुइरवहुजंगदिट्ठिवायाउ। अत्था अणुसरिअव्वा, वधोदयसंतकम्माणं ॥ ८० ॥
जो जत्थ अपडिपुन्नो, अत्थो अप्पागमेण वद्धोवि। तं खमिऊण वहुसुआ, पूरेऊण परिकहंतु ॥ ८१ ॥
गाहग्ग सयरीए, चंदमहत्तरमयाणुसारीए। टीगाइ नियमिआण, एगूणा होइ नउईउ ॥ ८२ ॥

[इति श्रीसप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः]

॥ श्रीरत्नाकरसूरिकृता रत्नाकरपंचविंशिका ॥

श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म ! नरेन्द्रदेवेन्द्रनताङ्घ्रिपद्म ! । सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान ! चिरं जय ज्ञानकलानिधान ! ॥ १ ॥ जगत्त्रयाधार ! कृपावतार ! दुर्वारसंसारविकारवैद्य ! । श्रीवीतराग ! त्वयि मुग्धभावा-द्विज्ञ ! प्रभो ! विज्ञपयामि किंचित् ॥ २ ॥ किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः । तथा यथार्थं कथयामि नाथ ! निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥ दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तं । शुभो न भावोप्यभवद्भवेऽस्मिन्, विभो ! मया भ्रांतमहो मुधैव ॥ ४ ॥ दग्धोग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण। ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण मयाजालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम् ॥ ५ ॥ कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश ! सुखं न मेऽभूत्। अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ॥ ६ ॥ मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्तं, त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात्। द्रुतं महानंदरसं कठोरमस्मादृशां देव तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥ त्वत्तः सुदुः प्राप्यमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण । प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याग्रतो नायक ! पूत्करोमि ? ॥ ८ ॥ वैराग्यरंगोऽपरवंचनाय, धर्मोपदेशो जनरंजनाय । वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत्, कियद् ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश ! ॥ ९ ॥ परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन । चेतः पराऽपायविचिंतनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहम् ॥ १० ॥ विडंबितं यत्स्मरघस्मरार्तिदशावशात्स्वं विषयांधलेन । प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥ ११ ॥ ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठिमंत्रः, कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागमोक्तिः । कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसंगादवांछि ही नाथ ! मतिभ्रमो मे ॥ १२ ॥ विमुच्य दृग्-

लक्ष्यगत भवत, ध्याता मया मूढधिया हृदत । कटाक्षवक्षोजगभीरनाभिकटीतटीया सुदृशा विलासा ॥ १३ ॥ लोले-क्षणावक्रनिरीक्षणेन, यो मानसे रागलवो विलग्न । न शुद्धसिद्धातपयोधिमध्ये, धौतोप्यगात्तारक ! कारण किम्? ॥१४॥ अग न चग न गणो गुणाना, न निर्मल कोपि कलाविलास । स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च कापि, तथाप्यहकारकदर्थि-तोऽहम् ॥ १५ ॥ आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धिर्गत वयो नो विषयाभिलाष । यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महा-मोहविडम्बना मे ॥ १६ ॥ नात्मा न पुण्य न भवो न पाप, मया विटाना कटुगीरपीयम् । अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के' पुर स्फुटे सत्यपि देव ! धिङ् माम् ॥ १७ ॥ न देवपूजा, न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्म । लब्ध्वापि मानुष्यमिदं समस्त, कृत मयाऽरण्यविलापतुल्यम् ॥ १८ ॥ चक्रे मयाऽसत्स्वपि कामधेनुकल्पद्रुचिंतामणिषु स्पृहार्त्ति । न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश ! मे पश्य विमूढभावम् ॥ १९ ॥ सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निध नागमश्च । दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिंति नित्य मयकाऽधमेन ॥ २० ॥ स्थित न साधोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोर्जित च । कृत न तीर्थोद्धरणादि कृत्यं, मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥ वैराग्यरगो न गुरू दितेषु, न दुर्जनाना वचनेषु, शातिः । नाऽध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव ! कार्य॰ कथकारमय भवाब्धि ॥ २२ ॥ पूर्वे-भवेऽकारि मया न पुण्यमागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये । यदीदृशोऽह मम तेन नष्टा, भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ! ॥२३॥ कि वा मुधाऽह बहुधा सुधाभुक् पूज्य ! त्वदग्रे चरितं स्वकीयम् । जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूपनिरूपकस्त्व कियदेतदत्र ॥ २४ ॥ दीनोद्धारधुरधरस्त्वदपरो नास्ते मदन्य कृपा–पात्रं नात्र जने जिनेश्वर ! तथाप्येता न याचे श्रियम् । किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्न शिव, श्रीरत्नाकर ! मंगलैकनिलय ! श्रेयस्कर प्रार्थये ॥ २५ ॥

॥ इति श्रीलघुप्रकरणसंग्रहः ॥